वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः

संकलनकर्ता

श्रीस्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

Aditi
Peacock
Jayanta
Brahman
Mitra
Arya man
Satya
Appa
Aakasha
Bhringa
Pushan

वास्तु पुरूषा

।।ॐ श्री ॐ।।

वास्तु पूजापद्धतिप्रकाशः

(गृह प्रवेश कर्म विधि)

संकलनकर्ता

श्रीस्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

सत्यं साधना कुटीर

181, ग्रामः गौहरी माफी,

पोः रायवाला, ऋषिकेश.

ईपत्र-swsdsr@gmail.com

web: www.satyamsadhana.org

ग्रन्थनामः-**वास्तुपूजापद्धतिप्रकाशः**

प्रकाशक :- **श्री सत्यं साधना कुटीर समिति**, ऋषीकेश.

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : शनिवार, 7 मार्च 2016,
फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी संवत् 2072.
प्रतियां : 500 (पांचसौ)
प्रधान सम्पादक : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती
सम्पादक मण्डल: स्वामी सर्वेशानन्द सरस्वती,
पं. ज्योतिप्रसाद उनियाल, और
चौ. विजयपाल सिंहजी.
अक्षर संयोजन : स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती.

पुस्तक प्राप्ति स्थान-
श्री सत्यं साधना कुटीर समिति,
ग्राम-गौहरी माफी, पो. रायवाला, ऋषीकेश
जिला- देहरादून 249205 (उत्तराखण्ड)
दूरभाष संख्या:- 91-9557130251,
ईपत्र-swsdsr@gmail.com
web: www.satyamsadhana.org

सहयोग राशि : 120/=

मुद्रक : सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश.

1. प्रस्तावना

इस संसार में प्रत्येक जीव का स्वभाव है कि वह अपने जीवन में एक घर बनाकर उसमें सुख शान्ति पूर्वक सुरक्षित रहना चाहता है। किन्तु मनुष्य की विशेषता यह है कि वह हर कार्य शास्त्र के अनुसार करना चाहता है क्योंकि गीता (16.24) में कहा है –

'तस्मात्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्ययव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्मकर्तुमिहार्हसि।।

(तुम शास्त्रों में बताये गये विधानों को जानकर ही कर्म करने योग्य हो इसलिये कि कार्य और अकार्य के विषय में शास्त्र ही प्रमाण है।) अन्य प्राणियों की तरह जब मनुष्य अपने लिये एक घर बनाता है तो वह शास्त्र के अनुसार ही बनाना चाहता है। किन्तु जगह की कमी अथवा काम करने की सुविधा अथवा अज्ञानतावश कुछ न कुछ गलत हो ही जाता है तथा अनिवार्य व अपरिहार्य कमियां रह जाती हैं। उन कमियों व दोषों का निवारण करने केलिये निर्माण शुरु करने से पूर्व भूमिपूजन यानि शिलान्यास किया जाता है और निर्माण कार्य पूरा होने के अनन्तर गृहप्रवेश काल में वास्तु पूजन किया जाता है। यह आवश्यक इसलिये है कि एक मकान एक व्यक्ति या एक परिवार के केवल रहने केलिये ही नहीं है किन्तु वह एक कुल – वंश, परंपरा व भावी पीढ़ी को संस्कार प्रदान कर उज्ज्वल भविष्य के निर्माण करने का स्थान है। अतः मनुष्य के संस्कारों के समान मकान के भी संस्कार बताये गये हैं। उन संस्कारों में से एक मुख्य संस्कार को वास्तु शान्ति अथवा गृहप्रवेश कहा जाता है।

इस वास्तु शान्ति में रक्षोघ्नहवन, वास्तुमण्डल देवतापूजन, वास्तुहोम, वास्तुबलि इत्यादि किया जाता है। प्रत्येक वेद के अनुसार वास्तुमण्डल आदि में थोड़ा थोड़ा अन्तर है। इस छोटी सी पुस्तिका द्वारा हमने ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय, सामवेदीय, पौराणिक और आगमिक पद्धतियों के अनुसरण करनेवालों केलिये वास्तुमण्डल, वास्तुपूजा एवं वास्तुहवन आदि की एक सामान्य विधि का दिग्दर्शन कराने केलिये प्रयास किया है। उनमें से सर्व प्रथम सर्व सामान्य पद्धति के अनुसार संकल्पादि दर्शाकर अन्त में अन्य पद्धतियों के अन्तर (भेद) मात्र को यथासंभव दर्शाने का प्रयास किया गया है। अधिक जानकारी केलिये पाठक नारदसंहिता, मत्स्यपुराण, भविष्यपुराण, प्रतिष्ठाकौमुदी, सर्वदेवप्रतिष्ठा प्रकाशः, विश्वकर्मप्रकाशः, नित्यनैमित्तिककर्मसमुच्चयः, आश्वलायनपरिशिष्ट, शौनक कृत ऋग्विधान, रेणुककारिका, पूर्तकौस्तुभ, पूर्तदीधिति, पंचरात्रसंहिता, दैवज्ञवल्लभ, शिल्पशास्त्रं, ज्योतिः सागरः, वास्तुप्रदीपः आदि ग्रन्थों का अवलोकन करें।

सर्वेषामात्मा,

स्वामी शान्तिधर्मानन्द सरस्वती

क्रमांक	पृष्ठ सं.	पंक्ति सं.	अशुद्धिः	शुद्धिः
1	12	22	त्रिष्टुब्छन्दः	त्रिष्टुप्छन्दः
2	15	23	वीरवतीभिः शन्नो	वीरवतीमिशन्नो
3	15	23	रासते	रासताम्
4	21	22	मुखामुखाः	मुखाः
5	36	11	स्वास्ति	स्वस्ति
6	36	1	कृमवयम्	कृमा वयम्
7	41	11	वीरान्नद्र	वीरान्नुद्र
8	43	22	ऐसे	ऐसा
9	53	3	मदुधुघे	मदुघे
10	54	18	कंकतोद्धाः	कंकतोद्भवाः
11	96	5	खाली है	नैर्ऋत्य
12	96	8	खाली है	नैर्ऋत्य
13	102	25	बुहस्पति	बृहस्पति
14	112	8	पृष्ठ संख्या 139	पृष्ठ संख्या 138
15	12	10	पृष्ठ संख्या 140	पृष्ठ संख्या 139
16	130	8	सर	सूर

विषयसूची

परिशिष्टभागः

वास्तु पूजा पद्धति प्रकाशः
(गृहप्रवेशविधिः)

2. अथ प्रथमदिनकर्म :-

यजमान वास्तुपूजन के पूर्वदिन प्रातः यथाविधि स्नान करके अपनी सँस्कृति के अनुसार शुभ्रवस्त्र पहनकर स्वसंप्रदाय के अनुसार तिलक आदि धारण करके शरीरादि की शुद्धि केलिये पंचगव्य का प्राशन करने के बाद नित्य सन्ध्या और इष्टदेवतादि का पूजन करें। तत्पश्चात् शुभ मुहूर्त में पत्नी को वाम भाग में बिठाकर दो बार आचमन करके शान्तिपाठ से कर्म को आरम्भ करें।

2.1) अथ शान्तिपाठ :-

हाथ में अक्षत पुष्पादि ग्रहण करके स्वस्ति वाचन करें-' ॐ
आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासोऽअपरिता सऽउद्भिदः। देवानो यथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।1।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाॅं रातिरभिनो निवर्तताम्। देवानाॅं सख्यमुपसेदिमा वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।2।। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणम्वरुणॅंसोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्।।3।। तन्नो वातोमयोभुवातु भेषजन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्णया युवम्।।4।। तमीशानञ्जगतस्तस्तुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।5।। स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।6।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह।।7।। भद्रं कर्णेभिः

शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳस स्तनूभि र्व्यशेम हि देवहितं यदायुः।।8।। शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः।।9। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवाऽअदितिः पंचजनाऽअदितिर्जात-मदितिर्जनित्वम्।।10।। तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधि रोचने दिवः।।11।। आयुष्यं वर्चस्यꣳरायस्पोष- मौद्भिदम्। इद ꣳहिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाविशतादुमाम्।।12।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।13।। यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽअभयन्नः पशुभ्यः।।14।। सुशान्तिर्भवतु।। ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।
ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।।
ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।। ॐ शचीपुरन्धराभ्यां नमः।।
ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।।
ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।।
ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः।।
ॐ सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः।। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः।।
ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।1।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणयादपि।।2।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।3।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजं।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।4।।

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।5।।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते।।6।।

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलं।
येषां हृदिस्थो भगवान्मंगलायतनो हरिः।।7।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।8।।

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरं।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये।।9।।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।10।।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।11।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

पुनः स्वधर्मपत्नी सहित हाथ में फल, पुष्प, ताम्बूल आदि को ग्रहण कर समस्त देवी-देवताओं की ध्यानपूर्वक प्रार्थना करें -

'ॐ नमो महद्भ्यो नमोऽअर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान् यदि शक्नुवाम मा ज्यायसः शंसमावृक्षि देवाः।।

ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु।। तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, कुलदेवताभ्यो नमः। मया कर्तव्यं इदं सांगवास्तुपूजनकर्म सुमुहूर्तोऽअस्तु।' ब्राह्मण कहें – 'सुमुहूर्तमस्तु।'

समनु प्राणायाम (प्राणायाम मंत्र को मन में बोलते हुए) करके कर्मारम्भ करने केलिये सामान्य संकल्प करें।

2.2) अथ सामान्य संकल्प :-

'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अस्य श्रीभगवतो महापुरुषस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे कलियुगे प्रथमपादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे अस्मिन्वर्तमाने व्यावहारिके चान्द्रमानेन प्रभवादि षष्ठीसंवत्सराणां मध्ये...नाम संवत्सरे,...अयने,... ऋतौ,...मासे,...पक्षे,...तिथौ,...वासरयुक्तायां शुभनक्षत्र शुभयोग शुभकरण एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं उत्तरोत्तराभि वृद्ध्यर्थं मया आरब्ध वास्तुपूजनकर्म निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थं च महागणपतिपूजां कर्मांगभूत पुण्याह वाचन- वरुणादिदेवता- पूजनपूर्वकं हवनादिकर्म च करिष्ये।'

2.3) अथ गुरुगणपतिपूजनम् :-

सूर्यमण्डल में गुरुमण्डल की भावना कर हाथ जोड़कर प्रणाम करें-

'ॐ श्री आदि गुरुभ्यो नमः, ॐ श्री मूलगुरुभ्यो नमः, ॐ श्री वेदव्यासाय नमः, ॐ श्री परात्परगुरुभ्यो नमः, ॐ श्री परमगुरुभ्यो नमः, ॐ श्री गुरुभ्यो नमः।'

तथा गणेशजी का ध्यान कर प्रार्थना करें –

'ॐ गं श्रीमन्महागणाधिपतये नमः,
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो गणाधिपः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षः भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सर्वकार्येषु विघ्नस्तस्य न जायते।।

ॐ श्रीमन्महागणपतये नमः, ध्यायामि पूजयामि पुष्पाक्षतानि समर्पयामि नमस्करोमि। ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।।'– शुक्लयजुर्वेदे, (ऋग्वेदे तु –**ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृण्वन्नूतीभिः सीद सादनम्।)**

2.4) **अथ कलशस्थापनं :–**

कलश स्थापना पूर्वक वरुणादिदेवता का पूजन करें। कलश के आधारभूत अष्टदल कमल को स्पर्श कर इस मन्त्र का पाठ करें– **'ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधा या विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हिꣳसीः।।'** अगले मन्त्र का पाठ करते हुये थोड़े धान्य को कमल पर डालें– **'ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान् देवो वः सविता हिरण्यपाणिः। प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनाम्पयोसि।।'** उस पर तांबे के कलश को स्थापित करें– **'ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विद वः पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानः। सहस्रं धुक्ष्वोरु**

धारापयस्वतीः पुनर्मा विशताद्रयिः।।' अब कलश को जल से भरें- '**ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽ-ऋतसदनमासीद।**' तत्पश्चात् उसमें गन्ध को समर्पित करें- '**ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।**' उसमें सर्वौषधी को डालें- '**ॐ याऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा। मनैनुवभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।**' तदनन्तर दूर्वा डालें- '**ॐ काण्डात्काण्डा त्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।**' अब आम के पांच पत्तों को उसमें रखें- '**ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाजऽ इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।**' इसके बाद सप्त मृत्तिका को उसमें डालें- '**ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरान्निवेशनी। यच्छानः शर्म स प्रथाः।।**' तत्पश्चात् पूगीफल (सुपारी) को डालें- '**याः फलिनीर्याऽ-अफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वंहसः।।**' उसके बाद पंच रत्नों को डालें- '**ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।**' तदनन्तर कलश में दक्षिणा डालें- '**ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**' पंच पल्लवों से कलश के अन्दर डाली गयी सामग्री को अच्छी तरह से घुमायें और कलश के गले में मौली को बांधें अथवा लाल वस्त्र से कलश को लपेटें- '**ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासोऽअग्ने विश्वरूपं संव्ययस्व विभावसो।।**' और अब पत्तों को चारों दिशाओं में फैलाकर उस पर पूर्णपात्र को रखें -'**ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्ज शतक्रतो।।**' इस प्रकार स्थापित कलश को प्रतिष्ठित

करें- '**मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु। विश्वेदेवास इहमादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।।** उसके बाद कलश को हाथ से ढ़ककर निम्न मन्त्रों से अभिमन्त्रित करें-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्र समाश्रिताः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपवसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।
सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदानदाः।
सर्वेऽत्र प्रतितिष्ठन्तु मम कल्याणकारकाः।।

इस प्रकार कलशस्थ जल को अभिमन्त्रित कर अब विशेषतः वरुणदेवता का आवाहन करें- '**ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त-दाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेहबोध्युरुशं समान आयुः प्रमोषीः।। ॐ भूः वरुण मावाहयामि, ॐ भुवः वरुण-मावाहयामि, ॐ स्वः वरुणमावाहयामि, ॐ भूर्भुवःस्वः वरुण-मावाहयामि।**' अब निम्न मन्त्र से षोडशोपचार पूजन करें-

'**ॐ अपांपति वरुणाय नमः।**'

3. अथ गृहप्रवेशदिनात्प्राग्दिनकर्म (द्वितीयदिनकर्म):-

दैनिक सन्ध्यावन्दन देवपूजा आदि करने के बाद दो बार आचमन करके ब्राह्मण से पवित्री ग्रहण कर परमात्मा का ध्यान करें - '**ॐ पवित्रन्ते इत्यस्य मन्त्रस्य परब्रह्मा ऋषिः, त्रिष्टुब्छन्दः, परमात्मा देवता, पवित्रधारणे विनियोगः। ॐ पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः। अतप्तनूनतदामो अश्नुते श्रृतास इद्वहन्तस्तत्समातत।।**' पवित्री को धारण करें।

तत्पश्चात् प्रधान संकल्प करें।

3.1) अथ प्रधानसंकल्पः -

'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अस्य श्रीभगवतो महापुरुषस्य श्रीविष्णो-राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे कलियुगे प्रथमपादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे अस्मिन्वर्तमाने व्यावहारिके चान्द्रमानेन प्रभवादि षष्ठीसंवत्सराणां मध्ये ...नामसंवत्सरे, ...अयने, ...ऋतौ, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...वासरयुक्तायां शुभनक्षत्र शुभयोग शुभ करण एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ देवब्राह्मणानां च सन्निधौ मम... गोत्रोत्पन्नस्य... नक्षत्रे... राशौ जातस्य... शर्मणः/वर्मणः/ गुप्तस्य पुत्र पुत्रिकादि समेतस्य मम गृहे स्थितानां शिशुबालवृद्ध प्रभृतिसर्वजनानां अखिलपापक्षयपूर्वक चतुर्विध पुरुषार्थसिद्धिद्वारा परमेश्वरप्रीत्यर्थं, विशेषेण मया निर्मित अस्मिन्नवागारे निर्माणकाले कृतकारितसंभावितभू खननाश्मा-खण्डनदारुच्छेदनादिसकलदोषनिबर्हणार्थं, अस्मिन् गृहे येन केन प्रकारेण प्रविष्टानां रक्षोभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसयक्षाणां दूरे निरसनार्थं, अस्मिन्वास्तौ चिरकालसुखनिवासयुक्ताखिल रोगविघ्नादिशान्तिपूर्वकं सम्पदारोग्यपुत्रपौत्रधनधान्या दिसमृद्धि-पूर्वकं चास्य वास्तोः शुभतासिद्ध्यर्थं, गृहप्रवेश लग्नकाले आदित्यादीनां नवानां ग्रहाणां मध्ये ये ये ग्रहा अशुभस्थानेषु स्थिताः तेषां ग्रहाणां शुभफलावाप्त्यर्थं तथा ये ये ग्रहाः शुभस्थानेषु स्थिताः तेषां ग्रहाणां अतिशयशुभफलावाप्त्यर्थं, अस्मिन्गृहे राजचोरसर्प सिंहशार्दूलव्याघ्रभल्लूकादिसर्वोपद्रव-निवारणार्थं सग्रहमखां वास्तुशान्ति पुरःसरं नवागारप्रवेशाख्यं कर्म करिष्ये। तदंगतया च विहितं स्वस्तिपुण्याहवाचननान्दी-श्राद्धमातृकापूजनादिकर्म आचार्यादिवरणपूर्वकं आदौ निर्विघ्नतार्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये।।'

गणेशाम्बिका का पूजन करके पुण्याहवाचन करें-

3.2) अथ पुण्याहवाचनं :-

दैनिक गणेशाम्बिकापूजन करके स्थापित कलश की अर्चना करके हाथ जोड़कर प्रार्थना करें- '**ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।। पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक। पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं संन्निधौ भव।।**' जमीन पर घुटने टेक कर अपनी अंजलि को खिले हुये कमलाकार में सिर पर धारण कर बैठें और उस कमलाकार में पुटित अंजलि में ब्राह्मण कलश रखें। तब यजमान प्रार्थना करें -

'त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः।
अतो धर्माणि धारयन्।।
तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं।
दीर्घायुरस्त्विति ब्रुवन्तु।।'

इस प्रकार यजमान कहें, जवाब में ब्राह्मण कहे - '**पुण्यं पुण्याहं दीर्घायुरस्तु**'। ब्राह्मण के हाथ में कलश देकर यजमान कहे - '**सुप्रोक्षितमस्तु, ॐ शिवा आपः सन्तु**', द्विज जवाब दें - '**सन्तु शिवा आपः**'। द्विज के हाथ में पुष्प देकर पुनः यजमान कहे - '**सौमनस्यमस्तु**', द्विज जवाब दें - '**अस्तु सौमनस्यम्**'। द्विज के हाथ में अक्षत देकर पुनः यजमान कहे - '**ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु**', द्विज जवाब दें - '**अस्त्वक्षतमरिष्टं चास्तु**'। द्विज के हाथ में गन्ध देकर पुनः यजमान कहे - '**ॐ गन्धाः पान्तु**', द्विज जवाब दें - '**अस्तु गन्धं सौमंगल्यं चास्तु**'। द्विज के हाथ में पुनः अक्षत देकर यजमान कहे - '**ॐ अक्षताः पान्तु**' द्विज जवाब दें - '**ॐ आयुष्यमस्तु**', द्विज के हाथ में पुनः पुष्प देकर यजमान कहे - '**ॐ पुष्पाणि पान्तु**', द्विज जवाब दें - '**ॐ सौश्रियमस्तु**'। द्विज के हाथ में ताम्बूल देकर पुनः यजमान कहे - '**ॐ ताम्बूलानि पान्तु**', द्विज

जवाब दें – '**ॐ ऐश्वर्यमस्तु**'। द्विज के हाथ में दक्षिणा देकर पुनः यजमान कहे '**दक्षिणाः पान्तु**', द्विज जवाब दें – '**ॐ बहुधनमस्तु**'। द्विज के हाथ में जल देकर पुनः यजमान कहे – '**ॐ पुनर त्रापः पान्तु**', द्विज जवाब दें – '**ॐ स्वर्चितमस्तु**'। अब यजमान ब्राह्मणों के सामने हाथ जोड़कर कहे – '**ॐ श्रीर्यशोविद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्त्विति ब्रुवन्तु**', अब द्विज जवाब दे (व यजमान पर जल छिड़ककर अभिषेक करें)– '**ॐ श्रीर्यशोविद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु दीर्घमायुः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु**'। पुनः यजमान द्विजों के हाथ में अक्षत देकर प्रार्थना करें –'**यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुःसामाशीर्वचनं बहु ऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। ॐ वाच्यतां3**', यजमान पर अक्षत छिड़कते हुये द्विज आशीर्वचन दें – '**ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।1। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाꣳरातिरभिनो निवर्तताम्। देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।2। न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।3। दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वन्दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ।4। द्रविणोदा द्रविण- सस्तुरस्य द्रविणोदाः सनस्य प्रियं सत्। द्रविणोदा वीरवतीभिः शन्नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः ।5। सविता पश्चात्तत्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरा-त्सविताधरातात्। सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतान्दीर्घमायुः ।6। नवो नवो भवति जायमानोऽह्नान्केतुरुषसामेत्यग्रम्। भागन्देवेभ्यो विदधात्यायं प्रचन्द्रमा-**

स्तीरते दीर्घमायुः ।7। उच्चा दिवि दक्षिणावन्तोऽअस्थुर्येऽअश्वदाः सह ते सूर्येण । हिरण्यदाऽअमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्रतिरन्त आयुः ।8।' अब यजमान कहे – '**व्रतजपनियमतपःस्वाध्याय-क्रतुदयादमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्**', द्विज बोलें – '**समाहितमनसः स्मः**'। पुनः यजमान कहे – '**प्रसीदन्तु भवन्तः**', द्विज बोलें – '**प्रसन्नाः स्मः**'। अब से आगे यजमान के प्रत्येक वचन के बाद द्विज केवल '**अस्तु**' बोलें। यजमानकलश पर चावल डालता जाय '**ॐ शान्तिरस्तु, ॐ पुष्टिरस्तु, ॐ तुष्टिरस्तु, ॐ वृद्धिरस्तु, ॐ अविघ्नमस्तु, ॐ आयुष्यमस्तु, ॐ आरोग्यमस्तु, ॐ शिवं कर्मास्तु, ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु, ॐ वेदसमृद्धिरस्तु, ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु, ॐ धनधान्य समृद्धिरस्तु, ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु, ॐ इष्टसंपदस्तु**, अब चावल को एक पृथकपात्र में डालें – **ॐ अरिष्ट निरसनमस्तु , ॐ यत्पापं यद्रोगं नः अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु** (चावल बाहर डालें), पुनः कलश पर डालें **ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु, ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु, ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु, ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यन्ताम्, ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्र-ग्रहलग्नसंपदस्तु**।'

अब उदकसेक कर्म करें – '**ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्ना-धिदेवताः प्रीयन्ताम्, ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे साधिदेवते प्रीयेताम्, ॐ दुर्गापांचाल्यै प्रीयेताम्, ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्, ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्, ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्, ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्, ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्, ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्, ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्, ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्, ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्, ॐ भगवती**

माहेश्वरी प्रीयताम्, ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्, ॐ भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम्, ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्, ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्, ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्, ॐ सर्वा कुलदेवता: प्रीयन्ताम्, ॐ सर्वा ग्रामदेवता: प्रीयन्ताम्, ॐ हताश्च ब्रह्मद्विष:, (चावल बाहर डालें)
ॐ हताश्च परिपन्थिन:, ॐ हताश्च विघ्नकर्तार:, ॐ शत्रव: पराभवं यान्तु, ॐ शाम्यन्तु घोराणि, ॐ शाम्यन्तु पापानि, ॐ शाम्यन्त्वीतय:, (पुन: चावल कलश पर डालें)
ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्, ॐ शिवा आप: सन्तु, ॐ शिवा ऋतव: सन्तु, ॐ शिवा ओषधय: सन्तु, ॐ शिवा नद्य: सन्तु, ॐ शिवा गिरय: सन्तु, ॐ शिवा अतिथय: सन्तु, ॐ शिवा अग्नय: सन्तु, ॐ शिवा आहुतय: सन्तु, ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्, ॐ निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय: पच्यन्ताम् योगक्षेमो न: कल्पताम्, ॐ शुक्रांगारकबुधबृहस्पति शनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगा: सर्वे ग्रहा: प्रीयन्ताम्, ॐ भगवन्नारायण: प्रीयताम्, ॐ भगवन्पर्जन्य: प्रीयताम्, ॐ भगवान्स्वामी महासेन: प्रीयताम्।' अब यजमान कहे–'ॐ पुण्याहकालान्वाचयिष्ये', द्विज कहें – 'ॐ वाच्यताम्'। यजमान कहे – 'ब्राह्मयं पुण्यं महर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु न: ।1। भो ब्राह्मणा: मया क्रियमाणस्य वास्तुपूजनाख्यस्य कर्मण: पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।' द्विज तीन बार कहे – 'ॐ पुण्याहम्'। यजमान कहे – 'ॐ पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसा धिय:। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेद: पुनीहि मा ।1। पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभि: सिद्ध–गन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु न: ।2। भो ब्राह्मणा: मया क्रियमाणस्य वास्तुपूजनाख्यस्य कर्मण: कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु', द्विज तीन

बार कहे – '**ॐ कल्याणमस्तु**'। यजमान कहे – '**ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्रायाचार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयम्मे कामःसमृद्ध्यतामुपमादोनमतु।। सागरस्य यथा वृद्धिर्महालक्ष्यादिभिः कृता। संपूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः। भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य वास्तुपूजनाख्यस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु**'। द्विज तीन बार कहे – '**ॐ ऋद्ध्यताम्**'। यजमान कहे– '**ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृताऽअभूम। दिवम्पृथिव्याऽअध्यारूहामाविदाम देवान्स्वर्ज्योतिः।1। स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्य कल्याणवृद्धिदा। विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः।2। भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य वास्तुपूजनाख्यस्य कर्मणः आयुष्मते स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु**', द्विज तीन बार कहे – '**ॐ आयुष्मते स्वस्ति**'। यजमान कहे – '**ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्ददातु।1। समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका। हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।2। भो ब्राह्मणाः मया क्रियमाणस्य वास्तुपूजनाख्यस्य कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु**', द्विज तीन बार कहे – '**अस्तु श्रीः**'। यजमान कहे – '**ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व लोकम्मऽइषाण।1। अस्मिन्पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात्श्रीमहागणपति प्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु**', द्विज तीन बार कहे – '**ॐ अस्तु परिपूर्णः**'। अब अविधुर चार द्विज दूर्वा और आम के पत्तों से अभिषेक कर्म करें – (अभिषेक काल में पत्नी यजमान के बायीं ओर बैठें) '**ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।1। ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधासो देशेऽभव-**

त्सरित् ।2।, ॐ वरुणस्योत्तभनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदनमासीद ।3।, ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ।4।, ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ ।5। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि ।6। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुम्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम् अश्विनोर्भैषज्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसयाभिषिंचामि। सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिंचामि ।7। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव ।8। धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञम्प्रावन्तु नः शुभे ।9। त्वं यविष्टदाशुषो नृःपाहि श्रृणुधी गिरः। रक्षातोकमुतमना ।10। अन्नपतेऽअन्नस्य नो धेह्यनमीवस्यशुष्मिणः प्रप्रदातारन्तारिषऽऊर्जन्नो धेहि द्विपदे शं चतुष्पदे ।11। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।12। यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ।13। अमृताभिषेको ऽअस्तु। शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु' ।14। इसके बाद तीन अथवा पांच पुत्रवती वृद्धसुवासिनियों से आरती कराना है –
'ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्मेदाः पुत्रवती दक्षिणत इन्द्रस्याधिपत्ये प्रजामेदाः विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्ये-ऽओजोमेदा विश्वाभ्यो मान्राष्ट्राभ्यस्पाहि मनारश्वोसि।। अनेन पुण्याहवाचनेन भगवान् प्रजापति (/वास्तुदेवता) प्रीयताम्'।।
गौर्यादिषोडशमातृकाओं तथा श्री आदि सप्तघृतमातृकाओं का पूजन करें।

3.3) अथ नान्दीश्राद्धः -

वस्त्र, यज्ञोपवीत, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, पूगीफल, ताम्बूल और दक्षिणा रखकर आचमन और प्राणायाम करके संकल्प करें–' **ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः पूर्वोक्त एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ देवब्राह्मणानां च सन्निधौ अद्य वास्तुपूजनांगत्वेन सांकल्पिकविधिना ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्ननिष्क्रयी भूतं यथाशक्तिहिरण्येन नान्दीश्राद्धं करिष्ये**'।

पाद्यादि दान करे– '**सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः** ।1। **अमुकगोत्रा मातृपितामही प्रपितामह्यः नांदीमुख्यः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः** ।2। **अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखा ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पादप्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः** ।3। (द्वितीयगोत्राः) **मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः पाद्यं पाद प्रक्षालनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः**' ।4।

आसन दान करें–'**सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः संपद्यतां वृद्धिः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः** ।1। **अमुकगोत्राणां मातृपिता महीप्रपितामहीनां नान्दीमुखीनां ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः संपद्यतां वृद्धिः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः** ।2। **अमुक गोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः संपद्यतां वृद्धिः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः** ।3। (द्वितीयगोत्राणां) **मातामहप्रमातामहवृद्ध प्रमातामहनां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः**

संपद्यतां वृद्धिः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवावः' ।4।

गन्धादि दान करें– '**सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दी-मुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः** ।1। **अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दी मुखीभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः** ।2। **अमुकगोत्रेभ्यो पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः** ।3। (द्वितीयगोत्रेभ्यो) **मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यो सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः'** ।4।

भोजननिष्क्रयद्रव्य दान करें– '**सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः** ।1। **अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दी मुखीभ्यः इदं ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः** ।2। **अमुकगोत्रेभ्यो पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं ब्राह्मणयुग्मभोजन-पर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः** ।3। (द्वितीयगोत्रेभ्यो) **मातामहप्रमातामहवृद्धप्र-मातामहेभ्यो सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं ब्राह्मणयुग्मभोजन पर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं दत्तममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः'** ।4।

सक्षीर जल दान करें – '**सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखामुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः सक्षीरोदकं प्रीयन्ताम्** ।1। **अमुकगोत्रा मातृपितामहीप्रपितामह्यः नांदीमुख्यः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः सक्षीरोदकं प्रीयन्ताम्** ।2। **अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखा ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः सक्षीरोदकं प्रीयन्ताम्** ।3।

(द्वितीयगोत्राः) मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं वः सक्षीरोदकं प्रीयन्ताम्'।4।
आशीर्वाद ग्रहण करें – यजमान कहे – **'गोत्रं नो वर्धताम्'**, द्विज कहे – **'वर्धताम् वो गोत्रम्'**। यजमान कहे (सिर ढ़क कर)- **'दातारो नोऽअभिवर्धताम्'**, द्विज कहे– **'अभिवर्धताम् वो दातारः'** यजमान कहे– **'वेदाश्च नोऽअभिवर्धन्ताम्'**, द्विज कहे– **'अभिवर्धन्ताम् वो वेदाः'**। यजमान कहे – **'संततिर्नो वर्धताम्'**, द्विज कहे – **'वर्धताम् वः सन्ततिः'**। यजमान कहे – **'श्रद्धा च नो मा व्यगमत्'**, द्विज कहे – **'मा व्यगमत् वः श्रद्धा'**। यजमान कहे – **'बहु देयं च नोऽअस्तु'**, द्विज कहे – **'अस्तु वो देयम्'**। यजमान कहे – **'अन्नं च नो बहु भवेत्'**, द्विज कहे – **'भवतु वो बह्वन्नम्'**। यजमान कहे– **'अतिथींश्च लभामहे'**, द्विज कहे– **'लभन्ताम् वोऽअतिथयः'**। यजमान कहे – **'याचितारश्च नः सन्तु'**, द्विज कहे– **'सन्तु वो याचितारः'**। यजमान कहे – **'एषा आशिषः सत्याः सन्तु'**, द्विज कहे– **'सन्त्वेताः सत्याशिषः'**।

दक्षिणा दान दें–**'सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलादिभिर्निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः ।1। अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयव मूलादिभिर्निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः ।2। अमुकगोत्रेभ्यो पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलादिभिर्निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः ।3। (द्वितीयगोत्रेभ्यो) मातामहप्रमातामहवृद्ध-प्रमातामहेभ्यो सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य**

फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलादिभिर्निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः' ।4। **'नान्दीश्राद्धं संपन्नं सुसंपन्नमस्तु'** – यह कह कर अगले मन्त्र से विसर्जन करें – **'ॐ वाजे वाजेवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबतमादयध्वं तृप्तायात पथिभिर्देवयानैः'** ।1। इस मन्त्र से अनुव्रजन करें – **'आमा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आमागन्तां पितरा मातरा चामा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात्'** ।2। यजमान कहे – **'अस्मिन्नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् नान्दीमुखप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽअस्तु'**, द्विज तीन बार कहे – **'अस्तु परिपूर्णः'**।

ब्राह्मणों को आचार्य, ब्रह्मा और ऋत्विग्रूप के कर्म के लिये वरण करें। सर्वप्रथम आचार्य वरण करें।

3.4) अथ आचार्यवरणम्: –

हाथ में गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रा और वस्त्र लिये हुये निवेदन करें – **'अस्मिन्वास्तुशान्त्यादिहोमपर्यन्तकर्म कर्तुं... गोत्रवन्तं... शर्माणं ब्राह्मणं एभिर्गन्धाक्षतपुष्प ताम्बूलमुद्रावासोभिः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।'** आचार्य कहें – **'ॐ वृतोऽस्मि। ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते'**। उनके हाथों में गन्धादि देकर पुनः प्रार्थना करें – **'ॐ बृहस्पते इत्यस्य मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बृहस्पतिर्देवता आचार्यवरणे विनियोगः। ॐ बृहस्पतेऽअति-यदर्योऽर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजा-ततदस्मासु द्रविणं देहि चित्रम्।। आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यज्ञेऽअस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत।।'** चन्दनाक्षतपुष्पादि से आचार्यजी की पूजा करें। अब यज्ञ के लिये ब्रह्मा का वरण करें।

3.5) अथ ब्रह्मवरणम् :-

हाथ में पुनः गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रा और वस्त्र लिये हुये निवेदन करें- '**अस्मिन्वास्तुशान्त्यादिहोमपर्यन्तकर्म कर्तुं... गोत्रवन्तं... शर्माणं ब्राह्मणं एभिर्गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रा वासोभिः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।**' ब्रह्मा कहें - '**ॐ वृतोऽस्मि। ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते**'। उनके हाथों में गन्धादि देकर पुनः प्रार्थना करें- '**ॐ ब्रह्मणा ते इत्यस्य मन्त्रस्य विश्वामित्रो ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, ब्रह्मा देवता, ब्रह्मवरणे विनियोगः। ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखिया सधमाद आशु। स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वानुपयाहि सोमम्।। यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा स्वर्गे लोके पितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेऽअस्मिन्ब्रह्मा द्विजपते भव।।**' चन्दनाक्षतपुष्पादि से ब्रह्माजी की पूजा करें।

अब यज्ञ केलिये अन्य आवश्यक ऋत्विजों का वरण करें।

3.6) अथ ऋत्विग्वरणम् :-

एकाग्नि विधि से केवल आचार्य व ब्रह्मा के वरण से कर्म को कर सकते हैं। यदि सामर्थ्य है और आवश्यकता भी हो तो सामर्थ्य व आवश्यकता के अनुसार (23, 15 अथवा 11) जितने ब्राह्मणों को वरण करना है उन्हें उत्तराभिमुख बिठाकर उनके समक्ष हाथ में गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रा और वस्त्र लिये हुये उनसे निवेदन करें - '**अस्मिन्वास्तुशान्त्यादिहोमपर्यन्तकर्म कर्तुं... गोत्रवन्तं ... शर्माणं ब्राह्मणं एभिर्गन्धाक्षतपुष्पताम्बूलमुद्रावासोभिः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।**' वे सब कहें - '**ॐ वृताः स्म। ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते**'। उनके हाथों में दक्षिणा देकर पुनः प्रार्थना करें - '**ॐ ऋत्विज्यथापूर्व शक्रादीनां मखे भवेत्। यूयं तथा मे**

भवत ऋत्विजोऽर्हथ सत्तमाः।। अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया। सुप्रसन्नैश्च कर्तव्यं कर्म मे विधिपूर्वकम्।।' चन्दनाक्षतपुष्पादि से ऋत्विजों की पूजा करें।

3.7) अथ मधुपर्कपूजाप्रयोगः-

यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र के अनुसार मधुपर्क से वरण किये गये समस्त ऋत्विजों की पूजा करने का क्रम बताया जा रहा है। (यदि वरण किये गये ब्राह्मण अलग-अलग वेदी हो तो उनकी मधुपर्क पूजा उस-उस वेद के गृह्यसूत्र के अनुसार ही करें)। समस्त ब्राह्मणों को एक पंक्ति में पूर्वाभिमुख बिठायें और स्वयं यजमान उत्तराभिमुख बैठें। यजमान आचमन कर हाथ जोड़कर प्रत्येक ब्राह्मण से प्रार्थना करें - '**ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्**', द्विज कहे - '**ॐ अर्चय**'। आचार्य जितने ब्राह्मण वरण किये गये हैं उतने विष्टर ग्रहण कर कहे - '**ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः**' और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे - '**ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यताम्**' और उन्हें दे, द्विज यजमान से ग्रहण कर कहे - '**ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि**'। सभी के द्वारा ग्रहण किये जाने पर सभी द्विज मिलकर कहे और अपने-अपने आसन के नीचे विष्टर को उत्तराग्र रखे - '**ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।**' आचार्य पाद्यपात्र ग्रहण कर कहे - '**ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं**' और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे- '**ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम्**', द्विज कहे- '**ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि**'। अब यजमान प्रत्येक द्विज के पहले दाहिने पैर को फिर बायें पैर को क्रमशः इस मन्त्र से धोवे - '**ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पद्यायै विराजो दोहः।**' पुनः आचार्य पूर्ववत् विष्टर ग्रहण कर कहे - '**ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः**' और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे - '**ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यताम्**' और उन्हें दे, द्विज

यजमान से ग्रहण कर कहे – '**ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि**'। सभी के द्वारा ग्रहण किये जाने पर सभी द्विज मिलकर कहे और अपने–अपने पैर के नीचे विष्टर को उत्तराग्र रखे – '**ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।**' आचार्य अर्घ्यपात्र ग्रहण कर कहे – '**ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः**', और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे – '**ॐ अर्घः प्रतिगृह्यताम्**', द्विज कहे – '**ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामि**'। यजमान के हाथ से प्रत्येक द्विज अर्घ्यपात्र को इस मंत्र से ग्रहण करें – '**ॐ आपस्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नुवानि।**' सभी के द्वारा ग्रहण किये जाने पर सभी द्विज मिलकर कहें और जल को भूमि पर गिरायें – '**ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत । अरिष्टास्माकं वीरामापरासेचिमत्पयः।**' आचार्य आचमनीय पात्र ग्रहण कर कहे – '**ॐ अचमनीयमाचमनी यमाचमनीयम्**', और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे – '**ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्यताम्**', द्विज कहे – '**ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्णामि**'। यजमान के हाथ से प्रत्येक द्विज आचमनीयपात्र को ग्रहण कर इस मंत्र से एक बार आचमन करे – '**ॐ आमागन्यशसासꣳसृज वर्चसा तम्मा कुरु प्रियम्प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्।**' फिर स्मार्त आचमन करें। आचार्य ढके हुये मधुपर्कपात्र को ग्रहण कर कहे – '**ॐ मधुपर्कं मधुपर्कं मधुपर्कम्**', और यजमान को दे, यजमान प्रत्येक से कहे – '**ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्यताम्**', द्विज कहे – '**ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि**'। यजमान के हाथ में स्थित मधुपर्कपात्र को खोलकर इस मंत्र से देखें – '**ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे।**' और इस मंत्र से यजमान के हाथ से ले– '**ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि।**' अपने बायें हाथ में रखकर दाहिने हाथ की अनामिका व अंगुष्ठ से प्रदक्षिणा के क्रम से एक

बार आलोडन कर थोड़ा जमीन पर गिरायें फिर दो बारा मन्त्र का पाठकर पुनः थोड़ा जमीन पर गिराये – **'ॐ नमः स्यावास्यायान्नशनेयत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि।'** तत्पश्चात् इस मंत्र से तीन बार अनामिका और अंगुष्ठ से प्राशन करके शेष को खायें – **'ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳरूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि।'** तदनन्तर स्मार्तविधि से आचमन कर निम्न विधि से अपने अंगों को कराग्र से स्पर्श करें– **'ॐ वाङ्मे आस्येऽअस्तु** (मुख)', **'ॐ नसो मे प्राणोऽअस्तु** (दोनों नासिका छिद्र)', **'ॐ अक्ष्णोर्मेचक्षुरस्तु** (दोनों आंख)', **'ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु** (दोनों कान)', **'ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु** (दोनों बाहु)', **'ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽ अस्तु** (दोनों जांघ)', **'ॐ अरिष्टानि मेऽअंगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु** (पूरे शरीर को दोनों हाथों से स्पर्श करे)। हस्तप्रक्षालन कर आचमन करे।

आचार्य कहे – **'ॐ गौर्गौर्गौः'**, यजमान कहे – **'ॐ गौः प्रतिगृह्यताम्'**, द्विज कहे– **'ॐ गौः प्रतिगृह्णामि, ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनांꣳस्वसाऽआदित्यानाममृतस्य नाभिः। प्रणुवोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ठ।। मम अमुष्य यजमानस्य चोभयोः पाप्मा हतः ॐ'**।

पुनः जोर से कहे – **'ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु।'**

3.8) अथ प्रार्थना :-

सभी ब्राह्मणों के समक्ष हाथ जोड़कर प्रार्थना करे –

'ब्राह्मणाः सन्तु मे शस्ताः पापात्पान्तु समाहिताः।
वेदानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम्।1।
जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः पुनः।
देवानां च पितृणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः।2।

येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम्।
रक्षन्तु सततं तेषां जपयज्ञं व्यवस्थिताः।3।
ब्राह्मणा जंगमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
येषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिना जनाः।4।
पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः।
सर्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः।5।
श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा।
यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नरद्रुमाः।6।
अंगीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषः।
यथोक्तनियमैर्युक्ता मन्त्रार्थे स्थिरबुद्धयः।7।
यत्कृपालोचनात्सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः।
अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।8।
देवध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा।
अदुष्टभाषणा नित्यं मा सन्तु परनिन्दकाः।9।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि।10।

(आचार्यजी से विशेष प्रार्थना –)

मन्त्रमूर्तिर्भवान्नाथ संसारोच्छेदकारक।
सांगं कर्म यथा मे स्यात्तथा कुरु हि भूसुर।1।
संसारभयभीतेन अयं यज्ञः सुभक्तितः।
प्रारब्धस्त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं मे भवत्विति।2।
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसादेन कर्तव्यं शान्तिकं विधिपूर्वकम्।3।

3.9) अथ आचार्य कर्म :-

आचमन कर प्राणायाम करके देशकाल का कथन करे – **'अस्मिन् वास्तुशान्त्यादिकर्मणि यजमानेन वृतोऽहमाचार्यकर्म करिष्ये'** ऐसे संकल्प करके पीलीसरसों अथवा लाजा (खील) से इन वैदिकमंत्रों से दिग्रक्षण करें– **'रक्षोहणो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वलगहनोऽवनयामि वैष्णवान्यवोऽअसि यवयास्मद्द्वेषो यवयाराती रक्षोहणो वलगहनोऽअवसृणामि वैष्णवान्र क्षोहणो वलगहनोऽअभिजुहोमि वैष्णवान्रक्षोहणौ वलग हनावुपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी रक्षोहणौ वलगहनौ परिसृणामि वैष्णवी रक्षोहणौ वलगहनौ वैष्णवी बृहन्नसि बृहद्ग्रावा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद'।**

'अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता विघ्नकारकाः।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूताद्याः सर्वे ये भूमिभारकाः।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे'।।

'ॐ अन्तरिक्षꣳअन्तरिक्षों त्वरिता अरातयः ॐ हुं फट् स्वाहा'। यजमान के हाथ पर रक्षाबन्धन कर तिलक लगाकर यथाविधि पंचगव्य को निम्न प्रकार से तैयार करें। पंचगव्यसामग्री– (विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार)

'गोमूत्रं भागतश्चार्धं शकृत्क्षीरस्य च त्रयम्।
द्वयं दध्नो घृतस्यैकमेकश्च कुशवारिजः।।'

अर्थात् जितनी मात्रा कुशा से पवित्र किया गया जल लेंगे उतना ही घी, उसका दो गुना दही, उसका तीन गुना दूध, उसकी आधी मात्रा गोबर और आधी मात्रा ही गोमूत्र को अलग-अलग ग्रहण करें। तत्पश्चात् शुद्ध व पवित्रीकृत देश में अष्टदल पद्म लिखकर उसके ऊपर चावल से भरे एक बड़े बर्तन को स्थापित

करें, उस चावल पर क्रमशः पूर्व दिशा में गोमूत्र, दक्षिण में गोमय, पश्चिम में दूध, उत्तर में दही, मध्य में घी और ईशान में कुशोदक को स्थापित करें। विधिः –(भविष्यपुराण के अनुसार)

पंचगव्यं पवित्रन्तु आहरेत्ताम्रभाजने।
गायत्र्या चैव गोमूत्रं गन्धद्वारेण गोमयं।।
आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्राव्णेति वै दधि।
तेजोऽसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य त्वा कुशोदकम्।।

अर्थात् तांबे के बर्तन में ही पंचगव्य का मिश्रण करना चाहिये। गायत्री मन्त्र से गोमूत्र में, गन्धद्वारा इत्यादि मन्त्र से गोबर में, आप्यायस्व इत्यादि मन्त्र से दूध में, दधिक्राव्णा इत्यादि मन्त्र से दही में, तेजोऽसि शुक्रं इत्यादि मन्त्र से घी में और देवस्य त्वा इत्यादि मन्त्र से जल में उन मन्त्रों के विनियोग पूर्वक देवता का आवाहन करें।

'सविता देवता मूत्रे गोमये वायुदैवतं।
सोमः क्षीरे दध्नि शुक्रः घृते चाग्निरुदाहृतः।
कुशोदकेषु गन्धर्वः क्रमेणैषां तु देवताः।'

अर्थात् गोमूत्र में सविता, गोबर में वायु, दूध में सोम, दही में शुक्र, घी में अग्नि और कुशोदक में गन्धर्व देवता का ध्यान /भावना करे।

(क) गायत्रीमन्त्र से गोमूत्र में सविता का आवाहन करें –

'ॐ अस्य गायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, गायत्री छन्दः, सविता देवता, पंचगव्यनिर्माणकर्मणि विनियोगः। ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। गोमूत्रे सवितारमावाहयामि।

(ख) गन्धद्वारा मन्त्र से गोबर में वायु का आवाहन करें –

'ॐ अस्य गन्धद्वारेति मन्त्रस्य आनन्दकर्दम ऋषिः,

अनुष्टुप्छन्दः, चिक्लीतो देवता, पंचगव्यनिर्माणकर्मणि विनियोगः। ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्। गोमये वायुमावा-हयामि।'

(ग) आप्यायस्व मन्त्र से दूध में सोम का आवाहन करें -

'ॐ अस्य आप्यायस्वेति मन्त्रस्य गौतम ऋषिः, गायत्री छन्दः, सोमो देवता, पंचगव्यनिर्माणकर्मणि विनियोगः। ॐ आप्यायस्व समे तु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे। क्षीरे सोममावाहयामि।'

(घ) दधिक्राव्णा मन्त्र से दही में शुक्रका आवाहन करें -

'ॐ अस्य दधिक्राव्णेति मन्त्रस्य वामदेवो ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, दधिक्रावा देवता, पंचगव्यनिर्माणकर्मणि विनियोगः। ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयूंषि तारिषत्। दधिनि शुक्रमावाहयामि।'

(ङ) तेजोऽसि मन्त्र से घी में अग्नि का आवाहन करें -

'ॐ अस्य तेजोऽसीति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः, गायत्री छन्दः, आज्यं देवता, पंचगव्यनिर्माणकर्मणि विनियोगः। ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि। प्रियन्देवाना मनां धृष्टन्देवयजमनसि। आज्येऽअग्निमावाहयामि।'

(च) देवस्य त्वा मन्त्र से कुशोदक में गन्धर्व का आवाहन करें -

'ॐ अस्य देवस्य त्वेति मन्त्रस्य ऐतरेय ऋषिः, अनुष्टु-प्छन्दः, सविताश्विनौ देवते, पंचगव्यनिर्माण कर्मणि कुशोदकपूरणे विनियोगः। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽ-श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां।। कुशोदके गन्धर्वमावाह-यामि।' यथाशक्ति अथवा कम से कम पंच उपचारों से आवाहित देवताओं का पूजन कर इन्हीं मन्त्रों से एक पात्र में

डालकर 7 दर्भों से निर्मित ब्रह्मकूर्च अथवा पलाश की समिधा से '**मन्थता**' मन्त्र से मथन करें –

'ॐ अस्य मन्थतेति मन्त्रस्य गाधि विश्वामित्र ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, अग्नि देवता, पंचगव्य मथने विनियोगः। ॐ मन्थता नरः कविमद्वयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकम्। यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्तादग्निं नरो जनयता सुशेवम्।'

पंचगव्य से यजमान पर और गृह (घर) में निम्न मन्त्र से प्रोक्षण करें –

'ॐ अस्य एतोन्विन्द्रमिति मन्त्रस्य तृचस्यांगिरस ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, तिरश्ची इन्द्रो देवता, गृहप्रोक्षणे विनियोगः। ॐ एतोन्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना। शुद्धैरुक्थैर्वा वृध्वांसं शुद्ध आशीर्वान्ममत्तु ।1। इन्द्र शुद्धो न आगहि शुद्ध शुद्धाभिरूतीभिः। शुद्धो रयीं निधारय शुद्धो ममद्धि सोम्यः ।2। इन्द्र शुद्धो हि नो रयीं शुद्धो रत्नानि दाशुषे' ।3।

अब प्रादेशकरणान्त कर्म करें –

'ॐ स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यमरिष्टनेमिं महद्भूतं वायसं देवतानाम्। असुघ्नमिन्द्रसखं समत्सुबृहद्यशो नावमि वारुहेम 1। अंहोमुच-मांगिरसं गयं च स्वस्त्यात्रेयं मनसाच तार्क्ष्यम्। प्रयतपाणिशरणं प्रपद्ये स्वस्ति संबाधेष्वभयं नोऽअस्तु ।2।

तत्पश्चात् भूमिपूजन करें। जमीन पर गन्धाक्षतपुष्प रखें –

'ॐ अस्य स्योनेति मन्त्रस्य वराह ऋषिः, गायत्री छन्दः, भूदेवी देवता, भूप्रार्थने विनियोगः। ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा-न्निवेशिनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।'

दाहिने हाथ में जल लेकर बाये हाथ से ढककर –

'ॐ धनुर्धराय विद्महे सर्वसिद्ध्यै च धीमहि। तन्नो धराः प्रचोदयात्।' 12 बार इस मन्त्र के जपपूर्वक जल को अभिमन्त्रित कर जमीन पर प्रोक्षण करे। पृथिवी के आवाहन कर्म हेतु गन्ध

पुष्पाक्षत अर्पण करे –

आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणि।
पृथ्वि त्वं ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता।1।

भूतधात्री रत्नगर्भा विपुला सागराम्बरा।
अस्मिन्यज्ञे महादेवि विघ्नं विध्वंसयाम्बिके।2।

अब '**ॐ भूम्यै नमः**' मन्त्र से पाद्यादि समर्पित करें। तदनन्तर निम्नमन्त्र का पाठ करते हुय गन्धाक्षतपुष्पादि से शेष पूजा करे –

'ॐ लं पृथिव्यै नमः।

विष्णुपत्नीं महीं देवीं माधवीं माधवप्रियां।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्।1।

विष्णुशक्ति समोपेते स्वर्णवर्णे महीतले।
अनेकरत्नसंभूते भूमिदेवि नमोऽस्तु ते।2।

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।3।

पुनः प्रार्थना पूर्वक अर्घ्य दें –

ॐ उद्धृतासि वराहेण विष्णुना शतबाहुना।
दंष्ट्राग्रे लीलया देवि यज्ञार्थे त्वां वृणोम्यहम्।1।

ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्देन श्रवणेन च।2।

यमेन पूजिता देवि धर्मवृद्धिजिगीषया।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता।3।

गृहाणार्घ्यं च मे देवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे।4।

कीलबन्धन करे –

तत्पश्चात् चारों दिशाओं में पीपल/गूलर/पलाश के एक बित्ता (12

अंगुल) लम्बे 10 कीलों को '**ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्**' इस मन्त्र के 108 बार जपके द्वारा अभिमन्त्रित कर निम्न मन्त्रों का आवृत्ति पूर्वक पाठ करते हुये बांध दें।

'ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः।
विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु।1।
मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः।
अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे।2।

पुनः '**ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्**' मन्त्र से प्रत्येक कील का पंचोपचार पूजन करके उनमें इन्द्र आदि लोकपालों का आवाहन कर पंचोपचार पूजन करें। गृह रक्षार्थ मौलीसूत्र अथवा मूंज आदि से निर्मित रस्सी से पूरे भवन को प्रदक्षिणा के क्रम से बांधें। पीली सरसों को बाये हाथ में रखकर दाहिने हाथ से ढक कर निम्न वैदिक और स्मार्त मन्त्रों का पाठ करें – '**ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं वलगमुत्किरामि। यम्मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि। यम्मे समानो यमसमानो निच-खानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि। यम्मे सबन्धुर्यमसबन्धु र्निचाानेद-महन्तं वलगमुत्किरामि। यम्मे सजातो यमसजातो निचखानो-त्कृत्याङ्किरोमि।1। ॐ रक्षोहणो वा वलगहनः प्रोक्षामि। वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनो वनयामि। वैष्णवान्रक्षोहणो वलगहनो वस्तृणामि। वैष्णवान्रक्षोहणौ वां वलगहनाऽउपदधामि। वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि। वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थ।2। ॐ रक्षसाम्भागोसि निरस्तꣳरक्षऽइदमहꣳरक्षोभि तिष्ठामीदमहꣳवबाध इदमहꣳरक्षो धमन्तमोनयामि।3। ॐ रक्षोहा विश्वचर्षणिरभियोनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्।4।**'
तथा

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।1।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।2।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।3।
भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानाद्व्रजन्त्वन्यत्र भो स्वीकरोमि भुवं त्विमाम्।4।
भूतानि राक्षसा वापि अत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु शान्तिकं तु करोम्यहम्।5।'

दसों दिशाओं में बिखेरते हुये कहे -

'देवा आयान्तु, यातुधाना अपयान्तु, विष्णो देवयजनं रक्षस्व।'

पूर्व में तैयार किये गये पंचगव्य को प्रणव से पुनः आलोडन कर निम्न वारुणमन्त्रों से कर्मभूमि पर प्रोक्षण करें -

**'ॐ हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकायासुजातः कश्यपो यास्विन्द्रः।
अग्निं या गर्भं दधिरे विरूपास्तान आपः शꣳस्योना भवन्तु।1।
ॐ यासाꣳराजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृत अवपश्यं जनानाम्।
मधुश्चतुः शुचयो याः पावकास्तान आपः शꣳ स्योना भवन्तु।2।
ॐ यासां देवादि विकृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।
याः पृथिवीं पयसोंदन्ति शुक्रास्तान आपः शꣳस्योना भवन्तु।3।
ॐ शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तनूवोपस्पृशत त्वं च मे।
सर्वाꣳअग्नी ꣳरप्सुषदो हुवे वो मयि वर्चो बलमोजो निधत्त।4।**

तत्पश्चात् रक्षोघ्नपूजन व हवन करें।

4. अथ तृतीयदिनकर्म (गृहप्रवेशदिनकर्म)

अथ रक्षोघ्न पूजन–हवन विधिः –

घर के आग्नेय कोण में (यथा संभव) स्थण्डिल अथवा कुण्ड निर्माण कर यजमान स्वयं आचमन कर प्राणायाम करके देशकाल का कथन कर संकल्प करें –

'अस्मिन् गृहनिर्माणे मया मदाज्ञया मदनुमत्या वा मृदाहरणपाषाण खण्डनदारुच्छेदनादिदोषपरिहारार्थं दुष्टरक्षोयक्ष भूतप्रेतपिशाचा–दीनामुच्चाटनार्थं रक्षोघ्नपूजाहोमबलिदानं च करिष्ये' तदनन्तर स्वस्त्ययन मन्त्र का पाठ करें (ऋग्वेदीय स्वस्त्ययनमन्त्राः)

'ॐ स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनवर्णः।
स्वास्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावा पृथिवी सुचेतुना ।1।
स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।2।
विश्वेदेवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्ती।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ।3।

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ।4।
स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्या चन्द्रमसाविव।
पुनर्ददता घ्नता जानता संगमेमहि ।5।

(यजुर्वेदीय स्वस्तिमन्त्राः–)

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वास्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।1।

(इसे तीन बार पाठ करें)।

4.1) **कलश स्थापना** करें ।

कलश के आधारभूत अष्टदल कमल को स्पर्श कर इस मन्त्र का पाठ करें– **'ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्व धा या विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हिंसीः।।'**

अगले मन्त्र का पाठ करते हुये थोड़े धान्य को कमल पर डालें-

'ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसिति मायुषेधान्देवो वः। सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनाम्पयोसि।।'

उस पर तांबे के कलश को स्थापित करें-

'ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विदं वः पुनरूर्ज्जानि वर्तस्वसानः। सहस्रं धुक्ष्वोरुधारापयस्वतीः पुनर्मा विशताद्रयिः।।'

अब कलश को जल से भरें-

'ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य-ऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुण स्यऽऋतसदन-मासीद।' तत्पश्चात् उसमें गन्ध को समर्पित करें-

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

उसमें सर्वौषधी को डालें-

ॐ याऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।
मनैनुवभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।

तदनन्तर दूर्वा डालें-

'ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।'

अब आम के पांच पत्तों को उसमें रखें -

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।'

इसके बाद सप्त मृत्तिका को उसमें डालें-

'ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी।
यच्छानः शर्म स प्रथा।।'

तत्पश्चात् पूगीफल (सुपारी) को डालें-

'याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वꣳहसः।।'

उसके बाद पंच रत्नों को डालें-

'ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे।।'

तदनन्तर कलश में दक्षिणा डालें-

'ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।'

पंच पल्लवों से कलश के अन्दर डाली गयी सामग्री को अच्छी तरह से घुमायें और कलश के गले में मौली को बांधें अथवा लाल वस्त्र से कलश को लपेटें-

'ॐ सुजातो ज्येतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपं संव्ययस्व विभावसो।।'

अब पत्तों को चारों दिशाओं में फैलाकर उस पर पूर्णपात्र रखें-

'ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेवविक्रीणावहाऽइषमूर्जं शतक्रतो।।'

इस प्रकार स्थापित कलश को प्रतिष्ठित करें-

'मनो जूतिर्जुषतामज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु। विश्वेदेवास इहमाद यन्तामों3 प्रतिष्ठ।।

तत्पश्चात् वरुणदेवता का आवाहन करें-

'ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशं समानऽआयुः प्रमाषीः।।
ॐ भूर्भुवःस्वः वरुण इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

अब निम्न मन्त्र से षोडशोपचार पूजन करें-

'ॐ अपांपतिवरुणाय नमः।' उसके बाद कलश को हाथ से ढ़ककर निम्न मन्त्र से अभिमन्त्रित करें-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्र समाश्रिताः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपवसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।
सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदानदाः।
सर्वेऽत्र प्रतितिष्ठन्तु मम कल्याणकारकाः।।

4.2) अब **रक्षोघ्न का ध्यान** करें -

'त्रिशूलं परशुं चैव कपालं डमरुं तथा।
बिभ्राणमुग्रवपुषं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरं।1।
दंष्ट्राकरालवदनं भ्रुकुटि कुटिलाननम्।
वडवाग्निसमाकारं दहन्तं भुवनत्रयं।2।
भूतप्रेतपिशाचादीन्भक्षयन्तं महाप्रभुम्।
एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं रक्षोहाग्निं समाहितः।3।

आवाहन करे -

'ॐ रक्षोहणं वाजिनमाजिघर्मि मित्रं प्रतिष्ठ मुपयामि शर्म। शिशानोऽअग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा सरिषः पातु नक्तम्।1।

तदनन्तर षोडशोपचारों से पूजन करें। तत्पश्चात् विधिपूर्वक अग्नि स्थापना करें।

5. अग्निप्रकरणम्

चतुरस्र कुण्ड में स्थण्डिल पर अष्टदल के अन्दर सप्तजिह्वा को बनाकर हवनकर्ता आसन की कुशाओं के अग्रभाग को पूर्व या उत्तर की ओर करके बिछाकर उस पर बैठें और आचमन, प्राणायाम आदि सामान्य कर्म करके संकल्प करें–
"ॐ विष्णु.. .वास्तुशान्तिकर्माङ्गभूतरक्षोघ्नहोमांगभूतया पंचभू संस्कारान् करिष्ये'। भूशोधन करके 5 भूसंस्कार करें –

भूशोधनम्: –

1. **'भूरसीति भूमिशोधनम्'** अर्थात् भूरसि इत्यादि मन्त्र से हवनकुण्ड अथवा स्थण्डिल का पंचगव्य से प्रोक्षण कर भूमि शुद्धि की भावना करे –
   'ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीम्मा हिꣳसीः।1।'
   हस्तप्रक्षालन करके
2. **'अश्मा चेति मृत्तिका स्थापनम्'** अर्थात् अश्मा च इत्यादि मन्त्र से हवनकुण्ड अथवा स्थण्डिल में पवित्र नदी की थोड़ी मृत्तिका डाले –
   'ॐ अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यञ्च मे यश्च मे श्यामञ्च मे लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।',
3. **'एष स्तोमेति दर्भं गृह्णाति'** अर्थात् एष स्तोम इत्यादि मंत्र से दर्भ को ग्रहण करे –
   'ॐ एष स्तोमो मरुतऽ इयङ्गो र्मान्दार्यस्य माम्नस्य कारोः। एषामासीदृतन्त्वेवयां विद्या भेषं वृजनशीर दानुम्।'

5.1) पंचभूसंस्काराः

पांच भूसंस्कार इस प्रकार है –

1. **'यद्देवेति दर्भैः परिसमूहनम'** अर्थात् यद्देव इत्यादि मन्त्र से परिसमूहन संस्कार करे– **'यद्देवा देव हेडनन्देवा सश्च**

कृमवयम्। अग्निर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः।',
यदनि '<u>परिसमुह्य</u>' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें-

'धृत्वाङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां मूलैः साग्रैः कुशत्रयम्।
तदग्रैस्तस्य रजसां पूर्वस्यामपसर्पणम्।'

अर्थात् अंगुष्ठ और कनिष्ठिका से अग्र सहित तीन कुशा को लेकर, उनके अग्र से थोड़ी धूल (मिट्टी) निकालकर पूर्व दिशा में फेंकें।

2. **'मानस्तोकेत्युपलेपनम्'** अर्थात् मानस्तोक इत्यादि मन्त्र से गोबर से लीपे -

'ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः।
मानो वीरान्रुद्रभाविनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।'

यानि '<u>उपलिप्य</u>' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें - गोमय से हवनकुण्ड को लीपें, गोमय से ही क्यों?

'गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमंगला।
यज्ञार्थे संस्कृता भूमिस्तदर्थमुपलेपनं।'

क्योंकि गोमय में लक्ष्मी का वास है, इसलिये वह पवित्र और सर्वकल्याणकारी है। यज्ञ केलिये भूमि का संस्कार करना होता है और वह संस्कार गोमय से होता है। गोमय का लक्षण -

'रुग्णा वृद्धा प्रसूता च वन्ध्या संधिन्यमेध्यभुक्।
मृतवत्सा च नैतासां ग्राह्यं मूत्रं शकृत्पयः।1।
स्वच्छं तु गोमयं ग्राह्यं स्थाने च पतिते शुचौ।
उपर्य्यधः परित्यज्य आर्द्रजन्तु विवर्जितम्।'

अर्थात् रोगिणी, बूढ़ी, प्रसूता, बांझ, संधिकाल में अपवित्र चीजों को खानेवाली और जिसका बछड़ा मर गया हो ऐसी गाय के दूध, मूत्र और गोबर को पूजा, हवन आदि शुभ कर्मों केलिये ग्रहण नहीं करना चाहिये। शुद्ध स्थान में गिरा हुआ स्वच्छ गोबर

को ग्रहण करें, उसमें भी ध्यान रहे कि गीला न हो और कीड़ों से युक्त न हो एवं ऊपर व नीचे के भाग को छोड़कर लें।

3. **'त्वामिद्धीत्युल्लिख्य'** अर्थात् त्वामिद्धि इत्यादि मन्त्र से उल्लेखन संस्कार करें- **'ॐ त्वामिद्धि ह व हसातो वाजस्य कारवः। त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिन्नरस्त्वाङ्काष्ठा सर्वतः।1। ॐ प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीया सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजूभिर्यजूꣳषि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोनु वाक्याभिः पुरोनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारै र्वषट्कारा आहुति-भिराहुतयो मे कामान्समर्द्धयन्तु भूः स्वाहा।2। ॐ दक्षिणमारोह त्रिष्टुप्त्वाऽअवतु। बृहत्साम पञ्चदशस्तोमो ग्रीष्म ऋतुः क्षत्रन्द्रविणम्प्रतीचिमारोह ।3।ॐ प्रतीचिमारोह जगती त्वाऽअवतु। वैरूपꣳसाम सप्तदशस्तोमो वर्षा ऋतु विड्द्रविणमुदीचीमारोह।4। ॐ उदीचीमारोहानुष्टुप्त्वाऽ-अवतु। वैराजꣳसामैकविꣳश स्स्तोमः शरदृतु फलन्द्रविण-मूर्ध्वमारोह।5।'**

यानि **'<u>त्रिरुल्लिख्य</u>'** ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें- **'खादिरेण हस्तमात्रेण खड्गाकृतिना स्फ्येन उल्लिख्य प्रागग्रा उदक्संस्थाः स्थण्डिल परिमाणास्तिस्रो रेखा कुर्यात्'** अर्थात् खदिर (खैर) के पेड़ का एक हाथ लम्बा खड्ग के आकारवाले स्फ्य नामक अस्त्र को पूर्व की ओर आगे बढाते हुये स्थण्डिल के नाप के अनुसार तीन रेखा बनायें।

4. **सदसस्पतिनोद्धरणं** अर्थात् सदसस्पति इत्यादि मन्त्र से उद्धरण संस्कार करे- **'ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मेधा मयासिषꣳस्वाहा।'**

स्रुवा से थोड़ी मिट्टी को उद्धृत कर अनामिका और अंगूठा से ईशानदिशा में फेंके, तथा –

'ॐ व्रतङ्कृणु व्रतङ्कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पति-र्यज्ञीयः दैवीं धियम्मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञ वाहसꣳसुतीर्थानोऽअसद्वशे। ये देवा मनो जाता मनो युजो दक्षक्रतवस्ते नोऽअवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा।।'

यानि '<u>**उद्धृत्य**</u>' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें -

'अनामिकांगुष्ठाभ्यां यथोल्लिखिताभ्यो लेखाभ्यः पांसूनुद्धृत्य' अर्थात् अनामिका और अंगूठे से अभी बनायी गयी रेखाओं के बीच में से थोड़ी धूल (मिट्टी) को निकालें।

5. **'शन्नो देवेत्यभ्युक्षणम्'** अर्थात् शन्नो इत्यादि मंत्र से अभ्युक्षण संस्कार करे-

'शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंय्योरभिस्रवन्तु नः।।"

यानि '<u>**अभ्युक्ष्य**</u>' ऐसा बोलकर इस विधि का पालन करें-

'मणिकाद्भिरभ्युक्ष्याभिषिच्य' यानि मणिका युक्त जल से अभ्युक्षण और अभिषेक करें।' क्योंकि कहा है -

आपो देव गणाः सर्वे आपः पितृगणाः स्मृताः।
तेनैवाभ्युक्षणं प्रोक्तमृषिभिर्वेदवादिभिः।1।
उत्तानेन तु हस्तेन कर्त्तव्यं प्रोक्षणं बुधैः।
अवाचीनेन हस्तेन कर्त्तव्यं तदवेक्षणम्।2।
मुष्टिकृतेन हस्तेन चाभ्युक्षणमुदाहृतम्।3।

अर्थात् देवगण जल ही हैं, पितृगण जल ही हैं, इसलिये जल से ही अभ्युक्षण और अभिषेक करना चाहिये ऐसे वेदवादी ऋषियों ने कहा है। किस कर्म में जल का प्रयोग कैसे करें? बुद्धिमान प्रोक्षण कर्म को सदा ऊंचे हाथ से करें, नीचे की ओर हाथ करके जल का अवेक्षण करें और अभ्युक्षण कर्म केलिये हाथ में जल लेकर मुट्ठी बांधके जल को हवन कुण्ड में डालें। इस प्रकार पांच भूसंस्कारों को करके स्वस्ति वाचन करे। तत्पश्चात् अग्नि को उत्पन्न करें।

5.2) अग्नि को उत्पन्न करने अथवा लाने की विधि: -

कर्मप्रयोगरत्न में कहा है कि -

'उत्तमोऽरणिजन्योऽग्निर्मध्यमः सूर्यकान्तजः।
उत्तमःश्रोत्रियागान्मध्यमः स्वगृहादिजः।'

अर्थात् विभिन्न साधनों से उत्पन्न की जानेवाली अग्नियों में से अरणिमन्थन से उत्पन्न अग्नि श्रेष्ठ है और सूर्यकान्तमणि (अथवा लेन्स) से उत्पन्न अग्नि मध्यम है, शेष निकृष्ट हैं। यदि अग्नि को रसोई आदि अन्यस्थान से यज्ञकुण्ड में लाना है तो श्रोत्रिय के घर की हो तो श्रेष्ठ और अपने घर की हो तो मध्यम, शेष निकृष्ट है।

अग्नि लाने में पात्र आदि नियम-

'शुभं पात्रं तु कांस्यं स्यात्तेनाग्निं प्रणयेद्बुधः।
तस्याभावे शरावेण नवेनापि दृढेन च।'

अर्थात् कांस्य का बर्तन श्रेष्ठ है और वह उपलब्ध न हो तो नये व दृढ मिट्टी के बर्तन में ला सकते हैं।

'पात्रेण पिहिते पात्रे वह्निमेवानयेत्ततः।
अस्त्रेणादाय तत्पात्रं वर्मणोद्घाटयेत्तु तं।।
अस्त्रमन्त्रेण नैऋत्ये क्रव्यादांशं ततस्त्यजेत्।
मूलेन पुरतो धृत्वा संस्कारांश्च ततश्चरेत्।'

अर्थात् कभी भी अग्नि को खुला न लायें अपितु दूसरे पात्र से ढ़ककर लायें। अस्त्रमन्त्र से लायें और यज्ञमण्डप में लाने के बाद वर्ममन्त्र से उसे खोलें। अस्त्रमन्त्र से ही क्रव्यादांश के रूप में थोड़े अंगारे को नैऋत्य दिशा में फेंकें तत्पश्चात् अपने सामने रखी हुयी अग्नि की पूजा करके संस्कारों को करें।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण में अग्नि की पूजा के विषय में कहा है कि-

'मध्येऽपि गन्धपुष्पादीन्दद्यादग्नेर्न संशयः।
बहिर्नैवेद्यमात्रन्तु दातव्यमिति निश्चयः।'

पंचोपचार पूजा में जो गन्ध, पुष्प आदि अर्पण करते हैं उन्हें अग्नि के मध्य में ही डालें किन्तु केवल नैवेद्य को बाहर रखके अर्पण करें।

5.3) अब **कुशकण्डिका** कर्म करें–

'अग्निमुपसमाधाय' ऐसा बोलकर कर्म के साधनभूत लौकिक अथवा स्मार्त अथवा श्रौत अग्नि को अपने सामने रखकर अग्नि की सात जिह्वाओं के नाम बोलें – **'याभिर्हव्यं समश्नाति हुतं सम्यग् द्विजोत्तमैः। काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता चैव सुधूम्रवर्णा।1। स्फुलिंगिनी विश्वरुचिस्तथा च चलायमाना इति सप्त जिह्वा। एताश्चोक्ता विशेषेण ज्ञातव्या ब्राह्मणेन तु।2। आहूय चैव होतव्यो यो यत्र विहितो विधिः। अविदित्वा तु यो ह्यग्निं होमयेदविचक्षणः।3। न हुतं न च संस्कारो न तु यज्ञफलं भवेत्।'**

ग्रहहोम में भी हवन करते वक्त ध्यान देने योग्य बात यह है कि ग्रह के अनुसार अग्नि के नाम अलग–अलग होने से जिस ग्रह को उद्देश्य कर आहुति देना है उसकी अग्नि का नाम स्मरण कर आहुति देनी चाहिये। उनके नाम स्कन्दपुराण में इस प्रकार बताये है–

'आदित्ये कपिलो नाम पिंगलः सोम उच्यते।
धूमकेतुस्तथा भौमे जाठरोऽग्निर्बुधे स्मृतः।1।
गुरौ चैव शिखी नाम शुक्रे भवति हाटकः।
शनैश्चरे महातेजा राहुकेत्वोर्हुताशनः।2।'

अर्थात् सूर्य की आहुति को कपिल नाम की अग्नि में डालना है यानि सामने में विद्यमान अग्नि में भावना करें कि 'यह कपिल नाम की अग्नि है'। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के विषय में भी भावना करें। चन्द्र – पिंगल, मंगल – धूमकेतु, बुध – जाठर, गुरु – शिखी, शुक्र – हाटक, शनि – महातेजा, राहु और केतु (दोनों

केलिये) हुताशन। पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं में पूजन करे।
'ॐ पृथिव्याः सधस्थादग्निम्पुरो यमङ्गिरस्वदच्छेमोऽ अग्निम्पुरीष्यमङ्गिरस्वद्भरिष्यामः।' - पूर्वे,
'ॐ अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सन्नमतामदो वायुश्चान्तरिक्षश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदऽआदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदऽआपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सन्नमदामदः सप्तसꣳसदोऽष्टमीभूत साधनी सकामाँ।' - दक्षिणे,
'ॐ वायो ये ते सहस्रिणोरथासस्तेभिरागाहि। नियुत्वान्त्सोम पीतसे।' - पश्चिमे,
'ॐ सोमो धेनुꣳसोमोऽर्वन्तमासुꣳ सोमो वीरङ्कर्मण्यन्ददाति। सादन्यं वितथꣳसभेयम्पितृ श्रवणं ये आददा समस्मै।' - उत्तरे,
'ॐ अग्निन्दूतन्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवा2आसदयादिह।' - आग्नेये,
'ॐ कयानश्चित्रऽआभुव दूती सदा वृधः सखा। कया शचिअष्टया वृता।' - नैर्ऋत्ये,
'ॐ वायुरनिलममृतमथे दम्भस्मान्तꣳशरीरम्। ॐ क्रतो3 स्मर क्लिवे3 स्मर कृतꣳस्मर।' - वायव्ये,
'ॐ ईशावास्यमिदꣳसर्वं यत्किञ्च जगत्याञ्जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।' - ईशान्ये।
अब मध्य में तीन मन्त्रों से पूजन करे -
'ॐ सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाऽअजस्रम्। तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्स म्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः।1। ॐ प्रजापते नत्त्वदेतान्न्यन्न्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयꣳस्याम पतयोरयीणाम्।2। ॐ सदसस्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिम्मेधा मयासिषꣳस्वाहा।3।'
अब लकड़ियों (ईन्धन) का शोधन करे -
'कस्त्वा सत्योमदानामꣳहिष्टोमत्सदन्धसः दृढा चिदारुजे वसु।'

तत्पश्चात् लकड़ियों को अग्नि पर स्थापित करे –

'ॐ त्वामिद्धि हवामहे सा तौ वाजस्य कारवः।
त्वां वृत्रेष्विन्द्रसत्पतिन्नरस्त्वां काष्ठा सर्वतः।'

अब अग्नि को शुद्ध करे –

'ॐ अग्नावग्निश्चरति प्रविष्टाऽऋषीणाम्पुत्रोऽभिशास्ति पावा। स नः स्योनः सुयजा यजे ह देवेभ्यो हव्यꣳसदमप्रयच्छन्स्वाहा।'

अग्नि को ग्रहण (स्वीकार) करे –

'ॐ मयि गृह्णाम्यग्ने अग्निꣳरायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय। मामु देवताः सचन्ताम्।'

5.4) अब अग्नि के गर्भाधान से विवाह पर्यन्त संस्कार करे –

1. गर्भाधानम्ः– **'ॐ गर्भोऽअस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्। गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्ने गर्भोऽअपामसि।'**
2. पुंसवनम्ः– **'ॐ विवस्वान्नादित्यैष ते सोमपीथ स्तस्मिन्मत्स्व श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायते विन्दतेवस्वधा विश्वा हारपऽएधते गृहे।'**
3. सीमन्तोन्नयनम्ः– **'ॐ अजीजनो हि पवमानसूर्य विधारेशक्मना पयः। गोजीरयारꣳहमानः पुरन्ध्या।'**
4. जातकर्मः– **'ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति। एवायन्दशमास्यो अस्रज्जरा-युणा सह।'**
5. नामकरणम्ः– **'यदापि पेषमातरम्पुत्रः प्रमुदितौधयन्। एतत्त-दग्नेऽअनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया। सम्पृचस्थ सम्या भद्रेण पृङ्क्तो विपृचस्थविमा पाप्मना पृङ्क्त।'**
6. निष्क्रमणम्ः– **'ॐ पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्चदिशऽ उदजयत्ता-ऽउज्जेषꣳसविता षडक्षरेण षड्तूनुदजयत्ता नुज्जेषम्बृह-स्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुज्जेषाम्मित्रो नवाक्षरेण।'**

7. अन्नप्राशनम्:- 'ॐ अन्नपतेऽअन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे

8. चूडाकरणम्:- 'ॐ अग्नऽऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि।'

9. कर्णवेधः :- 'ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायुः।'

10. उपनयनम्:- 'ॐ अग्निरेकाक्षरेणप्राणमुदजयन्तामुज्जेषमश्विनो द्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयन्तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रीँल्लोकानुदजयन्तानुज्जेषꣳसोम श्चतुरक्षरेणचतुष्पदः पशूनुज्जेषां पञ्चाक्षरेण।'

11. गायत्रीश्रवणम्:- 'ॐ भूर्भुवःस्वः वैश्वानराय विद्महे सप्तजिह्वाय धीमहि। तन्नोऽअग्निः प्रचोदयात्।'

12. समावर्तनम्:- 'ॐ व्रतङ्कृणु व्रतङ्कृणुताग्नि र्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञीयः दैवीं धियम्मनामहे सुमृडी कामभिष्टये वर्चोधां यज्ञ वाहसꣳसुतीर्थानोऽअसद्वशे। ये देवा मनो जाता मनो युजो दक्षक्रतवस्ते नोऽअवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा।'

13. गोदानकर्मः- 'ॐ गावऽउपावतावतम्मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया।'

14. विवाहकर्मः-'ॐ भग एव भगवाँ2। अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तत्त्वा भग सर्व ईज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह।'

तत्पश्चात् अग्नि को हवनकुण्ड में/स्थण्डिल पर ले जाये -

'ॐ ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रङ्घर्म मीमहे। उपयामगृहीतोऽअसि वैश्वानराय त्वैषते योनिर्वैश्वानराय त्वा। ॐ वैश्वानरो न ऊतय आ प्रयातु परवतः। अग्निरुक्थेन वाहसा।

उपयाम गृहीतोऽअसि वैश्वानराय त्वैषते योनिर्वैश्वानराय त्वा।'
तत्पश्चात् अग्नि को हवनकुण्ड में/स्थण्डिल पर स्थापित करें- **'ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाᳬरेताᳬसि जिन्वति।'**
शोधित समिधाओं से अग्नि को प्रदीप्त यानि तेज करें - **'ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्ज्यर्वन्। पृथुर्भवसुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहनः।'**

अब अग्नि से प्रार्थना करे -
'ॐ आवाहये पुरुषम्महान्तं सुरासुरैर्वन्दितपादपद्मम्। ब्रह्मादयो यस्य मुखे विशन्ति प्रविश्वकुण्डे सुरलोकनाथ।

5.5) **अग्नि के** (अंगभूतकर्म सहित) **शेष संस्कार** :-

पारस्कर सूत्रों के आधार पर यहां अंगभूत कर्म और शेष संस्कारों का विधान बताया जा रहा है।

1. **'दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य'** इस सूत्र के अनुसार अग्नि के दक्षिण दिशा में यज्ञीय लकड़ी से बनी हुयी पीठ के ऊपर कुशा का आसन बिछाये -
'ॐ हिरण्यगर्भ समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीन्द्या मुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।' और उस पर जिस कर्मज्ञाता चतुर्वेदी श्रोत्रिय ब्राह्मण को ब्रह्मा नामक ऋत्विक् के कर्म केलिये वरण किया था उन्हें बिठायें और पंचोपचारपूजा करें।
'ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः। शूरऽइषव्योतिव्याधीमाहारथो जायतान्दोग्ध्रीर्धेनु वोढा नड्वा-नाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषानिष्णुरथेष्ठाः सभे ये युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे नः कल्पताम्। (ऋग्वेदीय)'
ब्रह्मासन के समीप में यजमान का आसन बिछाये -
'ॐ अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयताञ्चक्षुर्देवानामुत मर्त्यानाम्। इत

क्षमाण भृगुभिः सजोषा स्वर्प्यन्तु यजमाना स्वस्ति।' अग्नि के उत्तरदिशा में प्रणीतापात्र केलिये प्रागग्रकुशाओं का आसन बिछाये और प्रणीता आसन व अग्नि के बीच में प्रोक्षणी पात्र केलिये प्रागग्रकुशाओं का आसन बिछाये –

'ॐ परीत्यभूतानि परीत्यलोकान् परीत्यसर्वाः प्रदिशो दिशश्च। उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्वमनात्क्मानमभि संविवेश।'

2. **'प्रणीय'** (अप इति शेषः) अर्थात् अग्नि के उत्तर दिशा में पूर्वाग्र कुशाओं के दो आसन बिछायें। बायें हाथ में यज्ञीय लकड़ी से बना हुआ 12 अंगुल लम्बा 4 अंगुल चौड़ा और 4 अंगुल गहरा चमस पात्र रखकर उसमें दाहिने हाथ से उद्धृतपात्रस्थ जल को भरें। जल भरने का मन्त्र –

'ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमद्ध्यम ७श्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम ।1।

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरूश७समान आयुः प्रमोषीः ।2।'

बायें हाथ से दाहिने हाथ में ग्रहण करें – **'ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीना-म्मरुतो यन्त्वग्रयम्।'** उस चमस पात्र को पहले पश्चिम आसन पर रखकर आलभन करने के बाद पूर्व आसन पर स्थापित करें।,

3. **'परिस्तीर्य'** अर्थात् एक मुष्टि पूर्वाग्र सोलह बर्हि लेकर ईशानादि से उत्तर तक अग्नि के चारों तरफ (प्रत्येक दिशा में 4 बर्हि) यज्ञकुण्ड की मेखला के नीचे बिछायें। परिस्तरण कर्म इस मन्त्र से करे–

'ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञीयाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोदविष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।'

4. **'अर्थवदासाद्य'** अर्थात् जितनी सामग्री है उसी के अनुसार अग्नि के उत्तर अथवा पश्चिम दिशा में (प्रयोग करने में अपनी अनुकूलता

को देखकर) पात्र आसादान करें। तत्र क्रमः "**पवित्र छेदनार्थं त्रयो दर्भाः। साग्रे अनन्तगर्भे प्रवित्रे, द्वे प्रोक्षणी पात्रे, आज्यं, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, त्रिप्रक्षालिता तण्डुला, सम्मार्जन कुशाः पञ्च, उपयमन कुशाः सप्त, समिधस्तिस्रः, स्रुवः, स्रुक्, पूर्णपात्रं, अन्यान्युपकल्पनीयानि अर्कादिसमित्तिलादि हवनीयद्रव्याणि निधाय पवित्रे कुर्यात्। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय उपरि प्रादेशमात्रं अवशेषयित्वा दक्षिणकरेण द्वयोः पवित्रयोः मूलेन द्वौ कुशो प्रदक्षिणीकृत्य वामकरेण सर्वाणि पवित्राणि युगपद्धृत्वा दक्षिणकरांगुष्ठाङ्गुलि पर्वाभ्यां उपरि प्रादेशमात्रं छित्वा त्रीण्युत्तरतः क्षिपेत् द्वे ग्राह्ये।**" अर्थात् पवित्र छेदन केलिये 3 दर्भ, साग्र अनन्त गर्भ पवित्र, दो प्रोक्षणी पात्र, घी, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, तीन बार प्रक्षालित चावल, 5 सम्मार्जन कुशा, 7 उपयमन कुशा, 3 समिधा, स्रुवा, स्रुक्, पूर्णपात्र, अन्य उपकल्पित अर्कादि समिधा सहित तिल आदि हवनीय द्रव्य को रखकर पवित्री निर्माण करें। दो के ऊपर 3 को रखकर ऊपरी प्रादेशमात्र को शेष करके दाहिने हाथ से दो पवित्रों के मूल से दो कुशाओं की प्रदक्षिणा लगाकर बायें हाथ से सभी को एक साथ धारण कर दाहिने हाथ के अंगुष्ठ व अंगुलि से ऊपर के प्रादेशमात्र का छेदन कर तीन को उत्तर दिशा में फेंके और दो को ग्रहण करें।

तत्पश्चात् प्रणीता आदि पात्रों को इस मन्त्र से ढके –

'ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्द मानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेहवो द्ध्युरूशꣳसमान आयुः प्रमोषीः।',

5. '**पवित्रे कृत्वा**' इस सूत्र के अनुसार पवित्री का निर्माण करना है जिसका लक्षण है –

'अनन्तर्गर्भिणं साग्रं कौशं द्विदलमेव च।
प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित्।'

अर्थात् अन्तर्गर्भित न हो ऐसे अग्र सहित दोदलवाले प्रादेशमात्र लम्बे कुशा से पवित्र को बनाना चाहिये। कुशाओं को प्रादेशमात्र काटने केलिये इस मन्त्र का प्रयोग किया जाता है –

'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारु कमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।1।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पति वेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।2।'

कुशाओं से पवित्री को बनाते वक्त इस मन्त्र का पाठ करे –

'ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव।
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।1।
देवीरापो अग्रेगुवो अग्रपुवो अग्र इममद्य।
यज्ञन्नयताग्रे यज्ञपतिं सुधातुम्यज्ञपतिन्देव युवम्।

6. प्रोक्षणीपात्र–

'वारणं पाणिपात्रं च द्वादशांगुलविस्तृतम्।
पद्मपत्राकृतिर्वापि प्रोक्षणीपात्रमीरितम्।'

अर्थात् यज्ञीय लकड़ी से निर्मित 12 अंगुलवाला पाणिपात्र अथवा कमल के पत्ते के आकार में बनाये हुये पात्र को प्रोक्षणीपात्र कहा गया है। उसे इस मन्त्र से ग्रहण करें –

'ॐ इदम्मे वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।'

अब दो पवित्र को प्रोक्षणीपात्र में डाले –

'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नये जुष्टं गृह्णामि।'

7. आज्यस्थाली–

'आज्यस्थाली कांस्यमयी यद्वा ताम्रमयी तथा।
प्रादेशमात्रदीर्घा सा ग्रहीतव्याऽव्रणा शुभा।'

अर्थात् प्रादेशमात्र नाप के कांसे की अथवा तांबे की

आज्यस्थाली ग्रहण करनी चाहिये और वह चोट, छेद, दाग आदि से रहित होनी चाहिये।

'ॐ घृतवती भुवनानाम भिश्रियोर्वी पृथ्वीमदुधुघे सुपेशसा। द्यावापृथिवी वरुणस्य घर्मणा विष्वग्भिस्तेऽजरे भूरि रेतसा।'

8. चरुस्थाली–

'दृढा प्रादेशमात्रोर्ध्वं तिर्यङ्नातिबृहन्मुखी।
मृन्मयौदुम्बरी वापि चरुस्थाली प्रशस्यते।'

अर्थात् मजबूत व प्रादेशमात्र ऊंची मिट्टी से बना अथवा गूलर की लकड़ी से बने हुये पात्र को चरुस्थाली के रूप में ग्रहण करना चाहिये और वह टेढा–मेढा न हो व बड़े मुंहवाला भी न हो।

'ॐ अन्नपतेऽअन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्प्रदातारं तारिषऽऊर्जन्नो धेहि। द्विपदे चतुष्पदे ।'

9. स्रुवा का लक्षण–

'खादिरादेः स्रुवः कार्यो हस्तमात्रप्रमाणतः।
अंगुष्ठपर्वखातं तत् त्रिभागं दीर्घपुष्करम्।।'

अर्थात् खैर आदि यज्ञीयवृक्षों की लकड़ी से बना हुआ एक हाथ लम्बा, त्रिकोणात्मक (गोल नहीं) अंगूठे के बराबर गहरा किन्तु उसके पुष्कर लम्बे हों ऐसा स्रुवा ही कर्म में प्रयोग करना चाहिये।

'ॐ स्रुचश्च मे चमसा च मे बायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मे धिषवणे च मे पूतभृच्च मऽआधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मेऽअवभृतश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।'

10. स्रुवसंमार्जनकुशा और उपयमनकुशा–

'स्रुवसंमार्जनार्थाय पंच वाथ त्रयोऽपि वा।
प्रादेशमात्रान्गृह्णीयात्संमार्जकुशसंज्ञकान्।।
उपयमनकुशाः सप्त पंच वाथ त्रयोऽपि वा।'

अर्थात् स्रुवा को साफ करने केलिये संमार्जनकुशा नाम से

प्रादेशमात्र लम्बे पांच अथवा तीन कुशा ग्रहण करें और उपयमनकर्म (स्रुवा पर बांधने केलिये) सात, पांच अथवा तीन कुशा ग्रहण करें। सम्मार्जन कुशा ग्रहण करे –

'ॐ शादन्दद्भिरवकान्दन्तमूलैर्मृदं वैस्तेमदुꣳष्ठाभ्याꣳसरस्वत्याऽअग्रजिह्वायाऽउत्सादमवक्त्रन्दैनतालुवाजꣳ हनुभ्यामपऽआश्येनवृषणमण्डाभ्यामादित्र्याँ। शमश्रूभिः पन्थानम्भूभ्या द्यावापृथिवीवर्तोभ्यां विद्युतङ्कनीनकाभ्या ꣳशुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा पार्याणि पक्ष्माणि पार्या इक्षवः।'

11. उपयमनकुशा ग्रहण करे – **'उपयाम गृहीतोऽस्यन्त र्यच्छ मघवन्पाहि सोमम्। उरुष्य रायऽएषो यजस्व।'**

सम्मार्जनीकुशाओं द्वारा प्रणीतापात्रस्थ जल से स्रुवा का प्रोक्षण करें (कुशा के अग्र से स्रुवा के अग्र का, मध्य से मध्य का और मूल से मूल का शोधन करे) –

'ॐ प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः। उर्वन्तरिक्षमन्वैमि।'

समिधा के वृक्ष–

ब्रह्मपुराण में समिधा के योग्य वृक्षों के बारे में कहा है–

'शमीपलाशन्यग्रोधप्लक्षवैकंकतोद्भाः।1।
अश्वत्थोदुम्बरौ बिल्वश्चन्दनस्सरलस्तथा।
सालश्च देवदारुश्च खदिरश्चैव यज्ञीयाः।2।'

अर्थात् याग में इन वृक्षों की ही लकड़ी प्रयोग करने योग्य हैं– शमी, पलाश, वट, वैकंकती, पीपल, गूलर, बेल, चन्दन, चीड़, साल, देवदारु और खैर।

समिधा का लक्षण–

'नांगुष्ठादधिका ग्राह्या समित्स्थूलतया क्वचित्।
न वियुक्ता त्वचा चैव न सकीटा न पाटिता।1।

प्रादेशान्नाधिका नोना न तथा स्याद् द्विशाखिका।

न सपर्णा न निर्वीर्या होमेषु च विजानता।2।'

अर्थात् अंगूठे से ज्यादा मोटी न हो, त्वचा रहित न हो, कीड़े युक्त न हो, फटी न हो, दो शाखा युक्त न हो, पत्तों से युक्त न हो, वीर्य रहित न हो और प्रादेशमात्र से न ज्यादा लम्बी हो व न छोटी ही हो, ऐसी समिधा के योग्य पूर्वोक्त पवित्र वृक्षों की टहनियों से बनी समिधा ही हवन/याग में प्रयोग करें।

12. समिधा को ग्रहण करें –

'ॐ समिधग्निन्दुवस्यत घृतैर्वोधयतातिथिम्।

आस्मिन्हव्या जुहोतन।।'

आज्य विचारः –

'उत्तमं गोघृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषीभवं।

अधमं छागलीजातं तस्माद् गव्यं प्रशस्यते।1।'

अर्थात् गौ का घी उत्तम है, भैंस का मध्यम और बकरी का अधम, इसलिये गौ का घी ही हवन, पूजा आदि कार्य केलिये सर्वश्रेष्ठ है।

चरुविचारः –

'हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनु व्रीहयः स्मृताः।

यथोक्तवस्त्वसंपत्तौ ग्राह्यं तदनुकारि यत्।1।

यवानामिव गोधूमा व्रीहीणामिव शालयः।

अभावे व्रीहियवयोर्दध्ना वा पयसापि वा।2।'

अर्थात् हवन के योग्य धान्यों में जौ मुख्य है तत्पश्चात् चावल। यदि ये दोनों उपलब्ध न हो तो इनके सदृश क्षेत्रीय धान्य का प्रयोग करें, जैसे कि जौ के सदृश गेहूं को और चावल के सदृश स्यांवां चावल को माना गया है।

13. आज्यपात्र और चरुपात्र ग्रहण करें -

आज्यस्थाली में आज्य भरे और चरुपात्र में चरु भरे -

'ॐ घृताच्यासि जुहूर्नाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रिय ꣳसदऽआसीद घृताच्यासि प्रभृन्नाम्नासेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद घृताच्यासि ध्रुवाऽसदन्नृतस्ययोनौ ता विष्णो पाहि यज्ञम्पाहि यज्ञपतिम्पाहि मां यजन्तम्।।'

पूर्णपात्र विचार-

'अकृते पूर्णपात्रे च छिद्रयज्ञः प्रजायते।
पूर्णपात्रे च संपूर्णे सर्वसंपूर्णता भवेत्।।'

अर्थात् पूर्णपात्र न हो तो वह यज्ञ छिद्र युक्त होगा यानि यजमान केलिये हानिकारक होगा। इसके विपरीत यदि पूर्णपात्र संपूर्ण हो तो सब कुछ संपूर्ण होगा यानि यजमान की सकल कामनायें पूर्ण होंगी।

14. पूर्णपात्र ग्रहण करें- **'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नीषोमोभ्यान्त्वा जुष्टन्नियुनज्मि।1। अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यो न त्वा मातामन्यतामनुपितानुभ्राता सगर्भ्यो सखा सयूथ्यः अग्नीषोमोभ्यान्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि।2।'**

15. **'प्रोक्षणीः संस्कृत्य'**

अर्थात् प्रोक्षणीपात्र को प्रणीतापात्र के उत्तर में स्थापित कर उसमें दूसरे पात्र से अथवा अपने हाथ से प्रणीतापात्र के जल से सींच के पवित्रों से उत्पवन करके उन पवित्रों को प्रोक्षणी पात्र में डालें। दाहिने हाथ से प्रोक्षणीपात्र को उठाकर बायें हाथ में रखकर उसके जल को उछालकर प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षण करें।

16. **'अर्थवत्प्रोक्ष्य'**

अर्थात् आज्यस्थाली से पूर्णपात्र पर्यन्त सकल पात्रों पर जिस क्रम से उन्हें रखा गया था उसी क्रम से प्रोक्षणीपात्र के जल से प्रोक्षण

करके प्रणीतापात्र और अग्नि के बीच में प्रोक्षणीपात्र को रखें।

17. **'निरूप्याज्यम्'**

अर्थात् अग्नि के निकट स्थापित आज्यस्थाली में रखे हुये घी में थोड़ा चरु का प्रक्षेप करें और चरुस्थाली में रखे हुये चरु पर प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षण करें।

18. **'अधिश्रित्य'**

अर्थात् ब्रह्मा ऋत्विक् (उसके अभाव में अध्वर्यु/होता/यजमान स्वयं) घी का अधिश्रयण कर चरु के साथ थोड़ा घी इस मंत्र से अग्नि में डालें।

'शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।1। ॐ अनिशितोऽअसि सपत्नक्षिद्वा जिनिन्त्वा वाजेद्ध्यायै सम्मार्ज्मि।2।'

19. **'पर्यग्नि कुर्यात्'**

अर्थात् जलते हुये अंगारे से घी और चरु पर प्रदक्षिणा कराके यानि घुमाके अर्धश्रित चरु पर भी घुमायें। इससे सम्मार्जन कर प्रतपन करे –

'ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।'

20. **'स्रुवं प्रतप्य संमृज्य'**

अर्थात् दाहिने हाथ से स्रुवा को लेकर अधोमुख (उल्टा करके) अग्नि के पश्चिम भाग में पकड़के तपाकर बायें हाथ में पकड़ लें और उस पर संमार्जनी कुशाओं से स्रुवा का शोधन करें। कैसे? कुशा के अग्रभाग से स्रुवा के मूल से शुरुकर अग्र तक स्पर्श करते हुये जायें तथा कुशा के मूल से स्रुवा के अग्र से शुरुकर मूल तक स्पर्श करते जायें। पुनः स्रुवा को तपाये –

'ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरूशꣳसमान आयुः प्रमोषीः।।'

स्वस्थान में स्थापित करे -

'ॐ तमुत्त्वा द-ध्यङ् ऋषिः पुत्रऽअथर्वणः। वृत्रहणम्पुरन्दरम्।।',

21. **'पुनः प्रतप्य निदध्यात्'**

अर्थात् पूर्ववत् दोबारा तपाकर अपनी दाहिनी दिशा में रखें। आज्यपात्र को अग्नि की प्रदक्षिणा कराके स्वस्थान में रखें -

'ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि। प्रियन्देवानामना-धृष्टन्देवयजनमसि।।' चरुस्थाली को भी अग्नि की प्रदक्षिणा कराके स्वस्थान में रखें -

'ॐ पशुभिः पशूनाप्नोति पुरोडाशैर्हविꣳष्या।
छन्दोभिः सामिधेनी र्याज्याभिर्वषट्कारान्।।'

22. **'आज्यमुद्वास्य'**

अर्थात् आज्यस्थाली को उठाकर चरु की पूर्व दिशा से लाकर अग्नि की उत्तर दिशा में स्थापित करें और चरुस्थाली को उठाकर आज्यस्थाली की पश्चिम दिशा से लाकर आज्यस्थाली के उत्तरदिशा में रखें। आज्य का उत्पवन करें -

'ॐ प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ता-ऽअरातयः। उर्वन्तरिक्षमन्वैमि।।'

23. **'उत्पूय'**

अर्थात् घी के ऊपर पवित्रीकुशाओं (अथवा अपनी हथेली के माध्यम से) फूंक मारें।

तत्पश्चात् आज्यावेक्षण करें -

'ॐ आपवस्व हिरण्यवदस्ववत्सोम वीरवत्।
वाजङ्गोमन्त माभरत्स्वाहा।'

24. '**अवेक्ष्य**'

अर्थात् घी को अच्छी तरह देखे (गृहस्थ हो तो पत्नी को घी देखने को कहे) और उसमें कुछ अन्य द्रव्य दीखें तो निकाले।

25. '**कुशानाधाय**'

आज्य में कुशा को रखे – '**ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।**',

26. '**प्रोक्षणीश्च पूर्ववत्**'

अर्थात् प्रोक्षणी पात्र पर भी पूर्ववत् पवित्री कुशाओं से उत्पवन करें। जलती हुयी कुशा से आज्यपात्र, चरुस्थाली और अग्नि के ऊपर प्रदक्षिणा के क्रम से घुमाकर अग्नि में डाले – '**ॐ धृष्टिरस्यपाग्नेऽअग्निमामादृंहि निष्क्रव्यादꣳसेधा देवयजं वह। ध्रुवमसि पृथिवीदृꣳह ब्रह्मवनित्वा क्षत्रवनि सजात वन्युपद-धामि भ्रातृव्यस्य वधाय।।**',

27. '**उपयमनान्कुशानादाय**'

अर्थात् उपयमनकुशाओं को दाहिने हाथ से लेकर बायीं ओर रखें।

28. '**समिधोऽभ्याधाय**'

अर्थात् बैठे हुये समिधा को घी से युक्त कर अग्नि में डालकर अग्नि को आहुतियां डालने के योग्य तेज करें।

29. '**पर्युक्ष्य जुहुयात्**'

अर्थात् प्रोक्षणीपात्र के पूरे जल को पवित्री धारण किये हुये दाहिने हाथ के चुल्लु में भरकर ईशान दिशा से आरम्भकर उत्तरदिशा तक घुमाते हुये अग्नि के चारों तरफ सींचें। तत्पश्चात् संस्रव को धारण करने केलिये प्रणीतापात्र और अग्नि के बीच में थोड़े जल से

भरे संस्रवपात्र को स्थापित कर सर्वप्रथम गणाधिपति गणेश भगवान को आहुति देकर आघार आदि पांच वारुणक आहुतियां दें। पांच वारुणक आहुतियों के बारे में त्रिकारिका में कहा है कि–

'आघारौ नासिके ज्ञेया आज्यभागौ च चक्षुषी।
वक्त्रश्चोदरकुक्षी च कटी व्याहृतिभिः स्मृता।1।

शिरो हस्तौ च पादौ च पंचवारुणकाः स्मृताः।
प्रजापतिः स्विष्टकृतं श्रोत्रे द्वे परिकीर्तिते।2।'

अर्थात् ऐसी भावना करें कि आप आहुतियों से अग्निदेव के शरीर का निर्माण कर रहे हैं। कैसे? दो आघार आहुतियों से दो नासिका, दो आज्यभाग आहुतियों से दो आंख, तीन व्याहृतियों से मुख, पेट और कुक्षी; पाचं वारुणक आहुतियों से कटि, सिर, हाथ और दो पैर तथा अन्त में प्रजापति देवता की आहुति और स्विष्टकृत् होम से दो कानों के निर्मित होने की भावना करें।

तदनन्तर '**फट्**' मन्त्र से जल से प्रोक्षण कर कुशा से ताडन करे। '**हुम्**' से अवगुण्ठन करे। स्थण्डिल पर क्रमशः पूर्वाग्र तीन रेखा बनायें और उन पर उत्तराग्र क्रमशः मध्य, पश्चिम और पूर्व में तीन रेखा बनायें।

उन रेखाओं पर लेखन क्रम से गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करें –

'ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ यमाय नमः, ॐ सोमाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ इन्द्राय नमः।।'

इसके बाद अपने शरीर में षडंगन्यास करे–

'ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः, ॐ स्वास्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा, ॐउत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्, ॐ धूमव्यापिने कवचाय हुम्, ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ धनुर्धराय अस्त्राय फट्।।'

अब स्थण्डिल पर क्रमशः गन्धाक्षतपुष्प से पूजा करे :–

‘**ॐ सहस्रार्चिषे नमः** – आग्नेय, **ॐ स्वास्तिपूर्णाय नमः** – ईशान, **ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय नमः** – नैर्ऋत्य, **ॐ धूमव्यापिने नमः** – वायव्य, **ॐ सप्तजिह्वाय नमः** – मध्य और **ॐ धनुर्धराय नमः** – सर्वदिशा। स्थण्डिल पर अष्टकोणषट्कोणत्रिकोणात्मक अग्निचक्र की प्रवेशद्वार के रूप में भावना करे और त्रिकोण में अष्टदिक् की भावना कर प्रदक्षिणा के क्रम से पीठशक्तियों की पूजा करे –

‘**ॐ पीतायै नमः, ॐ श्वेतायै नमः, ॐ अरुणायै नमः, ॐ कृष्णायै नमः, ॐ धूम्रायै नमः, ॐ तीव्रायै नमः, ॐ स्फुलिंगिन्यै नमः, ॐ रुचिरायै नमः, ॐ ज्वालिन्यै नमः।**

(पीठ के बीच में–) **ॐ तं तमसे नमः, ॐ रं रजसे नमः, ॐ सं सत्त्वाय नमः, ॐ आं आत्मने नमः, ॐ अं अन्तरात्मने नमः, ॐ पं परमात्मने नमः, ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।**

(त्रिकोण में –) **ॐ ह्रीं वागीश्वरी वागीश्वराभ्यां नमः** (इस मन्त्र से वागीश्वरी और वागीश्वर में उत्पन्न होनेवाली अग्नि के माता–पिता की भावना करते हुये पूजा करें। तत्र विशेषः – उस अग्नि से क्रव्यादांश के रूप में एक अंगारे को अलग कर ‘**फट्**’ मन्त्र से नैर्ऋत्य दिशा में फेंके। अग्नि को ‘**ॐ**’ से निरीक्षण कर ‘**ॐ सुदर्शनायास्त्रराजाय फट्**’ मन्त्र से कुशाओं से अग्नि का पुनः ताडन कर अवगुण्ठन करे। तत्पश्चात् ‘**ॐ कवचाय हुम्**’ मन्त्र से समिधाओं से अग्नि को प्रदीप्त करे। अग्नि का उपस्थान करे–

‘**ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।।**’ और उत्थापन करे – ‘**ॐ उत्तिष्ठ पुरुष हरितपिंगल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा**’। अब ताम्रपात्रस्थ उस अग्नि को ‘**ॐ**’ मन्त्र से स्थण्डिल के ऊपर तीन बार घुमाकर अग्नि को पात्र से स्थण्डिल पर रखे। ‘**चित्पिंगल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञपय स्वाहा**’ से समिधायें डालकर

अग्नि को प्रदीप्त कर ज्वालिनीमुद्रा दर्शाये। तत्श्चात् अग्नि के गर्भाधान से विवाह पर्यन्त संस्कारों की भावना करते हुये अक्षत को अग्नि में निम्न विधि से अर्पण करे

'ॐ नमः अस्याग्नेः गर्भाधानकर्म, पुंसवनकर्म, सीमन्तोन्नयन-कर्म, जातकर्म, रक्षोघ्नानिरिति नाम्ना नामकरणकर्म कल्पयामि नमः। ॐ नमः अस्य रक्षोघ्नाग्नेः अन्नप्राशन कर्म, चौलकर्म, उपनयनकर्म, गोदानकर्म, विवाहकर्म कल्पयामि नमः।'

तदनन्तर जल से प्रणवोच्चारणपूर्वक अग्नि का परिसेचन कर अग्नि के अलंकारार्थ आज्याहुति देके कुशाओं से आस्तरण कर्म करे। परिधियों से परिधान कर वैश्वानराग्नि के विराजमान होने की भावना करे -

'त्रिनयनमरुणाप्तबद्धमौलिं सुशुक्लां,
शुक्रमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम्।
अभिमतवरशक्तिं स्वस्तिकाभीतिहस्तं,
नमस्ते कनकमालालंकृतांसं कृषानुम्।।'

अब 8 कोणों में प्रदक्षिणा क्रम से आज्याहुति दे-

'ॐ जातवेदसे नमः, ॐ सप्तजिह्वाय नमः, ॐ हव्य वाहनाय नमः, ॐ अश्वोदराय नमः, ॐ वैश्वानराय नमः, ॐ कौमार-तेजसे नमः, ॐ विश्वमुखाय नमः, ॐ देवमुखाय नमः।'

पुनः अक्षतों से षट्कोण में षडंगन्यास करे -

'ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः, ॐ स्वास्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा, ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्, ॐ धूमव्यापिने कवचाय हुम्, ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ध नुर्धराय अस्त्राय फट्।।'

पुष्पाक्षत से अग्नि की पूजा करे - **'ॐ रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा।'**

अग्नि की सात जिह्वाओं में आज्याहुति दें-

'ॐ हिरण्यायै नमः हिरण्याया इदं न मम स्वाहा - ईशाने,
ॐ कनकायै नमः कनकाया इदं न मम स्वाहा - पूर्वे,
ॐ रक्तायै नमः रक्ताया इदं न मम स्वाहा -आग्नेये,
ॐ कृष्णायै नमः कृष्णाया इदं न मम स्वाहा - नैऋत्ये,
ॐ सुप्रभायै नमः सुप्रभाया इदं न मम स्वाहा -पश्चिमे,
ॐ अतिरिक्तायै नमः, अतिरिक्ताया इदं न मम स्वाहा - वायव्ये,
ॐ बहुरूपायै नमः बहुरूपाया इदं न मम स्वाहा - मध्ये।

तदनन्तर तीन विशेष आहुति दे-

'ॐ रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा अग्नये इदं न मम, ॐ उत्तिष्ठ पुरुष हरितपिंगल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा अग्नये इदं न मम, ॐ चित्पिंगल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञपय स्वाहा अग्नये इदं न मम।'

5.6) अथ **रक्षोघ्नहोमे प्रधान** आहुतयः -

(द्रव्य विशेष का निर्देश जहां नहीं वहां घी की आहुति दें।)

(3 आहुति घी की दें)- **ॐ गं महागणाधिपतये नमः स्वाहा।,**

(2 आहुति पक्वाहुति दें)-**ॐ विज्योतिषा बृहता भात्यग्निरा-विर्विश्वानि कृणुते महित्वा। प्रादेवीर्माया सहते दुरेवाशिशीते शृंगे रक्षसे विनिक्षे।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम।1। ॐ रक्षोहणं वाजिनमाजिघर्मि मित्रं प्रतिष्ठमुपयामि शर्म। शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा सरिषः पातु नक्तम्।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम।2।,**

(15 आहुति घी की दें)-**ॐ कृणुष्व पाज प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवा इभेन। तृष्वीमनुप्रसितिं द्रूणानोऽअस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न**

मम ।1। ॐ तव भ्रमास आशु या पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः। तपूंष्यग्ने जुह्वा पतंगा न संदितो विसृज विष्वगुल्काः।।– अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।2। ॐ प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितवो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः। यो नो दूरे अघशंसो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरा-दधर्षीत्।।– अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।3। ॐ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्य। मित्रा ओषतात्तिग्महेते। यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्।।– अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।4। ॐ ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृष्णुष्वदैव्यान्यग्ने। अवस्थिरा तनुहि यातुजानां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून्।।– अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।5। ॐ स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत्। विश्वन्यस्मै सुदिनानि रायो द्यूम्नान्यर्यो विदुरोऽभिद्यौत्।।– अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।6। ॐ सेदग्नेऽअस्तु सुभगस्सुदानुर्यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः। पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना साऽअसदिष्टिः।।– अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।7। ॐ अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक्सन्ते वावाता जरतामियं गीः। स्वश्वास्त्वा सुरथामर्जये मास्मे क्षत्राणि धारयेरनु द्यून्।।– अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।8। ॐ इह त्वा भूर्या चरेदुपत्मन्दोषा वस्तर्दीदिवांसमनु द्यून्। क्रीळन्तस्त्वा सुमनसस्सपेमाभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम्।।– अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।9। ॐ यस्त्वा स्वश्वस्सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन। तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस्त आतिथ्यमानुषग्जुजोषत्।।– अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।10। ॐ महो रुजामि बन्धुता वचोभिस्तन्मा

पितुर्गोतमादन्वियाय। त्वं नो अस्य वचसश्चिचक्लिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम।11। ॐ अस्वप्नजस्तरणयस्सुशेवा अतन्द्रासोवृका अश्रमिष्ठाः। ते पायवस्सध्र्यंचो निषद्याग्ने तव नः पान्त्वमूर।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम।12। ॐ ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तोऽअन्धं दुरितादरक्षन्। ररक्ष तान्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम।13। ॐ त्वया वयं सधन्यऽ1अस्त्वोतास्तव प्रणेत्यश्याम वाजान्। उभाशंसा सूदय सत्यता तेऽअनुष्ठुया कृणुह्यह्रयाण।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम।14। ॐ अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रतिस्तोमं शस्यमानं गृभाय। दहाशसो रक्षसः पाह्यऽस्मान्द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात्।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम।15।

(5 आहुति घी की दें)- ॐ ये देवाः पुरस्सदोऽअग्निनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽअवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा समूढं रक्षः सन्दग्धं रक्ष इदमहं रक्षोभि सन्दहामि।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम।1। ॐ ये देवाः दक्षिणसदो यमनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽअवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा समूढं रक्षः सन्दग्धं रक्ष इदमहं रक्षोभि सन्दहामि।।- यमाय रक्षोघ्ने स्वाहा, यमाय रक्षोघ्न इदं न मम।2। ॐ ये देवाः पश्चात्सदस्सवितृनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽअवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा समूढं रक्षः सन्दग्धं रक्ष इदमहं रक्षोभि सन्दहामि।।- सवित्रे रक्षोघ्ने स्वाहा, सवित्रे रक्षोघ्न इदं न मम।3। ॐ ये देवाः उत्तरसदो वरुणनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽअवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा समूढं रक्षः सन्दग्धं रक्ष इदमहं रक्षोभि सन्दहामि।।-

वरुणाय रक्षोघ्ने स्वाहा, वरुणाय रक्षोघ्न इदं न मम ।4। ॐ ये देवाः उपरिषदो बृहस्पतिनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽअवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा समूढं रक्षः सन्दग्धं रक्ष इदमहं रक्षोभि सन्दहामि ।।- बृहस्पते दुवस्पते रक्षोघ्ने स्वाहा, बृहस्पते दुवस्पते रक्षोघ्न इदं न मम ।5।

(पुनः 5 आहुति घी की दें)- ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽअत्यग्निः ।।- जातवेदसे रक्षोघ्न्यै स्वाहा, जातवेदसे रक्षोघ्न्यै इदं न मम ।1। ॐ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टां। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः ।।- दुर्गायै रक्षोघ्न्यै स्वाहा, दुर्गायै रक्षोघ्न्यै इदं न मम ।2। ॐ अग्ने त्वं पारया नव्योऽअस्मान्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। पूश्च पृथ्वी बहुला न ऊर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः ।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।3। ॐ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदस्सिन्धुं न नावा दुरिताऽअतिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽअस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।4। ॐ पृतना जितं सहमानमुग्रमग्निं हुवेम परमा सधस्थात्। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवोऽअतिदुरिताऽअत्यग्निः ।।- अग्नये रक्षोघ्ने स्वाहा, अग्नये रक्षोघ्न इदं न मम ।5।

(पुनः 4 आहुति घी की दें)- ॐ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा, अग्नये च पृथिव्यै च महत इदं न मम। ॐ भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा, वायवे चान्तरिक्षाय च महत इदं न मम। ॐ स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा, आदित्याय च दिवे च महत इदं न मम। ॐ भूर्भुःस्वश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा, चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च

महत इदं न मम। (अब अघोर मन्त्र से 108 आहुति अपामार्ग + चरु + समिधा + घी की दें)-

अथ विनियोगः -**ॐ अस्याघोरमन्त्रस्याघोर ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, अघोररुद्रो देवता, अघोरदेवताप्रसादसिद्ध्यर्थे होमे विनियोगः।**

अथ ऋष्यादि न्यासः - **ॐ अघोर ऋषये नमः** - शिरसि, **ॐ त्रिष्टुप्छन्दसे नमः** - मुखे, **ॐ अघोररुद्रदेवताभ्यो नमः** - हृदये, **अघोरदेवताप्रसादसिद्ध्यर्थे होमे विनियोगाय नमः** - सर्वांगे।

अथ करन्यासः - **ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर** -अंगुष्ठाभ्यां नमः। **ॐ प्रस्फुर प्रस्फुर**-तर्जनीभ्यां नमः। **ॐ घोरघोरतरतनुरूप** - मध्यमाभ्यां नमः। **ॐ चट चट प्रकट प्रकट** - अनामिकाभ्यां नमः। **ॐ कह कह वम वम** -कनिष्ठिकाभ्यां नमः। **ॐ बन्धय बन्धय घातय घातय हुं फट् स्वाहा** -करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यासः - **ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर** - हृदयाय नमः। **ॐ प्रस्फुर प्रस्फुर** - शिरसे स्वाहा। **ॐ घोरघोरतरतनुरूप** - शिखायै वषट्। **ॐ चट चट प्रकट प्रकट** - कवचाय हुम्। **ॐ कह कह वम वम** - नेत्रत्रयाय वौषट्। **ॐ बन्धय बन्धय घातय घातय हुं फट् स्वाहा** - अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम् - **सजलघनसमाभं भीमदंष्ट्रं त्रिनेत्रं भुजगधरमघोरं रक्तवस्त्रांगरागं। परशुडमरुखड्गान् खेटकं बाणचापौ त्रिशिख-नरकपाले बिभ्रतं भावयामि।।**

(अब इस मन्त्र से हवन करें) '**ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोरघोरतरतनुरूप चट चट प्रकट प्रकट कह कह वम वम बन्धय बन्धय घातय घातय हुं फट् स्वाहा।**'

तत्पश्चात् स्विष्टकृद्धोम से प्रायश्चित्त पर्यन्त कर्म करें - (ब्रह्मार्पण

आहुति दें-) **ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यत्कृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा, परब्रह्मण इदं न मम।**

(प्रायश्चित्त आहुति दें -) **अस्मिन्रक्षोघ्नहवनकर्मणि मध्ये संभावित समस्तमन्त्रलोपतन्त्रलोपद्रव्यलोपक्रियालोपाज्यलोपन्यूनातिरेक-विस्मृतिविपर्यासप्रायश्चित्तार्थं सर्वप्रायश्चित्तं होष्यामि ॐ भूर्भुवस्स्वः प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतय इदं न मम। ॐ श्री विष्णवे नमः स्वाहा, विष्णवे इदं न मम। ॐ नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा, रुद्राय पशुपतय इदं न मम।** (जल का स्पर्श करे और अग्नि देवता केलिये विशेष आहुति दें-)

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धामप्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति योनिरापृणस्व घृतेन स्वाहा।। अग्नये सप्तवत इदं न मम।'

तदनन्तर बलि प्रदान कर होमशेषकर्म करें। पुनः पूजा करके कलश का उद्वास करें। कलशोदक के साथ संपाताज्य को मिलाकर अपामार्गसहित कुशाओं से संपूर्ण घर में प्रोक्षण करें। तदनन्तर राक्षोघ्नहोमाग्नि को घर के ईशान भाग में कुछ समय रखकर विसर्जन करें।

---00000---

6. वास्तुपूजनप्रकरणम्

6.1) अब **वास्तुमण्डल लेखन** करें –

नारद संहिता 32.1–3 में गृहप्रवेशकर्म में प्रयुक्त वास्तुमण्डल के बारे में कहा है –

'वास्तुपूजामहं वक्ष्ये नववेश्मप्रवेशने।
हस्तमात्रा लिखेद्रेखा दशपूर्वा दशोत्तराः ।1।
गृहमध्ये तण्डुलोपर्येकाशीतिपदे भवेत्।
पंचोत्तरान्वक्ष्यमाणांश्चत्वारिंशत्सु वा न्यसेत् ।2।
द्वात्रिंशद्बाह्यतः पूज्यास्तत्रान्तःस्थास्त्रयोदश।
तेषां स्थानानि नामानि वक्ष्यामि क्रमशोऽधुना ।3।'

(अर्थात् अब मैं नये घर में प्रवेश करने हेतु वास्तुपूजा कहूंगा। यजमान के हाथ की लम्बाई के समान लम्बी व समान चौड़ी वेदी पर चावलके ऊपर 10 रेखा पूर्व से पश्चिम को और 10 रेखा उत्तर से दक्षिण को बनायें जिससे 81 पद यानि कोष्ठक बनेंगे। जिनके भीतर 49 देवता हैं, जिनमें से भीतर 13 और बाहर 36 होंगे और शेष बाहर मेखलाओं में 28 देवता स्थापित होंगे। कुल 77 देवता हैं। उन सबके स्थान और नाम को ईशानादि क्रम से कहूंगा।)

घर के ईशान दिशा में स्थित कमरे की पूजामण्डप के रूप में कल्पना करके उसके ईशान कोण में ग्रहवेदी और पश्चिम अथवा नैर्ऋत्य में वास्तुपीठ की स्थापना करें। ध्यान दें – मत्स्यपुराण आदि अन्य वास्तुशास्त्रों में कर्म भेद से 51पद, 64पद, 81पद, 100पद, 119पद, 144पद, 169पद, 196पद, 1000पद और लक्षपद के वास्तु मण्डल रचनाप्रकारभेद सहित वर्णित हैं। किन्तु –

'एकाशीतिपदं वास्तु गृहकर्मणि शस्यते।
चतुःषष्टिपदो वास्तुः प्रासादे देवभूभुजाम्।।'

(अर्थात् 81पद का वास्तुमण्डल गृहप्रवेशकर्म में और

देवमन्दिर, देवयज्ञवेदी तथा राजाओं के प्रासाद के शोधन केलिये 64 पद का वास्तुमण्डल श्रेष्ठ है।) तदनुसार 81पद के वास्तुमण्डल की वास्तुपीठ पर रचना करके रंग भरें (चित्र सं. 1 पृष्ठ सं. 134 देखें) वास्तुपीठ के ईशान भाग अथवा मध्य में दो कलशों की स्थापना करें।

6.2) सर्वप्रथम पूरे **पूजामण्डप का ध्यान** करें–

'ॐ उत्तप्तोज्ज्वलकांचनेन रचितं तुंगांगरंगस्थलं, शुद्धस्फाटिकभित्तिकाविलसितैः स्तम्भैश्च हेमैः शुभैः। द्वारैश्चामररत्नराजिखचितैः शोभावहैर्मण्डपै, श्छत्राकैरभिचित्रशंखधवलैः प्रभ्राजितं स्वस्तिकैः ।1। मुक्तादामविलम्बमण्डपयुतै वज्रैश्च सोपानकैः, नानारत्नविमिश्रितैश्च फलकैरत्यन्तशोभावहैः। माणिक्योज्ज्वलदीप्तदीप्तिमुकुटं लक्ष्मीविलासास्पदं, ध्याये-न्मण्डपमर्चनेषु सकलेष्वेवं विधं साधकः ।2।'

6.3) अब **वास्तुपूजन का संकल्प** करें – देशकाल के कथन पूर्वक कहे – **एतत्प्रासादावच्छिन्नभूम्यधिष्ठितदेवतोपरोधजनितोपसर्गनिवृत्तिपूर्वकप्रासादाधिष्ठितवास्तुपुरुष प्रीतयेऽत्र करिष्यमाणनित्यनैमित्तिककाम्याकाम्य कर्मोपासनादीनामस्य वास्तोश्च शुभतासिद्धिद्वारा शिख्यादिदेवप्रीत्यर्थं यथाविभवदेशकालाद्यनुसारतो यथाप्राप्तोपचारसम्भारैः वास्तुपूजनकर्माहं करिष्ये।**

वास्तुमण्डल के ईशानादि चार कोणों में प्रदक्षिणा के क्रम से उदुम्बर अथवा लोहे की चार कील गाढ़ें –

'ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा।।'

अब ईशानादि क्रम से ही कीलों के बगल में माषभक्तदध्योदान की बलि दें –

'ॐ रुद्रेभ्यश्च सर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णन्तु सततोत्सुकाः ।1।

ॐ अग्नीभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।2।
ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वे गृह्णन्तु मन्त्रितम्।3।
ॐ वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।4।

6.4) पुष्पाक्षतादि से पूर्व से पश्चिम की ओर बनायी गयी 9 **रेखाओं का पूजन करें** –

1. **ॐ लक्ष्म्यै नमः**, 2. **ॐ यशोवत्यै नमः**, 3. **ॐ कान्तायै नमः**, 4. **ॐ सुप्रियायै नमः**, 5. **विमलायै नमः**, 6. **ॐ श्रियै नमः**, 7. **ॐ सुभगायै नमः**, 8. **ॐ सुमत्यै नमः**, 9. **ॐ इडायै नमः**।

तथा पुष्पाक्षतादि से दक्षिण से उत्तर की ओर बनायी गयी 9 रेखाओं का पूजन करें – 1. **ॐ धान्यायै नमः**, 2. **ॐ प्रणायै नमः**, 3. **ॐ विशालायै नमः**, 4. **ॐ स्थिरायै नमः**, 5. **ॐ भद्रायै नमः**, 6. **ॐ लयायै नमः**, 7. **ॐ निशायै नमः**, 8. **ॐ विरजायै नमः**, 9. **ॐ विभवायै नमः**। (अथवा क्रमशः '**ॐ शान्तायै नमः, ॐ यशोवत्यै नमः, ॐ कान्तायै नमः, ॐ विशालायै नमः, ॐ प्राणवाहिन्यै नमः, ॐ सत्यै नमः, ॐ सुमनायै नमः, ॐ नन्दायै नमः, ॐ सुभद्रायै नमः**'। और '**ॐ हिरण्यायै नमः, ॐ सुव्रतायै नमः, ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ विभूत्यै नमः, ॐ विमलायै नमः, ॐ प्रियायै नमः, ॐ जयायै नमः, ॐ कालायै नमः, ॐ विशोकायै नमः**'।)

अक्षतपुष्पादि से उन रेखाओं में प्राण प्रतिष्ठा करें –

'**ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।।**'

और '**ॐ भूर्भवःस्वः रेखादेवताभ्यो नमः**' गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और सर्वोपचारार्थ नमस्कार समर्पण करें। '**अनेन रेखादेवतानां पंचोपचारैः कृतेन पूजनेन रेखादेवताः प्रीयन्तां न मम**'।

तदनन्तर द्वारपालों की पूजा करें।

पूर्वद्वार पर– '**ॐ द्वारश्रियै नमः, ॐ ब्राह्मयै नमः, ॐ माहेश्वर्यै नमः।**'

दक्षिणद्वार पर– '**ॐ द्वारश्रियै नमः, ॐ कौमार्यै नमः, ॐ वैष्णव्यै नमः।**'

पश्चिमद्वार पर– '**ॐ द्वारश्रियै नमः, ॐ वाराह्यै नमः, ॐ माहेन्द्र्यै नमः।**'

उत्तरद्वार पर– '**ॐ द्वारश्रियै नमः, ॐ चामुण्डायै नमः, ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**'

6.5) अब **पीठपूजा** करें –

'**ॐ मण्डूकाय नमः, ॐ आधार शक्त्यै नमः, ॐ मूलप्रकृत्यै नमः, ॐ कालाग्निरुद्राय नमः, ॐ महामण्डूकाय नमः, ॐ कूर्माय नमः, ॐ वराहाय नमः, ॐ अनन्ताय नमः, ॐ पृथिव्यै नमः, ॐ अमृतार्णवाय नमः, ॐ रत्नद्वीपाय नमः, ॐ हेमगिरये नमः, ॐ नन्दनोद्यानाय नमः, ॐ मणिभूम्यै नमः, ॐ रत्नमण्डपाय नमः, ॐ कल्पतरवे नमः, ॐ रत्नसिंहासनाय नमः, ॐ धर्माय नमः, ॐ ज्ञानाय नमः, ॐ वैराग्याय नमः, ॐ ऐश्वर्याय नमः, ॐ अधर्माय नमः, ॐ अज्ञानाय नमः, ॐ अवैराग्याय नमः, ॐ अनैश्वर्याय नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ अनन्ताय नमः, (मध्ये) ॐ वास्तुपुरुषाय नमः। पीठपूजां समर्पयामि नमस्करोमि।**'

6.6) तत्पश्चात् **नवशक्तियों** की पूजा करें –

'**ॐ सजयायै नमः, ॐ विजयायै नमः, ॐ जिताह्वयायै नमः, ॐ अपराजितायै नमः, ॐ नित्यायै नमः, ॐ विलासिन्यै नमः, ॐ रौद्र्यै नमः, ॐ अघोरायै नमः, ॐ मंगलायै नमः। आवाहयामि, पूजयामि, नमस्करोमि।**'

6.7) वास्तुमण्डलपूजनम्

वास्तुदेवता का ध्यान करें :-

'आसीत्पूर्वं महादैत्यौ वास्तुर्यज्ञोपकारकः ।
स देवैर्बहुकालेन युद्धे हत्वा महीतले ।1 ।
निपात्य बहुभिर्देवैर्निबद्धश्चतुरस्रकः ।
ईशाने मस्तको न्यस्तो नैर्ऋत्ये पादसंपुटम् ।2 ।
जानुनी कूर्परीकृत्य बाहुयुग्मं तथैव च ।
वायव्याग्न्योस्ततो जानुं हृदये चांजलिस्तथा ।3 ।
पदौ कृत्य च तस्योर्ध्वं स्वयं मुक्ताः सुराः स्थिताः ।
कृतांजलिरधोवक्त्रो वास्तुमूर्तिः प्रकीर्तितः ।4 ।
वास्तुमूर्ति महाकायः कृष्णांगो रक्तलोचनः ।
एकाननो द्विबाहुश्च बर्बरांगश्चतुर्धरः ।5 ।
वज्रदेहो सुराकारो रक्तश्मश्रुशिरोरुहः ।
ईशान्यमस्तकः क्रुद्धो नैर्ऋत्यां गतपादकः ।6 ।

ॐ भूः वास्तुपुरुषमावाहयामि। ॐ भुवः वास्तुपुरुषमावाहयामि। ॐ स्वः वास्तुपुरुषमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषमहापराक्रम सर्वदेवाश्रितशरीर ब्रह्मपुत्र सकल-ब्रह्माण्डधारक भगवन्निहागच्छ। ॐ आगच्छ भगवन्वास्तो सर्वदेवैरधिष्ठित। भगवन्कुरु कल्याणं यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव।।

वास्तुपुरुष का पुष्पाक्षतों से आवाहनादि करें -

'ॐ वास्तोष्पत इति मन्त्रस्य मैत्रावरुण ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, वास्तोष्पतिर्देवता, आवाहनादिकर्मणि विनियोगः। (अथवा 'ॐ वास्तोष्पत इति मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, वास्तोष्पतिर्देवता, वृषवास्तुप्रतिष्ठापने विनियोगः।) ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवोभवानः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे। भो वास्तुपुरुष

इह तिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषं सशक्तिं सांगं सायुधं सपरिवार मस्मिन्कुंभे आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, नमस्करोमि।' पुष्पचन्दनाक्षतों को हाथ में लेकर वास्तुमण्डल का दर्शन व निरीक्षण करें –

'देवाराधनमण्डलं सुरगणावासं सदा भद्रकं,
कर्तृदर्शनमात्रतः शुभकरं तत्पंचभूतात्मकं।
वर्णाध्यक्षरसंयुतं भयहरं तद्यागपुण्योदयं,
नानामन्त्रमयं समस्तनमितं ध्यायेन्मनोनन्दनम्।1।
स्वर्णभूमिसितं तोयं तेजोऽनलनिभं तथा।
पिशंगं गगनाकारं स्वर्णद्रव्याणि कल्पयेत्।2।
अरिष्टानि बहून्यस्मिन्दुष्कृतानि शतैरपि।
मण्डलानि निरीक्ष्यन्ते यथा युक्तेषु कातरात्।3।'

पुष्पादि को मण्डल पर प्रक्षेप करें –

'ॐ सर्वज्ञानक्रियाव्यक्तकमलासनाय योगपीठात्मने नमः।'

अब वास्तुमण्डल में चित्र सं. 2 पृ. सं. 135 में दर्शित संख्याक्रम से अथवा चित्र सं. 3 पृ.सं. 136 में दर्शित संख्या क्रम से आवाहनादि कर्म करें।

1. वास्तुमण्डल के मध्य में दो सुपारी रखकर उनमें वास्तु और ब्रह्मा का आवाहन करें –
   'ॐ वास्तोष्पत इति मन्त्रस्य मैत्रावरुण ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, वास्तोष्पति देवता, आवाहनादिकर्मणि विनियोगः। (और) **ॐ ब्रह्मणेति मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, ब्रह्मा देवता, आवाहनादिकर्मणि विनियोगः। ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवोभवानः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशु। स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन्प्रजानन्विद्वा उप याहि सोमम्।। ॐ**

भूर्भुवःस्वः वास्तु पुरुषब्रह्माणौ सशक्तिं सांगं सायुधं सपरिवारम स्मिन्मण्डलमध्ये आवाहयामि।'

अब क्रम से वास्तुमण्डल के प्रत्येक देवता का आवाहन तत्तत्प्रकोष्ठ में एक-एक सुपारी रखते हुये करें -

2. **ॐ भूर्भवःस्वः अर्यमाय नमः अर्यम्णमावाहयामि।**
3. **ॐ भूर्भवःस्वः सवित्रे नमः सवितारमावाहयामि।**
4. **ॐ भूर्भवःस्वः विवस्वते नमः विवस्वन्तमावाहयामि।**
5. **ॐ भूर्भवःस्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि।**
6. **ॐ भूर्भवःस्वः मित्राय नमः मित्रमावाहयामि।**
7. **ॐ भूर्भवःस्वः राजयक्ष्मणे नमः राजयक्ष्मणमावाहयामि।**
8. **ॐ भूर्भवःस्वः भूधराय नमः भूधरमावाहयामि।**
9. **ॐ भूर्भवःस्वः आपवत्साय नमः आपवत्समावाहयामि।**
10. **ॐ भूर्भवःस्वः अद्भ्यो नमः अपामावाहयामि।**
11. **ॐ भूर्भवःस्वः सवित्रे नमः सवितारमावाहयामि।**
12. **ॐ भूर्भवःस्वः जयाय नमः जयमावाहयामि।**
13. **ॐ भूर्भवःस्वः रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि।**
14. **ॐ भूर्भवःस्वः शिखिने नमः शिखिनमावाहयामि।**
15. **ॐ भूर्भवःस्वः पर्जन्याय नमः पर्जन्यमावाहयामि।**
16. **ॐ भूर्भवःस्वः जयन्ताय नमः जयन्तमावाहयामि।**
17. **ॐ भूर्भवःस्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि।**
18. **ॐ भूर्भवःस्वः सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि।**
19. **ॐ भूर्भवःस्वः सत्याय नमः सत्यमावाहयामि।**
20. **ॐ भूर्भवःस्वः भृशाय नमः भृशमावाहयामि।**
21. **ॐ भूर्भवःस्वः आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि।**
22. **ॐ भूर्भवःस्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि।**
23. **ॐ भूर्भवःस्वः पूष्णे नमः पूष्णमावाहयामि।**

24. ॐ भूर्भव:स्व: वितथाय नमः वितथमावाहयामि।
25. ॐ भूर्भव:स्व: गृहक्षताय नमः गृहक्षतमावाहयामि।
26. ॐ भूर्भव:स्व: यमाय नमः यममावाहयामि।
27. ॐ भूर्भव:स्व: गन्धर्वाय नमः गन्धर्वमावाहयामि।
28. ॐ भूर्भव:स्व: भृंगराजाय नमः भृंगमावाहयामि।
29. ॐ भूर्भव:स्व: मृगाय नमः मृगमावाहयामि।
30. ॐ भूर्भव:स्व: पितृभ्यो नमः पितृनावाहयामि।
31. ॐ भूर्भव:स्व: दौवारिकाय नमः दौवारिकमावाहयामि।
32. ॐ भूर्भव:स्व: सुग्रीवाय नमः सुग्रीवमावाहयामि।
33. ॐ भूर्भव:स्व: पुष्पदन्ताय नमः पुश्पदन्तमावाहयामि।
34. ॐ भूर्भव:स्व: वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि।
35. ॐ भूर्भव:स्व: असुराय नमः असुरमावाहयामि।
36. ॐ भूर्भव:स्व: शेषाय नमः शेषमावाहयामि।
37. ॐ भूर्भव:स्व: पापयक्ष्मणे नमः पापयक्ष्मणमावाहयामि।
38. ॐ भूर्भव:स्व: रोगघ्नाय नमः रोगघ्नमावाहयामि।
39. ॐ भूर्भव:स्व: नागाय नमः नागमावाहयामि।
40. ॐ भूर्भव:स्व: मुख्याय नमः मुख्यमावाहयामि।
41. ॐ भूर्भव:स्व: भल्लाटाय नमः भल्लाटमावाहयामि।
42. ॐ भूर्भव:स्व: सोमाय नमः सोममावाहयामि।
43. ॐ भूर्भव:स्व: फणिने नमः फणिनमावाहयामि।
44. ॐ भूर्भव:स्व: अदित्यै नमः अदितिमावाहयामि।
45. ॐ भूर्भव:स्व: दित्यै नमः दितिमावाहयामि।

अब मण्डल के बाहर प्रथम मेखला यानि श्वेत परिधि में पूर्वादि क्रम से 4 दिशाओं में :–

46. ॐ भूर्भव:स्व: स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि।(पूर्व)
47. ॐ भूर्भव:स्व: अर्यमाय नमः अर्यममावाहयामि।(दक्षिण)
48. ॐ भूर्भव:स्व: जम्भाय नमः जम्भमावाहयामि। (पश्चिम)

49. ॐ भूर्भवःस्वः पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छमावाहयामि।
(उत्तर)

अब मण्डल के बाहर प्रथम मेखला यानि श्वेत परिधि में ईशानादि क्रम से 4 प्रदिशाओं में –

50. ॐ भूर्भवःस्वः चरक्यै नमः चरकीमावाहयामि। (ईशान)

51. ॐ भूर्भवःस्वः विदार्यै नमः विदारीमावाहयामि। (आग्नेय)

52. ॐ भूर्भवःस्वः पूतनायै नमः पूतनामावाहयामि।(नैर्ऋत्य)

53. ॐ भूर्भवःस्वः पापराक्षस्यै नमः पापराक्षसीमावाहयामि।
(वायव्य)

अब मण्डल के बाहर द्वितीय मेखला यानि रक्तपरिधि में पूर्वादि क्रम से 8 दिशाओं में इन दिक्पालों का आवाहन करें

54. ॐ भूर्भवःस्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि।

55. ॐ भूर्भवःस्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि।

56. ॐ भूर्भवःस्वः यमाय नमः यममावाहयामि।

57. ॐ भूर्भवःस्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि।

58. ॐ भूर्भवःस्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि।

59. ॐ भूर्भवःस्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि।

60. ॐ भूर्भवःस्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि।

61. ॐ भूर्भवःस्वः ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि।

पुनः 6 उपदिशाओं में ब्रह्मादि का आवाहन करें–

ईशान और पूर्व के मध्य में –

62. ॐ भूर्भवःस्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि।

निर्ऋति और पश्चिम के मध्य में –

63. ॐ भूर्भवःस्वः अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि।'

उसी पर पुनः पूर्वादिक्रम से उग्रसेनादिका आवाहन करें –

64. पूर्व में इन्द्र से उत्तर में

'ॐ भूर्भवःस्वः उग्रसेनाय नमः उग्रसेनमावाहयामि'।

65. दक्षिण में यम से उत्तर में –

'ॐ भूर्भवःस्वः डामराय नमः डामरमावाहयामि'।

66. पश्चिम में वरुण से उत्तर में

'ॐ भूर्भवःस्वः महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि'।

67. उत्तर में सोम से उत्तर में

'ॐ भूर्भवःस्वः पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छमावाहयामि'।

अब मण्डल के बाहर तृतीय मेखला यानि कृष्णपरिधि में पूर्वादि क्रम से इन देवताओं का आवाहन करें –

68. पूर्व में –

'ॐ भूर्भवःस्वः हेतुकाय नमः हेतुकमावाहयामि'।

69. आग्नेय में –

'ॐ भूर्भवःस्वः त्रिपुरान्तकाय नमः त्रिपुरान्तकमावाहयामि'।

70. दक्षिण में –

'ॐ भूर्भवःस्वः अग्निवैतालाय नमः अग्निवैतालमावाहयामि'।

71. नैर्ऋत्य में –

'ॐ भूर्भवःस्वः असिवैतालाय नमः असिवैतालमावाहयामि'।

72. पश्चिम में –

'ॐ भूर्भवःस्वः कालाय नमः कालमावाहयामि'।

73. वायव्य में –

'ॐ भूर्भवःस्वः करालाय नमः करालमावाहयामि'।

74. उत्तर में –

'ॐ भूर्भवःस्वः एकपादाय नमः एकपादमावाहयामि'।

75. ईशान्य में –

'ॐ भूर्भवःस्वः भीमरूपाय नमः भीमरूपमावाहयामि'।

76. पूर्व और ईशान के बीच में –

'ॐ भूर्भवःस्वः खेचराय नमः खेचरमावाहयामि'।

77. निर्ऋति और पश्चिम के बीच में –

'ॐ भूर्भवःस्वः तलवासिने नमः तलवासिनमावाहयामि'।

इसी प्रकार सूर्यादिनवग्रहों और क्षेत्रपालादियों का मेखलाओं में अथवा पृथक्पीठ में तत्तन्मूर्ति/तत्तद्धान्य/सुपारी में तत्तन्मन्त्रों से आवाहन करें।

तत्पश्चात् **'ॐ वास्तुपीठदेवताभ्यो नमः'** नमस्कार करें। अब सब की एकसाथ प्राणप्रतिष्ठा करें– **'ॐ आं ह्रीं क्रों यंरंलंवंशंषंसंहों सं हं सः। सग्रहपुरस्सरं वास्तुमण्डलदेवताः प्राणा इह प्राणाः।1। ॐ आं ह्रीं क्रों यंरंलंवंशंषंसंहों सं हं सः। सपरिवार सग्रहपुरस्सरं वास्तु मण्डलदेवताः सर्वेन्द्रियाणि इहस्थितानि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाश–शब्दस्पर्शरूपरसगन्ध–श्रोत्रत्वक्चक्षुः रसनाघ्राण–वाक्पाणिपादपायूपस्थ–वचनादानविहरणविसर्गानन्द–मनोबुद्धिचित्ताहंकार–ज्ञानात्मपरमात्मन इहैवागत्यसुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।2। ॐ असुनीत इति मन्त्रस्य बन्ध्वादय ऋषयः, त्रिष्टुप्छन्दः, असुनीती देवता आवाहनकर्मणि विनियोगः। ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्। ज्योक्पश्येम सूर्य मुच्चरन्तमनुमते मृळया नः स्वस्ति।3। ॐ मनो जूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।4।'**

पुनः आवाहन करें – **'ॐ भूर्भुवःस्वः सग्रहपुरस्सरं वास्तुमण्डल–देवताः अत्रैव आगच्छ आगच्छ आवाहयामि। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवकुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। प्रसन्नो भव। कर्मणि संभावितदोषा–न्क्षमस्व।'** (यदि मुद्राओं का ज्ञान हो तो आवाहनी आदि 6 मुद्राओं को प्रदर्शित करें।) तत्पश्चात् आवाहित समस्त देवताओं का

पृथक्–पृथक् षोडशोपचार पूजन करें। अथवा एक साथ सब को समर्पित करें – '**इदं पाद्यं, एषोऽर्घ्यः, इदमाचमनीयम्, इदं स्नानम्, इदं वस्त्रम्, इदं गन्धम्, एतेऽक्षताः, एतानि पुष्पाणि, एष धूपः, एष दीपः, एतानि नानाविधानि नैवेद्यानि, इदमा चमनीयम्, इदं ताम्बूलम्, एषा दक्षिणा। ॐ इह स्थापित देवताभ्यो नमः इमान्युपचाराणि समर्पयामि यथाविभागं पूजनं वो नमः।**'

अब प्रधानवास्तुपुरुषदेवता का प्राणप्रतिष्ठा पूर्वक पूजन करें – '**ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि, क्रिया मयवपुः प्राणाख्या देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।**'

अथ ऋष्यादिन्यासः – **ॐ ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषिभ्यो नमः** – शिरसि, **ॐ ऋग्यजुःसामाछन्दोभ्यो नमः** – मुखे, **ॐ प्राणाख्यादेवतायै नमः** – हृदये, **ॐ बीजाय नमः** – गुह्ये, **ॐ ह्रीं शक्तये नमः** – पादयोः, **ॐ क्रौं कीलकाय नमः** – नाभौ, **ॐ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगाय नमः** – सर्वांगे। स्वयं में और मूर्ति/यन्त्र में हृदयादिन्यास करें – **ॐ कंखंगंघंङं अं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः** – हृदये, **ॐ चंछंजंझंञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा** – शिरसि, **ॐ टंठंडंढंणं उं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वा घ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट्** – शिखायां, **ॐ तंथंदंधंनं एं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम्** – बाहौ, **ॐ पंफंबंभंमं ओं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट्** – त्रिनेत्रेषु, **ॐ यंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षं अं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट्** – सर्वांगे। मूर्ति/यन्त्र को स्पर्श कर जपें – '**ॐ आं क्रौं ह्रीं यंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षं हंसः सोऽहम् अस्य देवस्य प्राणा इह प्राणाः।**' (पुनः) '**ॐ आं क्रौं ह्रीं यंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षं हंसः सोऽहम् अस्य देवस्य जीव इह स्थितः।**' (पुनः) '**ॐ आं क्रौं ह्रीं**

यंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षं हंसः सोऽहम् अस्य देवस्य श्रोत्रत्वक्चक्षु-जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थ मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानीहैवा-गत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।' मूर्ति/यन्त्र के हृदय को अपने दाहिने हाथ के अंगूठे से स्पर्श करके जपे- **'अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु, अस्यै प्राणाश्चरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन। ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।'**

अथ ध्यानम् -

'ॐ भगवन्देवदेवेश ब्रह्मादिदेवतात्मक।
तव पूजां करिष्यामि प्रसादं कुरु मे प्रभो।।'

षोडशोपचारपूजन करें - **'ॐ वास्तुपुरुषाय नमः पाद्यं समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि।'** इसी प्रकार अर्घ्य, आचमन, पंचामृत, शुद्धोदक, यज्ञोपवीत, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, ताम्बूल, दक्षिणा आदि समर्पण करें। प्रार्थना करें -

'वास्तुपुरुष नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो।
मद्गृहं धनधान्यादिसमृद्धं कुरु सर्वदा।।'

अब विशेष अर्घ्य दें -

'ॐ पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षार्थहेतवे।
त्वद्विना च न सिद्ध्यन्ति यज्ञदानान्यनेकशः।1।
अयोने भगवन्भर्गललाटस्वेदसम्भव।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तो स्वामिन्नमोऽस्तु ते।2।'

6.8) तदनन्तर उसके अंगभूत दो **कलशों की स्थापना** वास्तुमण्डल के मध्य में स्थित 4 कोष्ठकों में करें।

1. पूजाभूमि को जल से प्रोक्षण कर अभिमन्त्रित करें -
'ॐ महीद्यौरिति मन्त्रस्य काण्वो मेधातिथि ऋषिः, गायत्री छन्दः, द्यावापृथिव्यौ देवते, भूमिपूजने विनियोगः। ॐ महीद्यौः पृथ्वीचन इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो

भरीमभिः ।।'

2. भूमि पर थोड़ा चावल रखें – '**ॐ येन तोकेति मन्त्रस्य आत्रेय श्वावाश्व ऋषिः, बृहती छन्दः, मरुत्सतौ देवते, कलशासने विनियोगः। ॐ येन तोकाय तनयाय धान्यं बीजं वहध्वेऽ-अक्षितम्। अस्मभ्यं तद्धत्तन यद्व ईमहे राधो विश्वायु सौभगम्।।**'

3. उस पर सामान्यार्ध्यपात्र को स्थापित करें – '**ॐ अकलशेष्विति मन्त्रस्य गाधि विश्वामित्र ऋषिः, गायत्री छन्दः, पवमानसोमौ देवते, कलशस्थापने विनियोगः। ॐ अकलशेषु धावति पवित्रे परिशिच्यते। उक्थैयज्ञेषु वर्धते।।**' और '**ॐ आजिघ्र-कलशं मह्यात्वाविश न्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्त्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीपुनर्माविशताद्रयिः।।**'

4. कलश के गले में मौलि बांधें – '**ॐ तन्तुमिति मन्त्रस्य देव ऋषिः, गायत्री छन्दः, अग्निर्देवता, तन्तुवेष्टने विनियोगः। ॐ तन्तुं तन्वन रजसो भानुमन्वि हि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्। अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।।**'

5. कलश को पवित्रजल से थोड़ा भरें – '**ॐ इमं मे गंगेति मन्त्रस्य सिन्धुक्षित्प्रैयमेध ऋषिः, जगती छन्दः, नदी देवता, जलपूरणे विनियोगः। ॐ इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या। असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽर्जीकीये श्रृणु ह्यासुषोमया।।**' और '**ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि। वरुण-स्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।।**

6. कलश को कषाय जल से थोड़ा भरें – '**ॐ या ओषधीरिति-मन्त्रस्य अथर्वण ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, भिषगोषधयो देवताः, कषायजलपूरणे विनियोगः। ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मन्ये नु बभ्रूणामहं शतं धामानि**

सप्त च।।'

7. कलश में गन्ध का प्रक्षेप करें- '**ॐ गन्धद्वारां**'।
8. कलश में पूगीफल का प्रक्षेप करें -'**ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वꣳहसः।।**'
9. कलश में पुष्प का प्रक्षेप करें - '**ॐ आयने ते**'
10. कलश को वस्त्र से अलंकृत करें - '**ॐ वस्त्राणि**'
11. कलश में नवरत्न डालें - '**ॐ स हि रत्नानीति मन्त्रस्य श्वावाश्व ऋषिः, गायत्री छन्दः, सविता देवता, नवरत्न-निक्षेपे विनियोगः। ॐ स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः। तं भागं चित्रमीमहे।।**' अथवा पंच रत्नों को डालें- '**ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।**'
12. तदनन्तर कलश में दक्षिणा डालें- '**ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**'
13. कलश में सर्वौषधी डालें-'**ॐ याऽओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्य-स्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामहꣳशतं धामानि सप्त च।।**'
14. घोड़ा-हाथी-वल्मीक-गोष्ठ-राजद्वार-चौराहा आदि सात अथवा नौ स्थानों की पवित्र मिट्टी को कलश में डालें - '**ॐ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतं।।**' और '**ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरान्निवेशिनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः।।**'
15. कलश में पंचगव्य डालें - आचार्यकर्म प्रकरण में उक्त प्रक्रिया से क्रमशः गायत्री मन्त्र से गोमूत्र को, गन्धद्वारा इत्यादि मन्त्र से गोबर को, आप्यायस्व इत्यादि मन्त्र से दूध को, दधिक्राव्णा इत्यादि मन्त्र से दही को, तेजोऽसि शुक्रं इत्यादि मन्त्र से घी को

और देवस्य त्वा इत्यादि मन्त्र से कुशोदक को डालें।

16. कलश में दूर्वा डालें – '**ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।**'

17. कलश में पंच पल्लव रखें – '**ॐ अश्वत्थेति मन्त्रस्य अथर्वण ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, भिषगोषधयो देवताः, पंचपल्लवस्थापने विनियोगः। ॐ अश्वत्थे वो निषेदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासयथयत्सन्वत्पूरुषम्।।**'

18. दर्भपवित्र डालें – '**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽ-उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।**'

19. कलश में कूर्च रखें – '**ॐ पवित्रमिति मन्त्रस्य परब्रह्मा ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, परमात्मा देवता, कूर्चनिधाने विनि योगः। ॐ पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणिपर्येषि विश्वतः। अतप्त तनूर्नतदावोऽश्नुते श्रुतासः इद्वहंतस्तत्समाशत।।**'

20. कलश पर स्थापित पंचपल्लवों को फैलाकर उस पर चावल से भरे पात्र को रखें –'**ॐ पूर्णा दर्वीति मन्त्रस्य विश्वेदेवा ऋषयः, अनुष्टुप्छन्दः, शतक्रतु देवता, तण्डुलपूरित-पात्रनिधाने विनियोगः। ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जं शतक्रतो।**'

(यदि मूर्ति/यन्त्र की स्थापना नहीं करनी है तो श्रीफल को स्थापित करें –

21. पूर्णपात्र पर श्रीफल स्थापित करें – '**ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण।।**')

22. कलश में प्राण प्रतिष्ठा करें – '**ॐ मनो जूतिर्जुषतामा ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वे-**

देवासऽइह मादयन्तामों3 प्रतिष्ठ।।'

23. अब वरुण देवता का आवाहन करें – '**ॐ तत्त्वायामीति मन्त्रस्य शुनःशेप ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, वरुणो देवता, वरुणदेवता आवाहने विनियोगः। ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त–दाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशं समान आयुः प्रमोषीः।। ॐ भूर्भुवःस्वः वरुण इह आगच्छ इह तिष्ठ। ॐ वरुणाय नमः।**'
24. अब निम्न मन्त्र से षोडशोपचार पूजन करें– '**ॐ अपांपति–वरुणाय नमः।**'
25. उसके बाद कलश को हाथ से ढ़ककर निम्न मन्त्रों से तीर्थों के आवाहनपूर्वक अभिमन्त्रित करें –

'ॐ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः।1।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्र समाश्रिताः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृताः।2।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपवसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेद सामवेदो ह्यथर्वणः।3।

अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
आयान्तु दैव्यः पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।4।

26. प्रार्थना करें –

'ॐ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।1।

त्वत्तः सर्वाणि तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।2।

शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।3।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।4।

सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।
सर्वेऽत्र प्रतितिष्ठन्तु मम कल्याणकारकाः।5।'

6.9) इस प्रकार वास्तुपूजन के अंगभूत दो कलशों की स्थापना करके मूर्ति/यन्त्र का **अग्न्युत्तारणकर्म** करें –

ग्रहों की प्रतिमा/ यन्त्र और वास्तु की प्रतिमा/ यन्त्र को एक ताम्र पात्र में रखकर घी से अभ्यंजन करें –

'ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम। अनुष्वधमा वहमादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।'

उन पर दूध की धारा छोड़ें –

'ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।'

तदनन्तर शुद्ध जल से स्नान करायें –

'ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः। श्येताक्ष्योऽरुणेस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रान्नभोरूपाः पार्जन्याः।।'

अब दो अग्निसूक्तों से अभिषेक करें –

'ॐ अग्निसप्तिमिति अग्निसूक्तात्मकमन्त्रस्य सौचिकोऽग्नि ऋषयः, त्रिष्टुप्छन्दः, अग्निर्देवता, प्रतिमा/ यन्त्र निर्माणकाले संजनित दोषपरिहारार्थमभिषेके विनियोगः।

(सर्वप्रथम इस सूक्त के बिना अग्नि पद का पाठ करना है तत्पश्चात् अग्नि पद सहित पाठ करना है। अथ अग्नि पद रहित सूक्त –)

‘ॐ सप्तिं वाजं भरं ददाति वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठम्।
रोदसी विचरत्समंजन्नारीं वीरकुक्षिं पुरंधिम्।1।
अप्नसस्समिदस्तु भद्रा मही रोदसी आविवेश।
एकं चोदयत्समत्सुव्रताणि दयते पुरूणि।2।
हत्यं जरतः कर्णमावाद्भ्यो निरदहज्जरूथम्।
अत्रिं घर्म उरुष्यदन्तर्नृमेधं प्रजया सृजत्सम्।3।
दाद्रविणं वीरपेशा ऋषिं यस्सहस्रा सनोति।
दिवि हव्यमाततान धामानि विभृता पुरुत्रा।4।
उक्थैर्ऋषयो विह्वयन्ते नरो यामनि बाधितासः।
वयोऽअन्तरिक्षे पतन्तस्सहस्रा परियाति गोनाम्।5।
विश ईळते मानुषीर्या मनुषो नहुषो विजाताः।
गान्धर्वीं पथ्यामृतस्य गव्यूतिर्घृत आ निषत्ता।6।
ब्रह्म ऋभवस्ततक्षुर्महामवोचामासु वृक्तिम्।
प्राव जरितारं यविष्ठ महिद्रविणमायजस्व।7।

(अग्नि पद सहित सूक्त –)

‘ॐ अग्निसप्तिं वाजं भरं ददात्यग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम् अग्नी रोदसी विचरत्समंजन्नग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरंधिम्।1। अग्नरप्नस-स्समिदस्तु भद्राऽअग्निर्मही रोदसी आविवेश। अग्निरेकंचो-दयत्समत्स्वग्निर्व्रताणि दयते पुरूणि।2। अग्निर्हत्यं जरतः कर्णमावाग्निरद्भ्यो निरदहज्जरूथम्। अग्निरत्रिं घर्म उरुष्यदन्तर-ग्निर्नृमेधं प्रजया सृजत्सम्।3। अग्निर्दाद्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिं यस्सहस्रा सनोति। अग्निर्दिवि हव्यमाततानाग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा।4। अग्निमुक्थैर्ऋषयो विह्वयन्तेऽअग्निं नरो यामनि बाधितासः अग्निं वयोऽन्तरिक्षे पतन्तोऽग्निस्सहस्रा परियाति गोनाम्। 5। अग्निं विश ईळते मानुषीर्याऽअग्निं मनुषो नहुषो विजाताः। अग्निर्गान्धर्वीं पथ्यामृतस्याग्नेर्गव्यूतिर्घृत आ निषत्ता।6।

अग्नये ब्रह्म ऋभवस्ततक्षुरग्निं महामवोचामासु वृक्तिम्। अग्ने प्राव जरितारं यविष्ठाग्ने महिद्रविणमायजस्व ।7।

पंचामृत से भी अभिषेक करके शुद्ध जल से धोकर शुद्ध वस्त्र से जलबिन्दुओं का शोषण करें। इस प्रकार संस्कारित प्रतिमाओं/यन्त्रों को कलशों पर रखे गये चावल से भरे पात्र पर रखें -

'ॐ बृहस्पत इति मन्त्रस्य देवापी ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, आर्ष्टिषेणो देवताः, पुण्यजलस्मरणे विनियोगः। ॐ बृहस्पते प्रतिमे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वाऽअसि पूषा। आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वांत्सपर्जन्यं शन्तनवे वृषाय।।' कलश को स्पर्श करते हुये पुण्यनदी व समुद्र के जल का स्मरण करें -

**'सर्वे समुद्रास्सरितस्तीर्थानि जलदा सदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारिकाः।1।
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽअस्मिन्सन्निधिं कुरु।2।**

6.10) **वास्तुहोमे प्रधान आहुतयः -**

संकल्प करने हेतु आचमन कर प्राणायाम करके देशकाल के कथनपूर्वक **'ॐ अस्य वास्तोः शुभतासिद्ध्यर्थं सग्रहवास्तुमखं करिष्ये।'** पूर्वोक्त प्रकार से पुनः अग्नि की स्थापना कर अन्वाधान करने केलिये संकल्प करें -

'ॐ करिष्यमाणस्य सग्रहवास्तुहोमकर्मणि देवतापरिग्रहार्थं अन्वाधानं करिष्ये। अंगदेवताः सह प्रधानदेवताः सर्वाः सन्निहिताः सन्तु एवं सांगेन कर्मणा सद्यो यक्ष्ये। ॐ अस्य व्याहृतिमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः, बृहती छन्दः, प्रजापति देवता अन्वाधानकर्मणि विनियोगः। आघार और आज्यभाग की चार आहुतियाँ देकर द्रव्य त्याग का संकल्प करके अग्नि का पूजन करके वराहुति प्रदान करें। इसके बाद नवग्रहयाग, मृत्युंजय आहुति, विनायकादि देवताहुति,

इन्द्रादि दिक्पाल, क्षेत्रपालदेवताओं का हवन करके वास्तु मण्डल देवताओं केलिये आहुति दें (प्रत्येक आहुति के बाद '**इदं न मम**' कहें।)-

1. ॐ वास्तुब्रह्मणे नमः स्वाहा। 2. ॐ अर्यमाय नमः स्वाहा। 3. ॐ सवित्रे नमः स्वाहा। 4. ॐ विवस्वते नमः स्वाहा। 5. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा। 6. ॐ मित्राय नमः स्वाहा। 7. ॐ राजयक्ष्मणे नमः स्वाहा। 8. ॐ भूधराय नमः स्वाहा। 9. ॐ आपवत्साय नमः स्वाहा। 10. ॐ अद्भ्यो नमः स्वाहा। 11. ॐ सवित्रे नमः स्वाहा। 12. ॐ जयाय नमः स्वाहा। 13. ॐ रुद्राय नमः स्वाहा। 14. ॐ शिखिने नमः स्वाहा। 15. ॐ पर्जन्याय नमः स्वाहा। 16. ॐ जयन्ताय नमः स्वाहा। 17. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा। 18. ॐ सूर्याय नमः स्वाहा। 19. ॐ सत्याय नमः स्वाहा। 20. ॐ भृशाय नमः स्वाहा। 21. ॐ आकाशाय नमः स्वाहा। 22. ॐ वायवे नमः स्वाहा। 23. ॐ पूष्णे नमः स्वाहा। 24. ॐ वितथाय नमः स्वाहा। 25. ॐ गृहक्षताय नमः स्वाहा। 26. ॐ यमाय नमः स्वाहा। 27. ॐ गन्धर्वाय नमः स्वाहा। 28. ॐ भृंगराजाय नमः स्वाहा। 29. ॐ मृगाय नमः स्वाहा। 30. ॐ पितृभ्यो नमःस्वाहा। 31. ॐ दौवारिकाय नमः स्वाहा। 32. ॐ सुग्रीवाय नमः स्वाहा। 33. ॐ पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा। 34. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा। 35. ॐ असुराय नमः स्वाहा। 36. ॐ शेषाय नमः स्वाहा। 37. ॐ पापयक्ष्मणे नमः स्वाहा। 38. ॐ रोगघ्नाय नमः स्वाहा। 39. ॐ नागाय नमः स्वाहा। 40. ॐ मुख्याय नमः स्वाहा। 41. ॐ भल्लाटाय नमः स्वाहा। 42. ॐ सोमाय नमः स्वाहा। 43. ॐ फणिने नमः स्वाहा। 44. ॐ अदित्यै नमः स्वाहा। 45. ॐ दित्यै नमःस्वाहा। 46. ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा। 47. ॐ अर्यमाय नमः स्वाहा। 48. ॐ जम्भाय

नमः स्वाहा। 49. ॐ पिलिपिच्छाय नमः स्वाहा। 50. ॐ चरक्यै नमः स्वाहा। 51. ॐ विदार्यै नमः स्वाहा। 52. ॐ पूतनायै नमः स्वाहा। 53. ॐ पापराक्षस्यै नमः स्वाहा। 54. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा। 55. ॐ अग्नये नमः स्वाहा। 56. ॐ यमाय नमः स्वाहा। 57. ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा। 58. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा। 59. ॐ वायवे नमः स्वाहा। 60. ॐ सोमाय नमः स्वाहा। 61. ॐ ईशानाय नमः स्वाहा। 62. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा। 63. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा। 64. ॐ उग्रसेनाय नमः स्वाहा। 65. ॐ डामराय नमः स्वाहा। 66. ॐ महाकालाय नमः स्वाहा। 67. ॐ पिलिपिच्छाय नमः स्वाहा। 68. ॐ हेतुकाय नमः स्वाहा। 69. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः स्वाहा। 70. ॐ अग्निवैतालाय नमः स्वाहा। 71. ॐ असिवैतालाय नमः स्वाहा। 72. ॐ कालाय नमः स्वाहा। 73. ॐ करालाय नमः स्वाहा। 74. ॐ एकपादाय नमःस्वाहा। 75. ॐ भीमरूपाय नमः स्वाहा। 76. ॐ खेचराय नमः स्वाहा। 77. ॐ तलवासिने नमः स्वाहा। ॐ अस्य वास्तोष्पत इत्यादि चतुर्मन्त्रस्य मैत्रावरुण ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, वास्तोष्पति देवता होमकर्मणि विनियोगः।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवोभवानः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे, स्वाहा।1।
वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्भानो गोभिरश्वेभिरिन्दो। अजरासस्ते सख्येस्याम पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व, स्वाहा।2।
वास्तोष्पते शग्मया संसदाते सक्षीमहिरण्वया गातुमत्या। पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिस्सदा नः, स्वाहा।3।
अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्यविशन्। सखा सुषेव एधि नः, स्वाहा।4।

स्विष्टकृत् से प्रायश्चित्त पर्यन्त कर्म करके बलिदान करें –

वास्तुमण्डल पर आवाहित प्रत्येक देवता को अलग–अलग दोने में अथवा समस्त देवताओं के लिये एक ही पात्र में कूष्माण्ड खण्ड अथवा पायस अथवा उड़द + हल्दी युक्त भात का बलिदान और दिक्पालदेवताओं के लिये दीप सहित दही युक्त उड़द का बलिदान यजमान द्वारा करायें। प्रत्येक बलि अथवा समस्त बलि के संकल्प पूर्वक साक्षतजल को छोड़े। तदनन्तर वास्तुपुरुष केलिये घर के मुख्यद्वार के सामने नाना प्रकार के सुरुची नैवेद्य अथवा सदीप कूष्माण्ड बलि दें – '**ॐ नमो भगवते वास्तोष्पतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। भो वास्तोष्पते बलिं भक्ष दिशं रक्ष मम आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव।।**'

इसके बाद प्रार्थना करें –

'ॐ बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्यवसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः ।1।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतना शिवाः ।2।
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नागा विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ।3।
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ।4।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।
अन्ये च देवता सर्वा कल्याणं कुर्वन्तु सदा ।5।

जमीन पर प्रोक्षण इस मन्त्र से करें –

'शान्ता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं द्यौर्नो दैव्यमभयं नोऽस्तु शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो न आपो न विद्युतः परिपान्तु विश्वतः।
शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।'

सभी हाथ–पैर धोकर पुनः यागस्थल पर आकर पूर्णाहुति कर्म करें। सर्वप्रथम पूर्णफल की आहुति दें – '**ॐ याः फलिनीर्याऽ-अफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचंत्व-ꣳहसः, स्वाहा।।**'

तत्पश्पात् वायव्य दिशा में बैठकर शंखमुद्रा से घी से भरा नारियल स्रुचि में रखकर उल्टे स्रुवे से ढ़ककर गन्धाक्षत पुष्प से पूजा कर खड़े होकर पूर्णाहुति होम करें। अब उस केलिए निम्न विनियोग कर्हे – '**ॐ अस्य समुद्रादित्येकादशर्चस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः, अन्त्या जगतीत्रिष्टुबौ छन्दसी, आपो देवता, पूर्णाहुतिहोमे विनि योगः**। इस पूर्णाहुति सूक्त से पूर्णाहुति करें–

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमान्नुदारदुपांशुना सममृतत्त्वमानट्।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ।1।
वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नवोभिः ।
उपब्रह्मा श्रृणुवच्छस्यमानं चतुश्शृंगोऽअवमीद्गौर एतत् ।2।
चत्वारि शृंगा त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यान्नाविवेश ।3।
त्रिधाहितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्विन्दन्।
इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया पिष्पजद्वायुः ।4।
एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे।
घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ।5।
सम्यक्स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः।
एते अर्षन्त्यूर्म यो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः ।6।
सिन्धोरिव प्राध्वनेषु घनासो वातप्रमीयः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठाभिन्दनूर्मीभिः पिन्वमानः ।7।
अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्।
घृतस्य धारया समिधो न संतताजुषाणो हर्यति जातवेदाः ।8।

कन्या इव वहतु मेत वा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि।
यत्र सोमस्सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभितत्त्वयन्ते।9।
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्त्वतन्ते।10।
धामं ते विश्वं भुवनमधिश्रितमन्तस्समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अनामनीके समिथे य आभृतस्तमश्यम मधुमन्तं त ऊर्मिं, स्वाहा।11।

जल को छोड़ते हुये कहे-'**इदं न मम**'। होमशेष कर्म को यानि वसोधारा होम तथा उत्तरांग कर्म को पूरा करें। तत्पश्चात् आवाहित देवताओं की पुनः पूजा कर प्रार्थना करें -

'ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धाविवर्जितम्।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।1।
नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वविघ्नहरो भव।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे।2।'

6.11) नारियल समर्पित करें। प्रधान कलश के जल से सपरिवार यजमान पर **अभिषेक कर्म** करें - (नवग्रह के मन्त्रों से)

'ॐ आकृष्णेन (सत्येन - कृष्णयजुर्वेद) **रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।** (सूर्य), **ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽअमृतम्मधु।** - (शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद)- **आप्यायस्व स मे तु ते। विश्वतः सोम वृष्णियं। भवा वाजस्यसंगथे।** (चन्द्र), **ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति।** (मंगल), **ॐ उद्बुध्य-स्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टा पूर्वे संसृजेथा मयञ्च। अस्मिन्स-धास्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।**-(शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद) - **ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रतिजागृह्य नमिष्ठा पूर्ते**

संसृजे धाम यं च। पुनः कृण्वंस्त्वा पितरं युवानमन्वातांसि त्वसि नत्नु मे तम्। (बुध), ॐ बृहस्पते अतियदर्यो आर्हद्युमद्विभाति क्रतु मज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वसक्रत प्रजाततदस्मा सुद्रविणं धेहि चित्रम्। (गुरु), ॐ शुक्रन्तेऽअन्यद्यजतन्तेऽअन्यद्विषु रूपेऽहनि द्यौरिवासि। विश्वा हि मायाऽवसि स्वधा वो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु। (शुक्र), शन्नो देवीर भिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः। – (शुक्लयजुर्वेद) अथवा (ऋग्वेद) – ॐ शमग्निरग्निभि स्करच्छन्नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वा त्वरपा अप–स्रिधः। (शनि), ॐ कया नश्चित्र आभुवदूति सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।(राहु), ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। (केतु)। (वास्तुदेवता के मन्त्रों से) ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमी– वोभवानः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।1। वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्भानो गोभिरश्वेभिरिन्दो। अजरासस्ते सख्येस्याम पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व।2। वास्तोष्पते शग्मया संसदाते सक्षीमहिरण्वया गातुमत्या। पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिस्सदा नः।3। अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्यविशन्। सखा सुषेव एधि नः।4। (मार्जनमन्त्रों से) ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः।1। ॐ ता न ऊर्जे दधातन।2। ॐ महेरणाय चक्षसे।3। ॐ यो वः शिवतमो रसः।4। ॐ तस्य भाजयते हनः।5। ॐ उशतीरिव मातरः।6। ॐ तस्मा अरंगमाम वः।7। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ।8। ॐ आपो जनयथा च नः।9। (पौराणिक मार्जनमन्त्रों से)

सुरास्त्वामभिसिंचन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथः तथा संकर्षणो विभुः।1।

प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
अखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ।2।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ।3।
कीर्तिलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ।4।
एतास्त्वामभिसिंचन्तु देवपत्न्यैः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः ।5।
ग्रहास्त्वामभिसिंचन्तु राहुकेतुश्च पूजिताः।
देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ।6।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्यश्चाप्सरसां गणाः ।7।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
सरितः सागराः शैलाः तीर्थानि जलदा नदाः ।8।
एते त्वामभिसिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये।
सिद्धिर्भवतु ते देव यशो वीर्यं च सर्वदा ।9।

अमृताभिषेकोऽस्तु।

ॐ शन्तिः शान्तिः शान्तिः।।'

7. वास्तुमूर्ति/यन्त्र स्थापना

जिस राशि में रवि है उसके अनुसार जिस विदिशा में राहु का मुख हो उसके पृष्ठ कोण में यजमान के जानुपर्यन्त गहरा गड्ढा खोदकर उसके मध्य में गोमय से लीपें।

राहुमुख	ईशान	वायव्य		आग्नेय
देवालय	1-2-12 रवि	3-4-5 रवि	6-7-8 रवि	9-10-11 रवि
गृह	5-6-7 रवि	8-9-10 रवि	11-12-1 रवि	2-3-4 रवि
पृष्ठकोण	आग्नेय	ईशान	वायव्य	

चन्दनाक्षतपुष्पादि से भूमि पूजन कर सर्वधान्य और दहीभात उसमें डालें। '**ॐ वरुणाय नमः**' मन्त्र से शुद्धजल से भरें। प्रार्थना करें -

'ॐ पूजितोऽसि मया वास्तो होमाद्यैरर्चनैश्शुभैः।
प्रसीद पाहि विश्वेश देहि मे गृहजं सुखं।।
वास्तुमूर्ते (/वास्तुयन्त्र) नमस्तेऽस्तु भूशय्यानिरत प्रभो।
मद्गृहं धनधान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा।।'

(वास्तुमूर्ति/यन्त्र को गड्ढे में स्थापित करें)

'सशैलसागरां पृथ्वीं यथा वहसि मूर्धनि।
तथा मां वह कल्याणि संपत्संततिभिः सदा।।'

गड्ढे को मिट्टी से भरकर गोमय से लीपें।

8. अथ गृहप्रवेशः

उक्त प्रकार से प्रथम दिन प्रधानकलश स्थापना कर कर्माधिकारी बनकर द्वितीय दिन वास्तुशान्ति करके दूसरे दिन ही (यदि अपराह्नकाल में सुयोग्य मुहूर्त हो तो) अथवा तीसरे दिन प्रात:कालीन ब्रह्ममुहूर्त में / अन्य शुभमुहूर्त में गृहप्रवेश करना है। द्वार पर महालक्ष्मीपूजन करके गोपूजन करें। द्वार बन्द रखें अथवा पर्दा से ढक दें। प्रवेश कर्म पूरा होने तक मंगलवाद्य बजते रहना चाहिये। जल से भरा दूर्वा और पंचपल्लवों से युक्त तथा गन्धाक्षतसुधा से लिप्त व वस्त्र से वेष्टित पूर्णपात्र के ऊपर रखे हुये कलश को यजमानपत्नी द्वारा सिर पर धारण किये हुये और यजमान अपने हाथ में कुलदेवता/नर्मदेश्वर/शालिग्राम को लिये हुये तथा बन्धु–बान्धव सहित गन्ध, अक्षत, पुष्प, पुष्पमाला, दीप, ध्वज, दर्पण और लाजा – इन 8 मंगलद्रव्यों को अपने–अपने हाथ में लिये हुये सपरिवार गो को आगे – आगे प्रवेश कराते हुये प्रवेश करें। आचार्य व ब्राह्मण स्वस्तिसूक्त, कनिक्रदितिसूक्त, चूर्णिका व मंगलाष्टक का पाठ करते रहें। पर्दा हटाकर अथवा द्वार खोल कर गौ को प्रवेश कराते हुये उसके पीछे–पीछे यजमान सपत्नीक सर्वप्रथम दाहिने पैर को अन्दर रखते हुये प्रवेश करें। प्रवेश करके गुड़ व जीरा को घर के अन्दर बिखेरें। गृह के मध्य में पूर्णकुम्भ को स्थापित करें और गृहस्थैर्य केलिये ब्राह्मणों से संक्षिप्त पुण्याहवाचन करायें। आचार्य व ब्राह्मणों की पूजा करके यथाशक्ति वस्त्र, ताम्बूल, दक्षिणा आदि देकर आशीर्वाद लें । ब्राह्मण 3 बार कहें – '**ॐ शिवं वास्तु**।' आचार्य व ब्राह्मणों को सदक्षिणा भोजन खिलाकर आमन्त्रित सभी को भोजन खिलायें। इस प्रकार गृहप्रवेश कर्म पूरा होता है।

परिशिष्ट भागः

1. नित्य और वार्षिक वास्तु पूजन

गृहप्रवेश करने के बाद घर में सदा सुख शान्ति हो इस के लिये समय-समय पर विशेष अनुष्ठान, व्रत, मंगलकार्य (सत्यनारायण पूजा, भागवत पाठ, रामायण पाठ आदि), सन्त- महात्माओं का सत्संग, ब्राह्मण-अतिथि भोजन, दान आदि पुण्य कर्म करते रहना चाहिये। फिर भी नित्य वास्तु पूजन और वार्षिक वास्तु पूजन का विधान किया गया है ताकि नित्य शुभवृद्धि हो और विद्या-लक्ष्मी-सन्तान आदि की स्थिरता सुनिश्चित हो। शौनक महर्षि कृत ऋग्विधान नामक ग्रन्थ में इसके विधि-विधान बताये हैं, जो निम्न प्रकार से है।

(क) नित्यवास्तुपूजन

प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व स्नान करने से पहले पति/पत्नी घर के मुख्य द्वार के सामने के कुछ भाग को पानी से धोवें (और गोबर से लीपें) व रंगोली यानि कमल आदि शुभ चिह्न बनायें। तत्पश्चात् स्नान करके पति-पत्नी दोनों (अथवा एक) शुद्धवस्त्र पहनकर एक थाली में कुंकुम, हल्दी, गन्ध, दीपक, अक्षत, धूप, पुष्प आदि यथाशक्ति पूजा सामग्री एक लोटा जल के साथ मुख्य द्वार पर आयें और बाहर से पूजा आरम्भ करें। पुष्पाक्षत हाथ में लेकर हाथ जोड़कर गणेश भगवान्, कुलदेवता, इष्टदेवता और द्वार पर स्थापित देवता का (यदि इनके ध्यान करने का श्लोक/मन्त्र आदि याद हो तो उनका उच्चारण करते हुये) स्मरण करें और द्वार के सामने पुष्पाक्षत को रखें। '**ॐ वास्तुदेवताभ्यां नमः**' अथवा अपने इष्टदेवता के मन्त्र से ही पूजा करें। लोटे के जल से द्वार के निचले भाग (वासल) को धोवें और कुंकुम व हल्दी की बिन्दी दोनों किनारे व बीच में लगायें और उस पर गन्ध, अक्षत और पुष्प

से पूजा करें। धूप और दीप दर्शाकर प्रणाम करें। धूप को द्वार पर ही छोड़कर दीप आदि शेष सामग्री के साथ दाहिने पैर को पहले अन्दर रखते हुये प्रवेश करें।

(ख) वार्षिकवास्तुपूजन

'कुर्वीत वास्तुशमनं मध्ये गोष्ठस्य धर्मवित्।
पुष्पैर्गन्धैश्चमाल्यैश्चवानस्पतैतथौषधैः।722।
वास्तु सर्वं प्रविकिरेत्सप्तधान्यैस्तथैव च।
वास्तोष्पतिं यजेच्चात्र पायसेन बृहस्पतिं।723।
औदुम्बरपलाशैश्च बलिं प्रतिदिशं हरेत्।
सूर्यो वायुर्यमपितरो वरुणो निर्ऋतिश्च।724।
सोमो महेन्द्र इत्येता दिक्षु दिग्देवताः स्मृताः।
दद्याद्दानं ब्राह्मणेभ्यः शिवं भवतु वास्त्विति।725।
प्रतिसंवत्सरं कार्यं गृहे वै गृहमेधिना।
यद्येवं सविधं नान्यदनुक्तमपि किंचन।726।'

(अर्थः- धर्मवेत्ता गृहस्थ अपने घर की सब प्रकार की सुख शान्ति केलिये प्रतिवर्ष घर के मध्य में वास्तु शान्ति करें। पुष्प, गन्ध, पुष्पमाला, सप्तधान्य, वनस्पति और औषधियों को घर के बीच (ब्रह्मस्थान) में पत्तल पर फैलायें। पायस से बृहस्पति के लिये और वास्तु केलिये रूई व मोतियों से हवन करें। सूर्य, वायु, यम, पितृगण, वरुण, निर्ऋति, सोम और इन्द्र को 8 दिशाओं में बलि दें। ब्राह्मणों को भोजन खिलाकर दान दें। अन्त में '**शिवं भवतु वास्तु**' – ऐसा बोलें। जवाब में ब्राह्मण कहें – '**शिवमस्तु वास्तु**'। इस विधि से ही करें अन्य अनुक्त कुछ भी न करें।)

अथ प्रयोगः –

यजमान संकल्प पूर्वक अपने घर के बीच में सप्त धान्य के ऊपर कलश की स्थापना करें और उसमें बृहस्पति, वास्तुपुरुष और

अष्टदिक्पालों का आवाहन करें। गन्धादि से कम से कम पंचोपचार पूजन करें। ऊपर बतायी गयी विधि से अग्नि की स्थापना करके अन्वाधान तक का कर्म करें। वास्तोष्पति केलिये पायसाज्य, उदुम्बरसमिदाज्य, पलाशसमिदाज्य और अपामार्ग+चरु+आज्य से 27X4 =108 आहुति दें। तथा बृहस्पति केलिये पायसाज्य, उदुम्बरसमिदाज्य, पलाशसमिदाज्य और अपामार्ग+चरु+आज्य से 27X4 =108 आहुति दें। तथा अन्वाधान के समान प्रधान आहुति देकर बलिदान पूर्वक पूर्णाहुति पर्यन्त कर्म करें। ब्राह्मणों को दान, भोजन, सम्मान आदि देकर यजमान कहे – '**शिवं भवतु वास्तु**'। जवाब में ब्रह्मण कहें – '**शिवमस्तु वास्तु**'।

2. यजुर्वेदीयरक्षोघ्नहोममन्त्राः

(18 आहुति घी की दें) **ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजे वामवाँ॒ इभेन। तृष्वीमनुप्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः।।– रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।1। ॐ तव भ्रमास आशुष्या पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः। तपूँ॒ष्यग्ने जुह्वा पतंगा न संदितो विसृज विष्वगुल्काः।।– रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।2। ॐ प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितवो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः। यो नो दूरे अघशँ॒सो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरादधर्षीत्।।– रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।3। ॐ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्यमित्राँ॒ ओषतात्तिग्महेते। यो नो अरातिँ॒समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्।।– रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।4। ॐ ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने। अवस्थिरा तनुहि यातु जानां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून्।।– रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।5। ॐ स ते जानाति**

सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत्। विश्वन्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्यर्यो विदुरोऽभिद्यौत्।।- रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।6। ॐ सेदग्नेऽअस्तु सुभगस्सुदा नुर्यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः। पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सा सदिष्टिः।।- रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।7। ॐ अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाश्सन्ते वावाता जरतामियं गीः। स्वश्वास्त्वा सुरथामर्जये मास्मे क्षत्राणि धारयेरनु द्यून्।।- रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।8। ॐ इह त्वा भूर्या चरेदु पत्मन्दोषा वस्तर्दीदिवाꣳसमनु द्यून्। क्रीडन्तस्त्वा सुमनसस्सपेमाभि द्युम्ना तस्थिवाꣳसो जनानाम्।।- रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।9। ॐ यस्त्वा स्वश्वस्सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन। तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस्त आतिथ्यमानुषग्जुजोषत्।।- रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।10। ॐ महो रुजामि बन्धुता वचोभिस्तन्मा पितुर्गोतमादन्वियाय। त्वं नो अस्य वचसश्चिकिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः।।- रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।11। ॐ अस्वप्न जस्तरणयस्सुशेवा अतन्द्रासोवृका अश्रमिष्ठाः। ते पायवस्सध्र्यंचो निषद्याग्ने तव नः पान्त्वमूर।।- रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।12। ॐ ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तोऽअन्धं दुरितादरक्षन्। ररक्ष तान् सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः।।- रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।13। ॐ त्वया वयꣳसधन्यस्त्वोतास्तव प्रणेत्यश्याम वाजान्। उभाशꣳसा सूदय सत्यता तेऽअनुष्ठुया कृणुह्यह्रयाण।। - रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।14। ॐ अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रतिस्तोमꣳशस्यमानं गृभाय। दहाशसो रक्षसः पाह्यस्मान्द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात्।।- रक्षोहाघ्ने स्वाहा ,

रक्षोहाघ्ने इदं न मम।15। ॐ रक्षोहणं वातिनमाजिघर्मि मित्रं प्रतिष्ठमुपयामि शर्म। शिशानो अग्निः क्रतुभिस्समि धसस नो दिवा स रिषः पातु नक्तं। रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।16। ॐ विज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा। प्रादेवी र्मायाससीते दुरेवाषिशीते श्रृंगे रक्षसे विनिक्षे। रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।17। ॐ उतस्वानासो दिविषन्वग्ने स्तिग्मायुधा रक्षसे हन्त वा उ। मदे चिदस्य प्ररुजन्ति भामान वरन्ते परिबाधो अदेवीः। रक्षोहाघ्ने स्वाहा, रक्षोहाघ्ने इदं न मम।18।

(प्रत्येक मन्त्र में 2 बार स्वाहा आया है। उनमें से प्रथम स्वाहा मन्त्र का हिस्सा है। अतः उसके बाद आहुति न दें, किन्तु दूसरे स्वाहा के बाद आहुति देना है। 5 आहुति घी की दें)–

ॐ ये देवाः पुरस्सदोऽअग्निनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽअवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा।।– देवेभ्योऽ अग्निनेत्रेभ्यो रक्षोहाभ्यः स्वाहा, देवेभ्योऽअग्निनेत्रेभ्यो रक्षोहाभ्य इदं न मम।1। ॐ ये देवाः दक्षिणसदो यमनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽअवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा।।– देवेभ्यो यमनेत्रेभ्यो रक्षोहाभ्यः स्वाहा, देवेभ्यो यमनेत्रेभ्यो रक्षोहाभ्य इदं न मम।2। ॐ ये देवाः पश्चात्सदस्सवितृनेत्रा रक्षोहणास्ते नः पान्तु ते नोऽअवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा।।– देवेभ्यो सवितृनेत्रेभ्यो रक्षोहाभ्यः स्वाहा, देवेभ्यो सवितृनेत्रेभ्यो रक्षोहाभ्य इदं न मम।3। ॐ ये देवाः उत्तरसदो वरुणनेत्रा रक्षोहणास्ते नः पान्तु ते नोऽअवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा।।– देवेभ्यो वरुणनेत्रेभ्यो रक्षोहाभ्यः स्वाहा, देवेभ्यो वरुणनेत्रेभ्यो रक्षोहाभ्य इदं न मम।4। ॐ ये देवाः उपरिषदो बृहस्पति नेत्रा रक्षोहणास्ते नः पान्तु ते नोऽअवन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा।।– उपरिषद्भ्यो देवेभ्यो बृहस्पतिनेत्रेभ्यो

रक्षोहाभ्यः स्वाहा, उपरिषद्भ्यो देवेभ्यो बृहस्पतिनेत्रेभ्यो रक्षोहाभ्य इदं न मम ।5।

(पुनः 5 आहुति घी की दें)–

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्शदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः ।।– दुर्गायै स्वाहा, दुर्गाया इदं न मम ।1। ॐ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टां। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः ।।– दुर्गायै स्वाहा, दुर्गाया इदं न मम ।2। ॐ अग्ने त्वं पारया नव्योऽ अस्मान्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। पूश्च पृथ्वी बहुला न ऊर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः ।।– दुर्गायै स्वाहा, दुर्गाया इदं न मम ।3। ॐ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेद स्सिन्धुं न नावा दुरिताऽअतिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽअस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ।।– दुर्गायै स्वाहा, दुर्गाया इदं न मम ।4। ॐ पृतना जितं सहमानमुग्रमग्निं हुवेम परमा सधस्थात्। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवोऽअतिदुरिताऽअत्यग्निः ।।– दुर्गायै स्वाहा, दुर्गाया इदं न मम ।5।

3. यजुर्वेदीयवास्तुहोममन्त्राः

(उदुम्बर, समित्, तिल, पायस और आज्य मिश्रित 4X27 =108 आहुति दें)

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवोभवानः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे, स्वाहा।1। वास्तोष्पते शग्मया संसदाते सक्षीमहिरण्वया गातुमत्या। पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिस्सदा नः, स्वाहा।2। अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्यविशन्। सखा सुषेव एधि नः, स्वाहा।3। वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्भानो गोभि रश्वेभिरिन्दो। अजरासस्ते सख्येस्याम पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व, स्वाहा।4।

(उक्त 4 मन्त्रों सहित निम्न मन्त्र से बिल्वखण्ड अथवा अन्य फल की आहुति दें)

ॐ वास्तोष्पते ध्रुवास्थूणां सत्रं सोम्यानाम्।
द्रप्सोभेत्तापुरां शश्वतीना मिन्द्रो मुनीनां सखा, स्वाहा।5।

विशेष ध्येयः– यजुर्वेदीय वास्तुमण्डल देवताओं के नामों को चतुर्थ्यन्त के साथ होम केलिये मूलभाग में ही दर्शाया गया है।

4. आगमोक्तवास्तुमण्डलदेवताः

(चित्र संख्या 5, पृ. सं. 137 में दर्शाये गये मण्डल को पीठ पर निर्माण करके चित्र संख्या 4 पृ. सं. 137 में दर्शाये गये रंगों को भर कर चित्र सं. 5 में दर्शाये गये संख्या क्रम से आवाहनादि करें।)

1अ. ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, 1. ॐ ईशानाय नमः, 2. ॐ पर्जन्याय नमः, 3. ॐ जयन्ताय नमः, 4. ॐ इन्द्राय नमः, 5. ॐ सूर्याय नमः, 6. ॐ सत्याय नमः, 7. ॐ भृशाय नमः, 8. ॐ अन्तरिक्षाय नमः, 9. ॐ अग्नये नमः, 10. ॐ पूष्णे नमः, 11. ॐ वितथाय नमः, 12. ॐ गृहक्षताय नमः, 13. ॐ यमाय नमः, 14. ॐ गन्धर्वाय नमः, 15. ॐ भृंगराजाय नमः, 16. ॐ मृगाय नमः, 17. ॐ पितृभ्यो नमः, 18. ॐ दौवारिकाय नमः, 19. ॐ सुग्रीवाय नमः, 20. ॐ पुष्पदन्ताय नमः, 21. ॐ वरुणाय नमः, 22. ॐ असुराय नमः, 23. ॐ शोषाय नमः, 24. ॐ रोगाय नमः, 25. ॐ वायवे नमः, 26. ॐ नागाय नमः, 27. ॐ मुख्याय नमः, 28. ॐ भल्लाटाय नमः, 29. ॐ सोमाय नमः, 30. ॐ अर्गलाय नमः, 31. ॐ दित्यै नमः, 32. ॐ अदित्यै नमः, 33. ॐ आपाय नमः, 34. ॐ आपवत्साय नमः, 35. ॐ अर्काय नमः, 36. ॐ सवित्रे नमः, 37. ॐ सावित्राय नमः, 38. ॐ विवस्वते नमः, 39. ॐ इन्द्राय नमः, 40. ॐ इन्द्रजयाय नमः, 41. ॐ मित्राय नमः, 42. ॐ रुद्राय नमः, 43. ॐ रुद्रजयाय नमः, 44. ॐ महीधराय नमः, 45. ॐ ब्रह्मणे नमः, 46. ॐ शर्वसन्ध्याभ्यां नमः, 47. ॐ अर्यमाय नमः, 48. ॐ जम्भकाय नमः, 49. ॐ पिलिपिच्छाय नमः, 50. ॐ चरक्यै नमः, 51. ॐ विदार्यै नमः, 52. ॐ पूतनायै नमः, 53. ॐ पापराक्षस्यै नमः, 54. ॐ देवग्रहेभ्यो नमः, 55. ॐ असुरग्रहेभ्यो नमः, 56. ॐ गन्धर्वग्रहेभ्यो नमः, 57. ॐ यक्षग्रहेभ्यो नमः, 58. ॐ पितृग्रहेभ्यो नमः, 59. ॐ नागग्रहेभ्यो नमः, 60. ॐ राक्षसग्रहेभ्यो नमः, 61. ॐ पिशाचग्रहेभ्यो नमः।

4 .1 आगमोक्तान्वाधानम्

आगमिक पद्धति से अग्नि उत्पत्ति की विधिः -

रुद्रयामल तन्त्रोक्त देवीरहस्य (11.7-17) के अनुसार आगम पद्धति से अग्नि स्थापना करने की यह विधि है।

'पूर्वस्यां दिशि सद्यन्त्रान्खनेत्कुण्डं त्रिकोणकम्।
हस्तैकविस्तृतं चाधो हस्तैकपरिमाणतः।।'

अर्थात् पूर्वदिशा में एक त्रिकोण कुण्ड (अन्य तन्त्र शास्त्र में योनि कुण्ड का भी विधान है।) का खनन करें। वह कुण्ड यजमान के हाथ के अनुसार तीनों भुजायें एक-एक हाथ लम्बी और एक हाथ गहरी होना चाहियें।

'कुण्डेऽस्मिन् विलिखेद्यन्त्रं त्र्यश्रं बिन्दुविराजितम्।
षट्कोणमष्टपत्रं च त्रिवृतं भूगृहांकितम्।।
ततः पूजां चरेत् देवि कुण्डचक्रस्य पार्वति।
यथोक्तविधिना येन साधको दीक्षितो भवेत्।।'

अर्थात् इस त्रिकोण कुण्ड में त्रिकोण बनाकर उसके मध्य में बिन्दु का अंकन करे। उसके बाहर षट्कोण, अष्टदल, तीनवृत्त और भूपुर बनाये। हे पार्वति! कुण्डस्थ चक्र की पूजा साधक अपनी दीक्षा में जिस प्रकार बताया गया है उस विधि के अनुसार ही करे। अथवा निम्न सामान्य विधि से करे -

'गणेशधर्मवरुणाः कुबेरसहितास्तथा।
चतुर्द्वारेषु सम्पूज्याश्चत्वारो द्वारपालकाः।।'

अर्थात् भूपुर के चारों द्वार पर पूर्वादि क्रम से गणेश, यम, वरुण और कुबेर की आवाहनादि पूर्वक पूजा करे - **ॐ गं गणेशाय नमः, ॐ यं यमाय नमः, ॐ वं वरुणाय नमः, ॐ कुं कुबेराय नमः।**

'माया च मोहिनी मत्ता माध्वी वह्निवल्लभा।
वर्तुली वीरसूर्वाम्या पूज्या अष्टदलस्थिताः।।'

अर्थात् अष्टदल में माया, मोहिनी, मत्ता, माधवी, वह्निवल्लभा, वार्ताली, वीरसू और वाम्या का पूजन करे। **ॐ मां मायायै नमः, ॐ मों मोहिन्यै नमः, ॐ मं मत्तायै नमः, ॐ मां माधव्यै नमः, ॐ वं वह्निवल्लभायै नमः, ॐ वां वार्ताल्यै नमः, ॐ वीं वीरसुवे नमः, ॐ वां वाम्यायै नमः।**

'अम्बालिकाम्बाबगला छिन्नशीर्षाम्बिका भगा।
षट्कोणमध्यगाः पूज्याः कुण्डचक्रे महेश्वरि।।'

अर्थात् हे महेश्वरि! कुण्डचक्र में स्थित षट्कोण में अम्बालिका, अम्बा, बगला, छिन्नशीर्षा, अम्बिका और भगा का पूजन करे। **ॐ ह्रीं अम्बालिकायै नमः, ॐ ह्रीं अम्बायै नमः, ॐ ह्रीं बगलायै नमः, ॐ ह्रीं छिन्नशीर्षायै नमः, ॐ ह्रीं अम्बिकायै नमः, ॐ ह्रीं भगायै नमः।**

'वह्निं वैश्वानरं चाग्निं त्रिकोणे पूजयेच्छिवे।
स्वाहाभगवतीं बिन्दौ जातवेदसमर्चयेत्।।'

अर्थात् हे शिवे! त्रिकोण में वह्नि, वैश्वानर और अग्नि की पूजा करे। **ॐ वह्नयै नमः, ॐ वैश्वानराय नमः, ॐ अग्नये नमः।** तथा बिन्दु में स्वाहा और जातवेद की पूजा करें। **ॐ स्वाहायै नमः, ॐ जातवेदसे नमः।**

'अग्निं मूलेन देवेशि वह्नेर्दशकलास्ततः।
तारं वह्निः शिवोऽब्धिश्च हृज्जं शक्तिर्महेश्वरि।।

अर्थात् हे देवेशि! हे महेश्वरि! बिन्दु में ही अग्नि की दस कलाओं का पूजन करे। **ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः, ॐ रं ऊष्मायै नमः, ॐ लं ज्वलिन्यै नमः, ॐ वं ज्वालिन्यै नमः, ॐ शं विस्फुलिंगिन्यै नमः, ॐ षं सुश्रियै नमः, ॐ सं सुरूपायै नमः, ॐ हं कपिलायै नमः, ॐ ळं हव्यवाहिन्यै नमः, ॐ क्षं कव्यवाहिन्यै नमः।** संपूर्ण चक्रका पूजन निम्न मन्त्र से करे -

'अग्ने वैश्वानरं ब्रूयाज्जटाभारेति संवदेत्।
भास्वरेति त्रिनेत्रेति ज्वालामुखपदं वदेत्।।

प्रज्वलेति युगं ब्रूयात्जातवेदसि संवदेत्।
ठद्वयं च संवेदने मन्त्रोऽयं वह्निवल्लभः।।'

अर्थात् अग्नि का यह प्रिय मूलमन्त्र है '**ॐ रं गं रूं जं सौः अग्ने वैश्वानर जटाभार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख प्रज्वल प्रज्वल जातवेद ठः ठः स्वाहा/नमः।**' अब कुण्डस्थ चक्र का पूजन इसी मन्त्र से गन्धाक्षतपुष्पादि से करे। आवाहनादि समस्त उपचारों को भी इसी मन्त्र से करे।

'ततो दिग्भैरवान् भूतानर्चयेत् कुसुमैः परम्।
ततो देवि प्रमथ्याग्निं कुण्डचक्रे कुलेश्वरि।।
बिन्दौ वह्निं समावाह्य मूलेनोज्ज्वालयेच्छिवे।
अग्निं संदीप्य मूलेन प्रणमेद्वह्निमुद्रया।।
मूलेनाहुतिभिर्वह्निं हुनेत् षोडशभिस्ततः।
अष्टोत्तरशतावृत्त्या दद्यदाज्येन पार्वति।।'

अर्थात् पूजित उस चक्र में 8 दिग्भैरवों का और भूतों का पूजन पुष्पों से करें। हे कुलेश्वरि! तत्पश्चात् अरणि मन्थन से अथवा अपनी दीक्षा की परम्परा के अनुसार स्मार्त विधि से अग्नि को प्रज्वलित कर चक्र मध्य में स्थित बिन्दु में स्थापित करें। हे शिवे! उसमें अग्नि देवता का आवाहनादि पूर्वक पूजन पूर्वोक्त अग्नि के मूलमन्त्र से गन्धाक्षतपुष्पादि से करके वह्नि मुद्रा को दर्शाये। पूर्वोक्त अग्नि की मूलमन्त्र से 16 आहुति घी की देकर अग्नि को प्रदीप्त करे। पुनः मूलमन्त्र से ही 108 आहुति घी देकर अग्नि को समस्त संस्कारों से संस्कारित होने की भावाना करें। (वह्निमुद्रा अर्थात् ज्वालिनी मुद्रा को श्रीयन्त्रपूजापद्धतिप्रकाश में देख लें।)

1. वास्तोष्पते प्रतिजानीहि, 2. वास्तोष्पते शग्मया–इति द्वाभ्यां पक्वहविषा; 3. वास्तोष्पते ध्रुवास्थूणां, 4. वास्तोष्पते प्रतरणो, 5. अमीवहा – इति षड्भिः; 6. जातवेद – इत्यादि पंचभिः; 7. सद्योजात – इत्यादि पंचभिः; 8. शन्न इन्द्राग्नी – इत्यादि पंचदर्शग्भिः; 9.

भूरादि व्याहृतिभिश्च एकैकवारं घृतेन जुहुयात्। 10. शन्नो देवेति मन्त्रेण प्रतिद्रव्यं 108 आहुति देयं, तानि च द्रव्याणि – शमीसमिदाज्यं, चर्वाज्यं, पंचगव्याप्लुतदूर्वाज्यं च। शेषेण स्विष्टकृदादि प्रणीता-विमोकान्तं कर्म कर्तव्यम्। वे मन्त्र इस प्रकार हैं –

1. **वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।1।।**
2. **वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या। पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।2।।**
3. **वास्तो पते ध्रुवा स्थूणां ऽसत्रं सोम्यानाम्। द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा।।1।**
4. **वास्तो पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्द्रो। अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व।।1।।**
5. **अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन्। सख सुशेव एधि नः।।1।। यदर्जुन सारमेय दतः मिषंग यच्छसे। वीव भ्राजन्त ऋष्टय उप स्रक्वेषु बप्सतो नि षु स्वप।।2।। स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुनः सर। स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मानु दुच्छुनायसे नि षु स्वप।।3।। त्वं सूकरस्य दर्दृहि तव दर्दर्तु सूकरः। स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मानु दुच्छुनायसे नि षु स्वप।।4।। सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः। ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः।।5।। य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः। तेषां स हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा।।6।।**
6. **जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः।।1।। तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः।।2।। अग्ने त्वं**

पारया नव्यो अस्मान् स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। मूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः।।3।। विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदस्सिन्धुं न नावा दुरिताऽतिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम्।।4।। पृतनाजितं सहमानमुग्रमग्निं हुवेम परमा सधस्थात्। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अतिदुरिताऽत्यग्निः।।5।।

7. सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नमः।।1।। वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथसनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।2।। अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यस्सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।3।। तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।4।। ईशानस्सर्वविद्याना-मीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।।5।।

8. शं न इन्द्रग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।।1।। शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु।।2।। शंनो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु।।3।। शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः।।4।। शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।।5।। शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु

शमादित्यभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्राभिरिह शृणोतु।।6।। शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सनतु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः।।7।। शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तुं। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।।8।। शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो हवित्रं शम्वस्तु वायुः।।9।। शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः।।10।। शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शंसरसवती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।11।। शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।12।। शं नो अज एकपाद देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा।।13।। आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रिमाणं नवीयः। शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः।।14।। ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः। ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।15।।

9. ॐ भूःस्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा – इति व्याहृतिभिः एकैकवारं घृतेन जुहुयात्।

10. शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शंसरसवती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।1।। इति मन्त्रेण प्रतिद्रव्यं 108 आहुति देयं, तानि च द्रव्याणि – शमीसमिदाज्यं, चर्वाज्यं, पंचगव्याप्लुतदूर्वाज्यं च। शेषेण स्विष्टकृदादि प्रणीताविमोकान्तं कर्म कर्तव्यम्।

5. मन्दिर, यज्ञवेदी तथा राजाओं के भवन केलिये प्रासाद वास्तु

वास्तु के प्रसंग में केवल गृहवास्तु का वर्णन करने से अपूर्णता न हो इसलिये मन्दिर निर्माण अथवा राजा का भवन निर्माण अथवा यज्ञ की वेदी निर्माण करने पर प्रासाद वास्तु का वर्णन करना उचित होगा। जो 64पद का होता है। उसकी संक्षिप्त प्रयोग विधि निम्न प्रकार से है।

अब यजुर्वेदीय पद्धति से (चित्र संख्या 6, पृष्ठ संख्या 139 में दर्शाये गये मण्डल को पीठ पर निर्माण करके रंग भर कर चित्र संख्या 7, पृष्ठ 140 में दर्शाये गये संख्या क्रम से आवाहनादि करें। इस 64 पद वास्तुमण्डल में वास्तुपुरुष की कल्पना करते हुये ईशानकोणस्थ पद के दक्षिणार्ध आदि में प्रदक्षिणा के क्रम से सिर आदि अंगों की कल्पना कर तत्तदंगों में स्थित तत्तद् कोष्टों में शिखी आदि देवताओं का आवाहन करें, क्योंकि कहा है कारिका में – **'ब्रह्माणमादितः कृत्वा शिखिनं वा क्रमेण तु।'** अर्थात् ब्रह्मा से अथवा शिखी से आरम्भ कर वास्तुदेवताओं की स्थापना करनी चाहिये। यहां हम शिखी से आरम्भ कर स्थापना क्रम को दर्शा रहे हैं।

1. ईशानकोणस्थ पद के दक्षिणार्ध में वास्तुपुरुष के सिर की भावना कर उसमें शिखी देवता का आवाहन करें –

   'ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।1। तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।2। शिखी कर्पूरधवलस्त्रिनेत्रो वृषवाहनः। वरत्रिशूलहस्तश्च वास्तोः शिरसि संस्थितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः शिखिने नमः शिखिनमावाहयामि। भो शिखिन् इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

2. उसके दक्षिण में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष की दाहिनी आंख की भावना कर उसमें पर्जन्य देवता का आवाहन करें –

'ॐ शन्नो वातः पवताᳬशन्नस्तपतु सूर्यः। शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु ।1। महाँ2ऽइन्द्रो यऽओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ2इव। स्तोमैर्वावृधे। उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्महेन्द्राय त्वा ।2। घनस्तडित्वान्पर्जन्यो नानावर्णपरिप्लुतः। ज्योतिर्धूमश्च वातात्मा वास्तोर्दक्ष दिशि स्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः पर्जन्याय नमः पर्जन्यमावाहयामि। भो पर्जन्य इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

3. उसके दक्षिण में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने कान की भावना कर उसमें जयन्त देवता का आवाहन करें –

'ॐ मर्माणि ते वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वाराजामृतेनानुव- स्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवामदन्तु ।1। उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्तिकेतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ।2। जटिलः श्मश्रुलः शीतः कमण्डल्वक्षसूत्रधृक्। जयन्तोऽ- ब्जासनो गौरो वास्तोर्दक्षे ह्यवस्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः जयन्ताय नमः जयन्तमावाहयामि। भो जयन्त इह आगच्छ इह तिष्ठ। '

4. उसके दक्षिण में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने अंस (दाहिनी गर्दन) की भावना कर उसमें कुलिशायुध (इन्द्र) देवता का आवाहन करें –

'ॐ आयान्त्विन्द्रो वसऽ उपनऽइह स्तुतः सधमादस्तु शूरः। वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वी द्यौर्नक्षत्रिमभिभूति पुष्यात् ।1। इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनाम्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ।2। इन्द्र ऐरावतारूढः पीतो दैत्यविमर्दनः। कुलिशाख्यकरो वास्तो-

र्दक्षिणांस समाश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाह यामि। भो इन्द्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

5. उसके दक्षिण में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने बाहु (कन्धा) की भावना कर उसमें सूर्य देवता का आवाहन करें –
'ॐ बणमहाँ2ऽअसि सूर्य बडादित्यमहाँ2ऽअसि। महस्ते सतो महिमापनस्यतेद्धा देवमहाँ2ऽअसि।1। सूर्य रश्मिर्हरिकेशः पुरस्ताज्ज्योतिरुदयाँ2ऽअजस्रम्। तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः।2। सूर्यो रक्तो ग्रहाध्यक्षो घृताङ्गो द्विभुजः प्रभुः। सप्ताश्व रथगो वास्तोर्दक्षबाहुसमाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्याय नमः समर्यमावाहयामि। भो सूर्य इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

6. उसके दक्षिण में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के पुनः दाहिने बाहु की भावना कर उसमें सत्य देवता का आवाहन करें –
'ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।1। सत्यो भूतहितो धर्मो वरदोऽभयपाणिकः। प्रसन्नाब्जासनो ऽब्जाभो दक्षदोरूप-मूलगः।2। ॐ भूर्भुवःस्वः सत्याय नमः सत्यमावाहयामि। भो सत्य इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

7. उसके दक्षिण में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष के दाहिने कूर्पर (ऊपरी कुहनी) की भावना कर उसमें भृश देवता का आवाहन करें –
'ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रु वस्तिष्ठा विचाचलिः। विशस्त्वा सर्वावाञ्छन्तु मात्वद्राष्ट्रमधि भृशत्।1। भायै दार्वाहारम्प्र-भायाऽअग्न्येधम्ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारन्देव लोकाय पेशितारम्मनुष्यलोकाय प्रकरितारꣳसर्वेभ्यो लोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऽऋत्यै वधा-

योपमन्थितारमेधाय वासः पल्पूलिम्प्रकामाय रजयित्रीम् ।2। भृशः पुष्पमान स्थः पुष्पज्येक्षुधनुःकरः । गौरो नादरतः कामी दक्षकूर्पर संस्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः भृशाय नमः भृशमा-वाह यामि। भो भृश इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

8. उसके दक्षिणाग्नेय में स्थित पद के आधे भाग में वास्तुपुरुष के दाहिने प्रबाहु (कुहनी के जोड़) की भावना कर उसमें आकाश देवता का आवाहन करें -

'ॐ यावां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञम्मिमिक्षितम्। उपयाम गृहीतोस्यश्विव- भ्यां त्वैषतेयाकनिर्माध्वीभ्यान्त्वा ।1। हथ्ठसः शुचिषद्वसुरन्त-रिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषसद्वरसदृतसद्व्योम-सदब्जा गोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽ ऋतम्बृहत् ।2। शंखचक्रधरो नित्यमसितः स्वस्तिकासनः। सशब्दः सर्वगन्तव्यो कूर्पराधः समाश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः आकाशय नमः आकाशमा-वाहयामि। भो आकाश इह आगच्छ इह तिष्ठ। ॐ आकाशाय नमः।'

9. उसके पश्चिम में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष के पुनः दाहिने प्रबाहु (निचली कुहनी) की भावना कर उसमें वायु देवता का आवाहन करें -

'ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वा-न्त्सोमपीतये ।1। अप्स्वग्ने सधिष्टवसौषधीरनुरुद्यसे। गर्भे सञ्जायसे पुनः ।2। वायुधूम्रो मृगारूढो जगत्प्राणश्चलो युवा। ध्वजांकुशे च बिभ्राणो दक्षबाहुसमाश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि। भो वायो इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

10. उसके पश्चिम में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष के दाहिने मणिबन्ध की भावना कर उसमें पूषा देवता का आवाहन करें-

'ॐ पूषन्तवव्रते वयन्नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्तऽइह-स्मसि ।1। पूषा पंचाक्षरेण पंचदिशऽउदजयत्ताऽ उज्जेषꣳसविता षडक्षरेण षड्तूनुदजयत्तानुज्जेषम्बृह स्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रामुदजयत्तामुज्जेषम् ।2। महास्वनः शोणवर्णो द्विभुजोऽब्जकमण्डलुः। पूषा गजासनो दक्ष मणिबन्धसमाश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः पूष्णे नमः पूषणमा-वाहयामि। भो पूषन्निह आगच्छ इह तिष्ठ। ॐ पूष्णे नमः।'

11. उसके पश्चिम में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने पार्श्व (ऊपरी बगल) की भावना कर उसमें वितथ देवता का आवाहन करें –

'ॐ तत्सूर्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्या कर्त्तोर्विततꣳसञ्जभार। यदेदयुक्तहरितः सधस्थाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ।1। सविता प्रथमेऽअहन्नग्निर्द्वितीये वासुस्तृतीयऽ-आदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमाः पंचमऽऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे मित्रो नवमे वरुणो दशमऽ इन्द्रऽएकादशे विश्वेदेवा द्वादशे ।2। वितथश्चेन्द्रचापाभो कुबेरप्रति-मासमः। मलवासाऽलसो रिक्तकरो दक्षिण पार्श्वगः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः वितथाय नमः वितथमावाहयामि। भो (निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि। भो निर्ऋते) **वितथ इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

12. उसके पश्चिम में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने पार्श्व (निचली बगल) की भावना कर उसमें गृहक्षत देवता का आवाहन करें –

'ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत। अस्तोषतस्व भानवो विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्दते हरी ।1। गृहा मा बिभीतमा-वेपद्ध्वमूर्जम्बिभ्रतऽएमसि। ऊर्जम्बिभ्रद्ध्वः सुमनाः सुमेधा

गृहानैमि मनसा मोदमानः ।2। गृहरक्षकरक्तांगो गदासि-वरचर्मभृत्। पंचास्यवाहनः क्रूरो वास्तोर्दक्षकटिस्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः गृहक्षताय नमः गृहक्षतमावाहयामि। भो गृहक्षत इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

13. उसके पश्चिम में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के दाहिने ऊरु की भावना कर उसमें यम देवता का आवाहन करें –

'ॐ यमाय त्वां गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ।1। असि यमोऽअस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ।2। रक्ताक्षो महिषारूढो दण्डपाशधरो यमः। धर्मज्ञो जनसंकाशो वास्तोर्दक्षोरुसंश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः यममावाहयामि। भो यम इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

14. उसके पश्चिम में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की दाहिनी जानु की भावना कर उसमें गन्धर्व देवता का आवाहन करें –

'ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः। इन्द्रस्य बाहुरेसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः। मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्टै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः ।1। मुनिवेशधरो गौरो गन्धर्वो ध्यानवान्छुचिः। वीणाकमण्ड लुधरो वास्तोर्वै दक्षजानुगः ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः गन्धर्वाय नमः गन्धर्वमावाहयामि ।भो गन्धर्व इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

15. उसके पश्चिम में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष की दाहिनी जंघा की भावना कर उसमें भृंगराज देवता का आवाहन करें –

'ॐ सौरीवलाकाशार्ङ्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै

शौरिः पुरुष वाक्छ्वाविद्धौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते शुकः पुरुषवाक् ।1। कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति। कर्मणे वां देवानाम् ।2। सुनीलांशुर्महाकायः कुंकुमारुणविग्रहः। खट्वाखेटधरो वास्तोर्दक्षजंघा समाश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः भृंगराजाय नमः भृंगराजमावाहयामि। भो भृंगराज इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

16\. उसके पश्चिम-नैर्ऋत्य में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष के दाहिने स्फिच (नितम्ब) की भावना कर उसमें मृग देवता का आवाहन करें –

'ॐ मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतऽआजगंथा परस्याः। सृकꣳसꣳशायपविभिंद्ररतिग्मं विशत्रूताद्विविमृधो-नुदस्व ।1। चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ।2। मृगो गौरो भूषितांगो वरदाभय पाणिकः। वरासनश्चारुनेत्रो वास्तो-र्दक्षस्फिचि स्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः मृगाय नमः मृगमा-वाहयामि। भो मृग इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

17\. उसके उत्तर में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष के दोनों पैर की भावना कर उसमें पितृ देवता का आवाहन करें –

'ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशंतः समिधी महि। उशन्नुशत ऽआवह पितृन्हविषेऽअत्तवे ।1। पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्व धा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपिता महेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। क्षिन्पितरोऽमीमदन्त पितरो तीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ।2। कुशपिण्ड धराः स्वच्छाः पितरः श्यामलाः कृशाः। महोदराः सोम लोकवासिनो वास्तुपादगाः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः पितृभ्यो नमः पितरमा-वाहयामि। भो पितर इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

18. उसके उत्तर में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष के बायें स्फिच (नितम्ब) की भावना कर उसमें दौवारिक देवता का आवाहन करें– '**ॐ द्वेविरूपे चरतः स्वर्थेऽअन्यान्यावत्स मुपधापयेते। हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रोऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः।1। आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रेराजन्यः शूरऽ-इषव्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वा-नाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमान-स्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमौ नः कल्पताम्।2। दौवारिको वेत्रमुद्राधरो भूतिविभूषितः। मुक्ताभः पादुकारूढो वास्तो-र्वामस्फिचिस्थितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः दौवारिकाय नमः दौवारिकमावाहयामि। भो दौवारिक इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

19. उसके उत्तर में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायी जंघा की भावना कर उसमें सुग्रीव देवता का आवाहन करें –
'**ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳरुद्राऽउपश्रिताः। तेषाꣳसहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि।1। सुसमिद्धाय शोचिषे घृतन्तीव्रञ्जुहोतन। अग्नये जातवेदसे।2। पद्मासनो हेम वर्णः सुग्रीवोऽलंकृतः शुभः। द्विभुजः कामदो वास्तोर्वाम जंघा-समाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः सुग्रीवाय नमः सुग्रीव मावाह-यामि। भो सुग्रीव इह आगच्छ इह तिष्ठ।**'

20. उसके उत्तर में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायी जानु की भावना कर उसमें पुष्पदन्त देवता का आवाहन करें –
'**ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः।1। नक्षत्रे-भ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाऽअहोरात्रेभ्यः स्वाहार्द्धमासे-**

भ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहाऽऋतुभ्यः स्वाहार्त वेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याꣳस्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा ।2। पुष्पदन्तोऽभ्रसंकाशः खगः पक्षविराजितः। महाबलो व्यालहस्तो वास्तोर्वै सव्यजानुगः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः पुष्पदन्ताय नमः पुष्पदन्तमावाहयामि। भो पुष्पदन्त इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

21. उसके उत्तर में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायी ऊरु की भावना कर उसमें वरुण देवता का आवाहन करें –

'ॐ इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामस्युराचक्रे ।1। वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुण स्यऽऋतसदन्न्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद ।2। वरुणः पाथसीनाथो नक्रस्थः पाटलांशुकः। शंखपाशधरः शुभ्रो वास्तोर्वामोरुसंस्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि। भो वरुण इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

22. उसके उत्तर में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायी पार्श्व (निचली बगल) की भावना कर उसमें असुर नामक देवता का आवाहन करें–

'ॐ यमश्विना नमुचेरासुरा दधि रसरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय। इमन्तꣳशुक्रं मधुमन्तमिदꣳ सोमꣳराजानमिह भक्षयामि ।1। ये रूपाणि प्रतिमुच्यमाना ऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भवन्त्य ग्निष्ठाल्ँलोकात्प्रणुदात्यस्मात् ।2। असुरो मेचकाभासः करालास्योऽंगवर्जितः। सिंहारूढ–

श्चारुणाक्षोर्वास्तोर्वाम कटिस्थित: ।3। ॐ भूर्भुव:स्व: असुराय नम: असुरमावाहयामि। भो असुर इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

23. उसके उत्तर में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष की बायी पार्श्व (ऊपरी बगल) की भावना कर उसमें शेष देवता का आवाहन करें – '**ॐ याऽइषवो यातुधानानां ये वा वनस्पती ᳪरनु। ये वावटेषु शेरते तेभ्य: सर्पेभ्यो नम: ।1। असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शेषाय स्वाहा सᳪसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लु-चाय स्वाहा दिवापतयते स्वाहा ।2। शेष: कृष्णतनु: शूरो वरशूलेषुचापभृत्। गृध्रपक्ष: कृशो दीर्घो वास्तोर्वाम-पर्श्वग: ।3। ॐ भूर्भुव:स्व: शेषाय नम: शेषमावाहयामि। भो शेष इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

24. उसके उत्तर–वायव्य में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष के बायी मणिबन्ध की भावना कर उसमें पाप देवता का आवाहन करें – '**ॐ एतत्ते रुद्रावसंतेन परो मूजवतोतीहि अवतत धन्वा पिनाका वस: कृत्तिवासाऽहिᳪसन्न: शिवोतीहि।1। अग्ने युक्ष्वाहि ये तवाश्चासो देवसाधव:। अरं वहन्ति मन्यवे ।2। पापयक्ष्मा धूम्रवर्णो गदावरदमुद्रित:। कपोतवाहनो वाममणिबन्धसमाश्रित: ।3। ॐ भूर्भुव: स्व: पापाय नम: पापमावाहयामि। भो पाप इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

25. उसके पूर्व में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष की बायीं निचली कुहनी की भावना कर उसमें रोग देवता का आवाहन करें – '**ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्रन्नीललोहित। आसाम्प्र जानामेषां पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोचन: किंचनाममत्।1। शिरो मे**

श्रीर्यशो मुखन्त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणोऽ-अमृतꣳसम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ।2। रोगः पाशकरो व्यक्तः क्षयात्माव्याधिसंग्रहः। दुष्कर्ममर्दनो वास्तोवामोपबाहु-संश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः रोगाय नमः रोगमावाहयामि। भो रोग इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

26. उसके पूर्व में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष की बायी कुहनी के जोड़ की भावना कर उसमें अहिर्बुध्न्य देवता का आवाहन करें- **'ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पु माꣳसं परिपातु विश्वतः ।1। नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽ-अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।2। अहिराजोऽब्जगः-शुभ्रः फणामणिविराजितः। अक्षकुण्डी धरो वास्तोर्वाम बाहु संश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः अहिर्बु ध्न्याय नमः अहिर्बु-ध्न्यमावाहयामि। भो अहिर्बुध्न्य इह आ गच्छ इह तिष्ठ।'**

27. उसके पूर्व में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बार्यी ऊपरी कुहनी की भावना कर उसमें मुख्य देवता का आवाहन करें - **'ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳसहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिरो नः सुमना भव।।1। इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्व-मघ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मामावस्तेन-ऽर्शत माघशꣳसोद्ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौ स्यातबह्वीर्य-जमानस्य पशून्पाहि ।2। मुख्यो गौरो विश्व कर्मा कुम्भाक्षः पुष्पसूत्रभृत्। निपुणस्तु लुलायस्थो वामकूर्परसंश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः मुख्याय नमः मुख्यमावाहयामि। भो मुख्य इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

28. उसके पूर्व में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बार्यी बाहु की

भावना कर उसमें भल्लाट देवता का आवाहन करें -
'ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्न नातुरम् ।1। घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद घृताच्यसि ध्रुवानाम्ना सेदम्प्रियेण धाम्ना प्रियꣳसदऽआसीद। ध्रुवाऽसदन्नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहि यज्ञम्पाहि यज्ञपतिम्पाहि मां यज्ञन्यम् ।2। भल्लाटश्चन्द्र-संकाशो वरमुद्रागदाधरः। हयपुत्रो वास्तु पुंसोर्वामबाहु-समाश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः भल्लाटाय नमः भल्लाटमा-वाहयामि। भो भल्लाट इह आगच्छ इह तिष्ठ।।'

29. उसके पूर्व में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष के बायें बाहु (कन्धा) की भावना कर उसमें सोम देवता का आवाहन करें - **'ॐ सोमꣳराजानमवसेऽअग्निमन्वारभामहे। आदित्या-न्विष्णुꣳसूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ।1। वयꣳ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ।2। सोमो नरविमा-नस्थो वरहस्तो गदाधरः। गौरो महोदरः श्रीमान् वास्तोः सव्यभुजाश्रयः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय नमः सोममा-वाहयामि। भो सोम इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

30. उसके पूर्व में स्थित दो पद में वास्तुपुरुष की बायीं अंस (गर्दन) की भावना कर उसमें सर्प देवता का आवाहन करें - **'ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि। योऽअस्कभायदुत्तरꣳसधस्थं विचक्रमाणस्त्रे धोरुगायो विष्णवे त्वा ।1। कुम्भमालाधरां द्वाभ्यां चतु र्बाहुः फणामणिः। सर्पो रक्तभ्रमो वास्तोर्वामांसदेश संश्रितः ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पाय नमः सर्पमावाहयामि। भो सर्प इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

31. उसके पूर्व में स्थित ड़ेढ़ पद में वास्तुपुरुष के बायें कान की भावना कर उसमें अदिति देवता का आवाहन करें –

'ॐ इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः कामधारणं भूयात्।1। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमादितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवाऽअदितिः पंचजनाऽअदितिर्जातमदिति र्जनित्वम्।2। सूत्रवज्रांकुशाभीतिर्बिभ्राणा रत्नभूषिता। अदितिश्चारुगौरांगी वास्तोर्वामश्रुतिस्थिता।3। ॐ भूर्भुवःस्वः अदितये नमः अदितिमावाहयामि। भो अदिते इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

32. उसके पूर्व में स्थित आधे पद में वास्तुपुरुष की बायीं आंख की भावना कर उसमें दिति देवता का आवाहन करें –

'ॐ ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽ अस्य। येभ्यो नऽऋते पवते धामकिंचन न ते दिवो न पृथिव्याऽअधिस्नुषु।1। दितिस्तु श्यामवर्णांगी माला त्रिशूलधारिणी। वृषपत्रा वास्तुपुंसोर्वामलोचन संस्थिता।2। ॐ भूर्भुवःस्वः दितये नमः दितिमावाहयामि। भो दिते इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

33. मध्य में स्थित पदों में से ईशान पद के उत्तरार्ध पद में अपः देवता का आवाहन करें –

'ॐ आपो हिष्ठामयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।1। आपो नीला : पीतवस्त्रा धनगाः पद्मभूषणाः। अब्जाक्षपाशपत्राणि बिभ्रन्त्यो वास्तुवक्त्रगाः।2। ॐ भूर्भुवःस्वः अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि। भो आप इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

34. मध्य में स्थित पदों में से ईशान पद के दक्षिणार्ध पद में आपवत्स देवता का आवाहन करें –

'ॐ आतेवत्सो मनोजमत्परमाचित्सधस्थात्। अग्ने त्वं कामया गिरा।1। इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्याच मृडय। त्वामवस्युराचके।2। आपवत्सो महातेजा द्विभुजो सिंहवाहनः। घटपाशधरो गौरो वास्तेर्वक्षसि संस्थिताः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः आप वत्साय नमः आपवत्समावाहयामि। भो आपवत्स इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

35. उसके दक्षिण में स्थित दो पद में अर्यमा देवता का आवाहन करें – **'ॐ यदद्य सूरऽउदितेनागा मित्रोऽर्यमा। सुवति सविता भगः।1। ॐ अर्यमणम्बृहस्पति मिन्द्रन्दानाय चोदय। वाचं विष्णुꣳसरस्वतीꣳसवितारं च वाजिनꣳस्वाहा।2। अर्यमा रक्तवर्णस्तु दीप्तिम्राथ वाहनः। द्विपद्मसूत्रखट्वांगपाणि-र्दक्षस्तनश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णे नमः अर्यमणमा-वाहयामि। भो अर्यमन् इह तिष्ठ।'**

36. उसके दक्षिण में स्थित आग्नेय पद के आधे पद में सावित्र देवता का आवाहन करें –
'ॐ हस्तऽआधाय सविता विभ्रदभिꣳहिरणमयीम्। अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअद्ध्याभरदानुष्टुभेन छन्दसां-गिरस्वत्।1। वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामदुधक्षः।2। सावित्रो द्विभुजः पद्मगौरः पद्मासन स्थितः। वेदपाठरतो वास्तोदक्षहस्ततलाश्रितः।3। ॐ भूर्भुवःस्वः सावित्राय नमः सावित्रमावाहयामि। भो सावित्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

37. आग्नेय पद के पश्चिम में स्थित आधे पद में सविता देवता का आवाहन करें –
'ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं

तन्नआसुव ।1। उद्ुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ।2। सविता जनिता विश्वं द्विबाहुर-रुणच्छविः। रथगामी पद्मपाणिर्वास्तोर्क्रोडन्तर स्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः सवित्रे नमः सवितारमावाहयामि। भो सवितरिह आगच्छ इह तिष्ठ।'

38. उसके पश्चिम में स्थित दो पद में विवस्वान् देवता का आवाहन करें – '**ॐ विवस्वन्नादित्यैषते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व। श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायते विन्दतेव स्वधा विश्वाहारप एधते गृहे ।1। ॐ असि यमोऽअस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ।2। विवस्वान्द्विभुजः शोणद्युतिर्दण्डी च पंकजी। कर्म साक्षी रथी वास्तोः क्रोड दक्षिणभागतः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः विवस्वते नमः विवस्वन्तमावाहयामि। भो विवस्वन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

39. उसके पश्चिम में स्थित नैर्ऋत्य पद के आधे पद में विबुधाधिप देवता का आवाहन करें –
'**ॐ सबोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन्। युयोद्ध्यस्मद् द्वेषांसि विश्व कर्मणे स्वाहा ।1। सहस्राक्षो गजारूढः पीतांगो विबुधाधिपः। वज्रोत्पलकरः श्रीमान्वास्तोजठरवामगः ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः विबुधाधिपाय नमः विबुधाधिपमावाहयामि। भो विबुधाधिप इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

40. उसके उत्तर में स्थित आधे पद में जयन्त देवता का आवाहन करें – '**ॐ अषाढंय्युत्सु पृतनासु पप्रिꣳस्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम्। भरेषुजाꣳसुक्षितिꣳसुश्रवसं जयन्तं त्वामनुमदेम-सोम ।1। यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा**

पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽ उपस्तुत्यम्ही-जातन्तेऽअर्वन् ।2। जयो वज्रधरो देवो महोग्रोऽतुलविक्रमः। पीतवर्णो गजारूढो वास्तुदेहसमाश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः जयाय नमः जयमावाहयामि। भो जय इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

41. उसके उत्तर में स्थित दो पद में (जठर के वामभाग में) मित्र देवता का आवाहन करें –
'ॐ मित्रो नऽएहि सुमित्र धऽइन्द्रस्योरुमाविश दक्षिण-मुशन्नुशन्तश्रस्योनः स्योनम्। स्वानभ्राजांघारे बंभारे हस्तसुहस्तकृशानवे ते वः सोम क्रयणास्तान्रक्षध्वम्मा-वोदभन् ।1। मित्रस्य चर्षणीधृतो वो देवस्य सानसि। द्युम्नश्चित्रश्रवस्तमम् ।2। हलाब्जध्वज वज्राख्यहस्तो मित्रो हरिप्रियः। ऊर्ध्वाधः श्यामलो गौरो वास्तोर्जठरसंस्थितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः मित्राय नमः मित्रमावाहयामि। भो मित्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

42. उसके उत्तर में स्थित वायव्य पद के आधे पद में (वाम हस्त) राजयक्ष्मा देवता का आवाहन करें –
'ॐ नाशयित्री बलासस्याशसऽउपचितामसि। अथो शतस्य यक्ष्मा णाम्पाकारोरसिनाशनी ।1। वरशक्तिधरो ब्रह्मन्वीर्य वान्बर्हिवाहनः। घण्टाकुक्कुटवान्वास्तोवृषणांशे समाश्रितः ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः राजयक्ष्मणे नमः राजयक्ष्माणमावाहयामि। भो राजयक्ष्मन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'

43. उसके पूर्व में स्थित आधे पद में (वाम हस्त) रुद्र देवता का आवाहन करें – 'ॐ अवरुद्रमदीमह्यवदेवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः। श्रेयसस्कारद्यथा नो व्यव साययात् ।1। या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वाशन्तमया गिरीशन्ताभिचाकशीहि ।2। रुद्रो गोस्थो

जटी त्र्यक्षो मृगाभयहस्तधृक्। शुभकृदम्बरावासो वास्तु देहसमाश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः रुद्राय नमः रुद्रमावा हयामि। भो रुद्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

44. उसके पूर्व में स्थित दो पद में (वाम हस्त तल) पृथ्वी धर देवता का आवाहन करें –

'ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथा ।1। यद्ग्रामे यदरण्ये यम्सभायां यदिन्द्रिये। यदेनश्च–कृमा वयमिदन्तद वयजामहे स्वाहा ।2। सहस्रवदनः श्रीमान् शंखचक्राख्य कुम्भकृत्। नीलः पृथ्वीधरो वास्तोजठरांशे समाश्रितः ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः पृथ्वीधराय नमः पृथ्वीधरमा–वाहयामि। भो पृथ्वीधर इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

45. मध्य में स्थित चार पद में (हृदय) ब्रह्मा देवता का आवाहन करें –**'ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनि–मसतश्चविवः ।1। अक्षमालां स्रुवं दक्षे वामे दण्ड कमण्डलू। दधानमष्टनयनं यजेन्मध्येऽम्बुजासनम् ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि। भो ब्रह्मन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

46. मण्डल के बाहर प्रथम श्वेत/सत्त्व परिधि में ईशानादि क्रम से चरक्यादि देवताओं का आवाहन करें। ईशान में चरकी का आवाहन करें–

'ॐ यन्ते देवी निर्ऋतिराबबंध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम्।। तन्ते विप्याम्यायुषा नेमध्यादथैतम्पितुमद्धि प्रसूतः। नमो भूत्यै येदं चकार ।1। इन्धनास्त्वा शतꣳहिमा द्युमन्तꣳ समिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृतꣳसहस्वन्तः सहस्रकृतम् ।2। कामरूपा विरूपाक्षी कराला चान्त्रभूषणा। कृपाणपात्रं बिभ्राणा मांसरक्तरवप्रिया ।3। ॐ भूर्भुवःस्वः चरक्यै नमः

चरकीमावाहयामि। भो चरकि इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

47. आग्नेय में विदारी का आवाहन करें – '**ॐ अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधि कल्पिन-मास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवेगोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे योगां विकृतं तं भिक्षमाणऽउपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम् ।1। असुन्न्वतमयजमानमिच्छस्तेन स्यात्त्यामन्विहि तस्करस्य। अन्न्यमस्मदिच्छ सा तऽइत्त्या नमो देवि निर्ऋते तुभमस्तु ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः विदार्यै नमः विदारीमावाहयामि। भो विदारि इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

48. नैर्ऋत्य में पूतना का आवाहन करें – '**ॐ इन्द्रस्य क्रोडो दित्यै पाजस्यन्दिशां जत्रवो दित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशोना-न्तरिक्षम्पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृकाभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्ना वल्मीकान्क्लोमभि-र्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्तौ ह्रदान्कुक्षिभ्याꣳसमुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ।1। कया नश्चित्रऽआभुवदूति सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः पूतनायै नमः पूतनामावाहयामि। भो पूतने इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

49. वायव्य में पापराक्षसी का आवाहन करें –
'**ॐ यस्यास्ते घोरऽआसंजुहोम्येषाम्बन्धानामवसर्जनाय। यां त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिं त्वां ह परिवेद विश्वतः ।1। इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनाम्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ।2। ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षस्यै नमः पापराक्षसीमावाहयामि। भो पापराक्षसि इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

50. दूसरी लाल/रज परिधि में पूर्वादि क्रम से स्कन्दादि देवता का आवाहन करें। पूर्व में स्कन्द का आवाहन करें –'**ॐ यत्र**

बाणाः संपतन्ति कुमारा विशिखाऽइव। तन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु।1। त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमःशोशचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।2। ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

51. दक्षिण में अर्यमा का आवाहन करें –
'ॐ यदद्य सरऽउदितेनागामित्रोऽर्यमा। सुवाति सविता भगः।। ॐ भूर्भुवःस्वः अर्यम्णे नमः अर्यमणमावाहयामि। भो अर्यमन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'

52. पश्चिम में जृम्भक का आवाहन करें – 'ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा अवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयनाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्राणाय स्वाहा।1। सरोभ्यो धैवरमुपस्थवराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो बैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलम्पाराय मार्गार-मवाराय कैवर्तन्तीर्थेभ्यऽआन्दं विषमेभ्यो मैनालꣳ स्वनभ्यः पर्णकंगुहाभ्यः किरातꣳसानुभ्यो जृम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्।2। ॐ भूर्भुवःस्वः जृम्भकाय नमः जृम्भ-कमावाहयामि। भो जृम्भक इह आगच्छ इह तिष्ठ।

53. उत्तर में पिलिपिच्छ का आवाहन करें –
'ॐ कास्विदा सीत्पूर्वचितिः किꣳस्विदासीद् बृहद्वयः। कास्विदासी त्पिलिपिला कास्विदासीत्पिशंगिला।1।

रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तंवलगमुत्किरामि यम्मे निष्ठ्यो यममात्यो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यांकिरामि ।2। ॐ भूर्भुवःस्वः पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छमावाहयामि। भो पिलिपिच्छ इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

54. तीसरी काला/तम परिधि में पुनः पूर्वादि क्रम से दशदिग्पालों का आवाहन करें। पूर्व में – 'ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ भूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमा वा हयामि। भो इन्द्र इन्द्र इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

55. आग्नेय में – 'ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽ-अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।1। त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभि-र्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳरक्षमाणस्तव व्रते।2। ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। भो अग्न इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

56. दक्षिण में – 'ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳस्पृश स्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽअसि।1। यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।2। ॐ भूर्भुवःस्वः यमाय नमः यममावाहयामि। भो यम इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

57. नैर्ऋत्य में – 'ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्ते नस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते

**तुभ्यमस्तु।। ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमा-
वाहयामि। भो निर्ऋते इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

58. पश्चिम में – **'ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ-
सर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमसि
वरुणस्यऽऋतसदनमासीद।1। तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान-
स्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेड मानो वरुणेह
बोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्रमोषीः।2। ॐ भूर्भुवःस्वः
वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि। भो वरुण इह आगच्छ
इह तिष्ठ।'**

59. वायव्य में –

**'ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ꣳसहस्रिणीभिरुपयाहि
यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्सवेन मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः
सदा नः।। ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि।
भो वायो इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

60. उत्तर में –

**'ॐ वयꣳसोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः
सचेमहि।। ॐ भूर्भुवःस्वः सोमाय नमः सोममवाहयामि।
भो सोम** (कुबेराय नमः कुबेरमावाहयामि। भो कुबेर) **इह
आगच्छ इह तिष्ठ।'**

61. ईशान्य में –

**'ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे
वयम्। पूषानो यथा वेद सामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः
स्वस्तये।। ॐ भूर्भुवःस्वः ईशानाय नमः ईशानमावाह-
यामि। भो ईशान इह आगच्छ इह तिष्ठ।'**

62. ईशान और पूर्व के बीच में –

'ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्येभरहूतौ सजोषाः। यः शꣳसते स्तुवते धायिपज्रऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्माँ2ऽअवन्तु देवाः।1। ॐ भूर्भवःस्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमवाहयामि। भो ब्रह्मन्निह आगच्छ इह तिष्ठ।'

63. निर्ऋति और पश्चिम के बीच में –

'ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छनः शर्म सप्रथाः।। ॐ भूर्भुवःस्वः अनन्ताय नमः अनन्तमावाह-यामि। भो अनन्त इह आगच्छ इह तिष्ठ।'

तत्पश्चात् वास्तु पीठ में आवाहित समस्त देवताओं को नमस्कार कर प्राणप्रतिष्ठा आदि शेष कर्म पूर्ववत् करें।

6. प्रकारान्तर 81 पद गृहवास्तु

ऊपरी उक्त क्रम से ही 81 पद के गृहवास्तु में भी उक्त देवताओं का आवाहन करके उनकी पूजा की जाती है। जिसमें कुछ पद खाली होते हैं जिन्हें चित्र संख्या 8, पृष्ठ संख्या 140 में दर्शाया गया है।

।। हरिः ॐ तत्सत्।।

पूर्व

उत्तर

लाल	पीला	सफेद	पीला	लाल	सफेद	काला		लाल
पीला	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	
	सफेद	सफेद	काला		लाल		सफेद	सफेद
काला	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	पीला
सफेद	सफेद	लाल	सफेद	सफेद	सफेद		सफेद	काला
काला	सफेद		सफेद	सफेद	सफेद	लाल	सफेद	लाल
लाल	सफेद			सफेद		सफेद	सफेद	काला
	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	सफेद	पीला
	पीला	काला	पीला	सफेद	लाल	सफेद	लाल	

दक्षिण

पश्चिम

(चित्र संख्या 1)

यजुर्वेदीय वास्तुमण्डल 81 पद 77 देवता

पूर्व

75 76 68 69

61 62 54 64 55

50 46 51

1	2	3	4	5	6	7	8	9
32								10
31		34	35		36	37		11
30		33				38		12
29		44		45				13
28						39		14
27		43	42	41		40		15
26								16
25	24	23	22	21	20	19	18	17

उत्तर 67 74 60 49 — 47 56 70 65 दक्षिण

53 48 52

59 66 58 63 57

73 72 77 71

पश्चिम

(चित्र संख्या 2)

यजुर्वेदीय गृहवास्तुमण्डल 81 पद 77 देवता

75 76 68 69

62 64

61 54 55

67 74 60 56 70 65

22	23	24	25	26	27	28	29	30
53	13	21				14	7	31
52	20	12		2		6	15	32
51								33
50	5			1		3		34
49								35
48	19	10				8	16	36
47	11	18		4		17	9	37
46	45	44	43	42	41	40	39	38

59 58 57

66 63

73 72 77 71
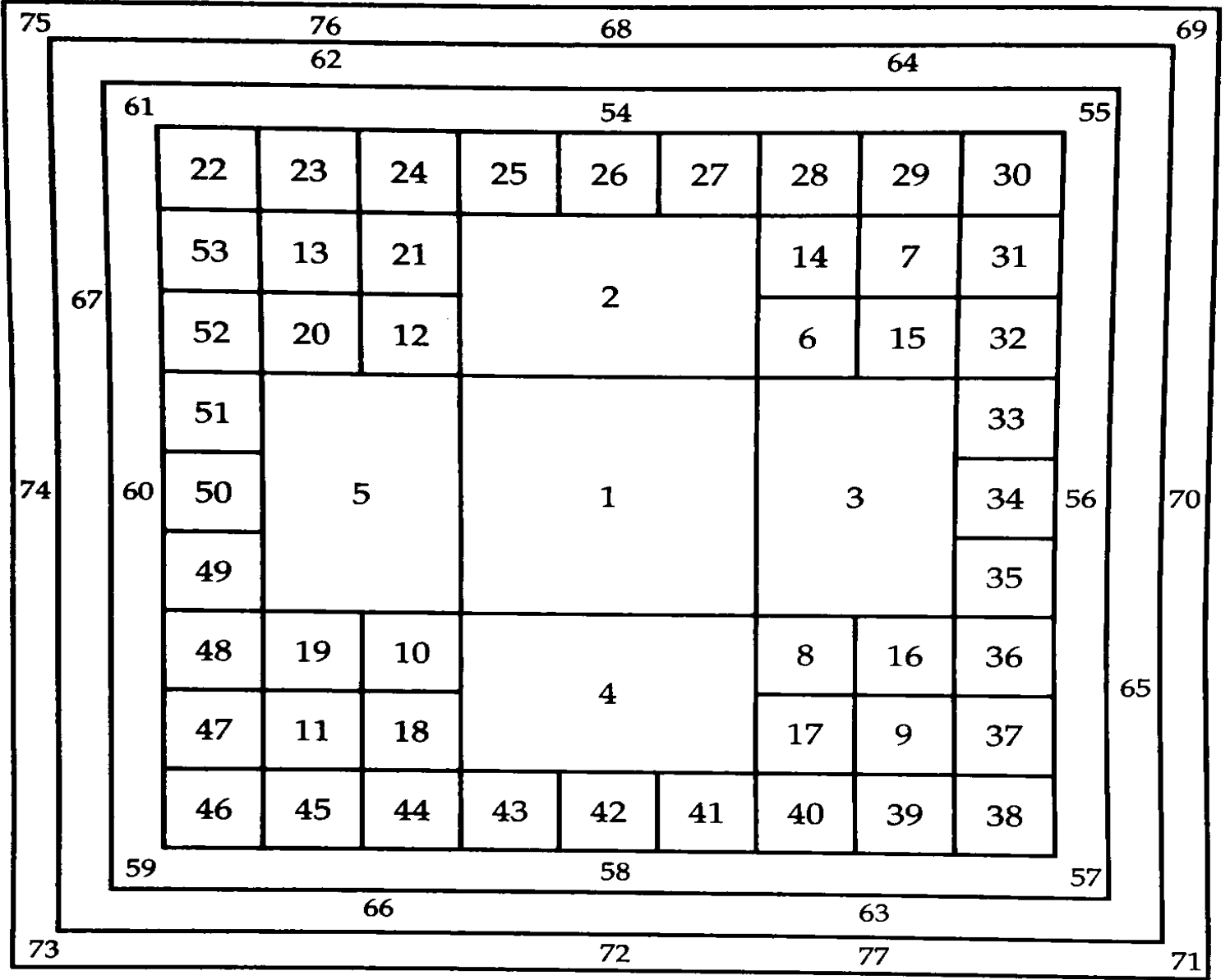
(चित्र संख्या 3)

यजुर्वेदीय गृहवास्तुमण्डल 81 पद 77 देवता
(प्रकारान्तर)
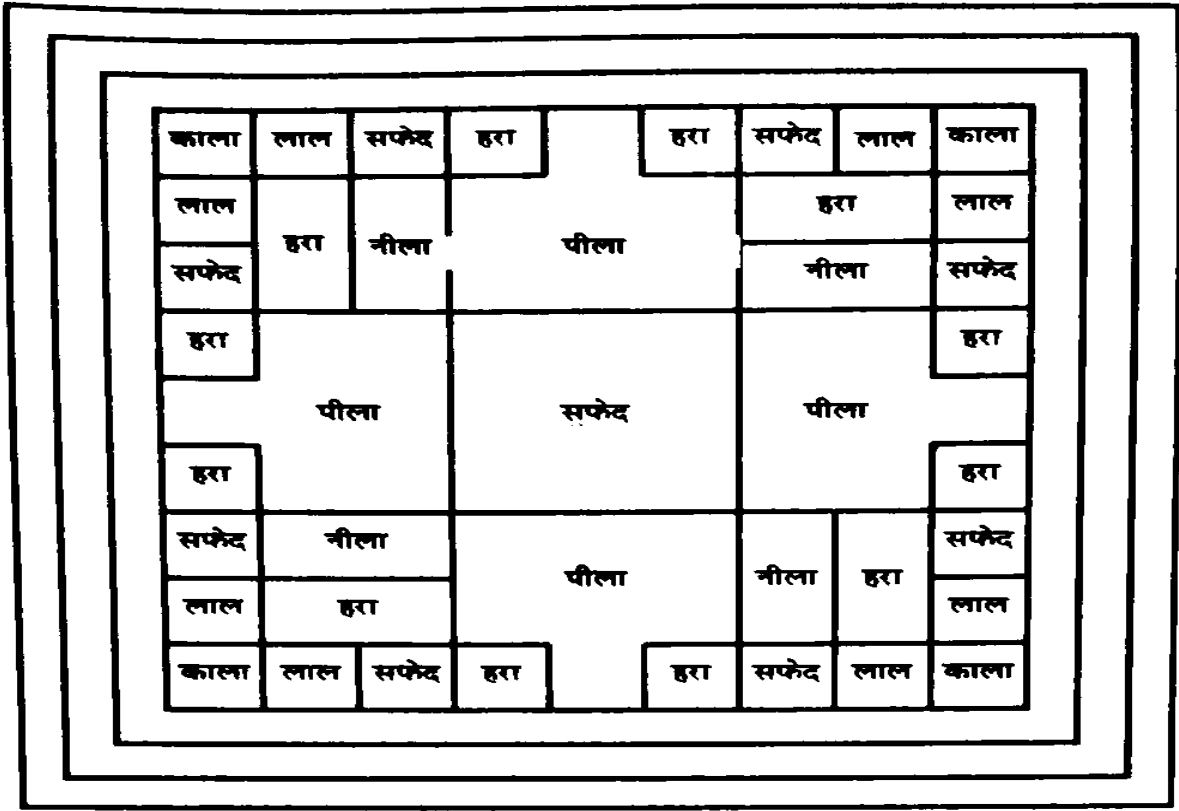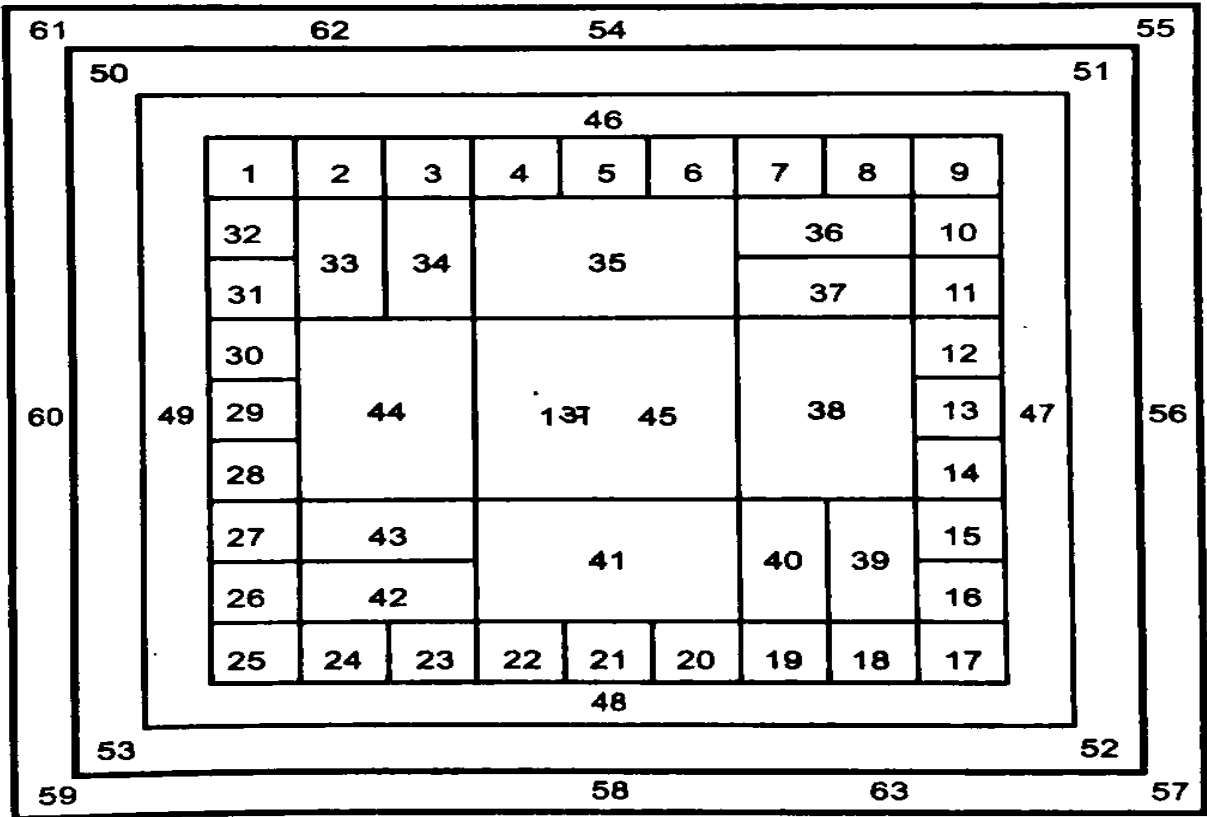
(चित्र संख्या 4)

(चित्र संख्या 5)

आगमोक्त वास्तुमण्डल 81 पद
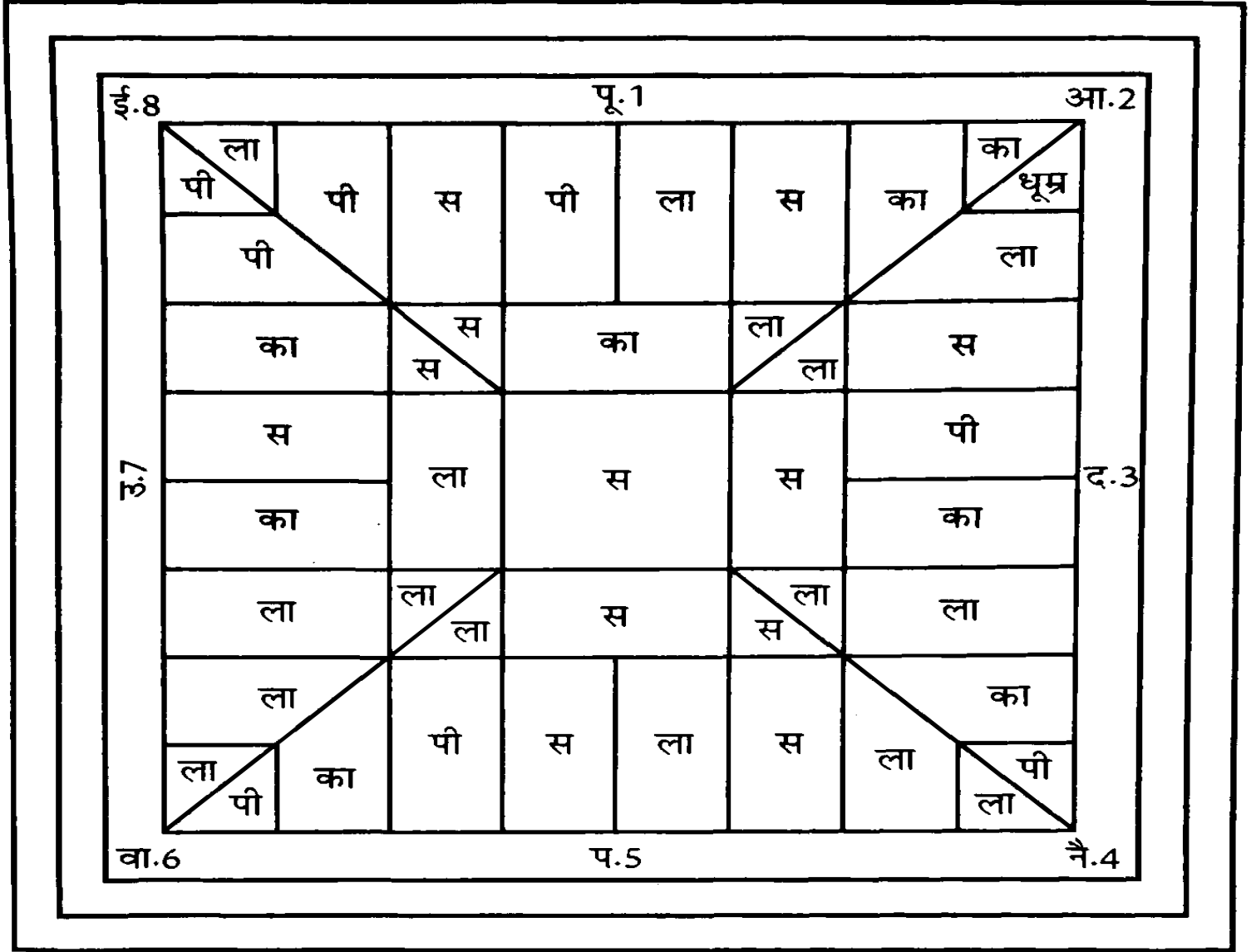
(चित्र संख्या 6)

विश्वकर्मप्रकाशोक्तसरजस्कं वास्तुमण्डलम् 64 पद

पूर्व
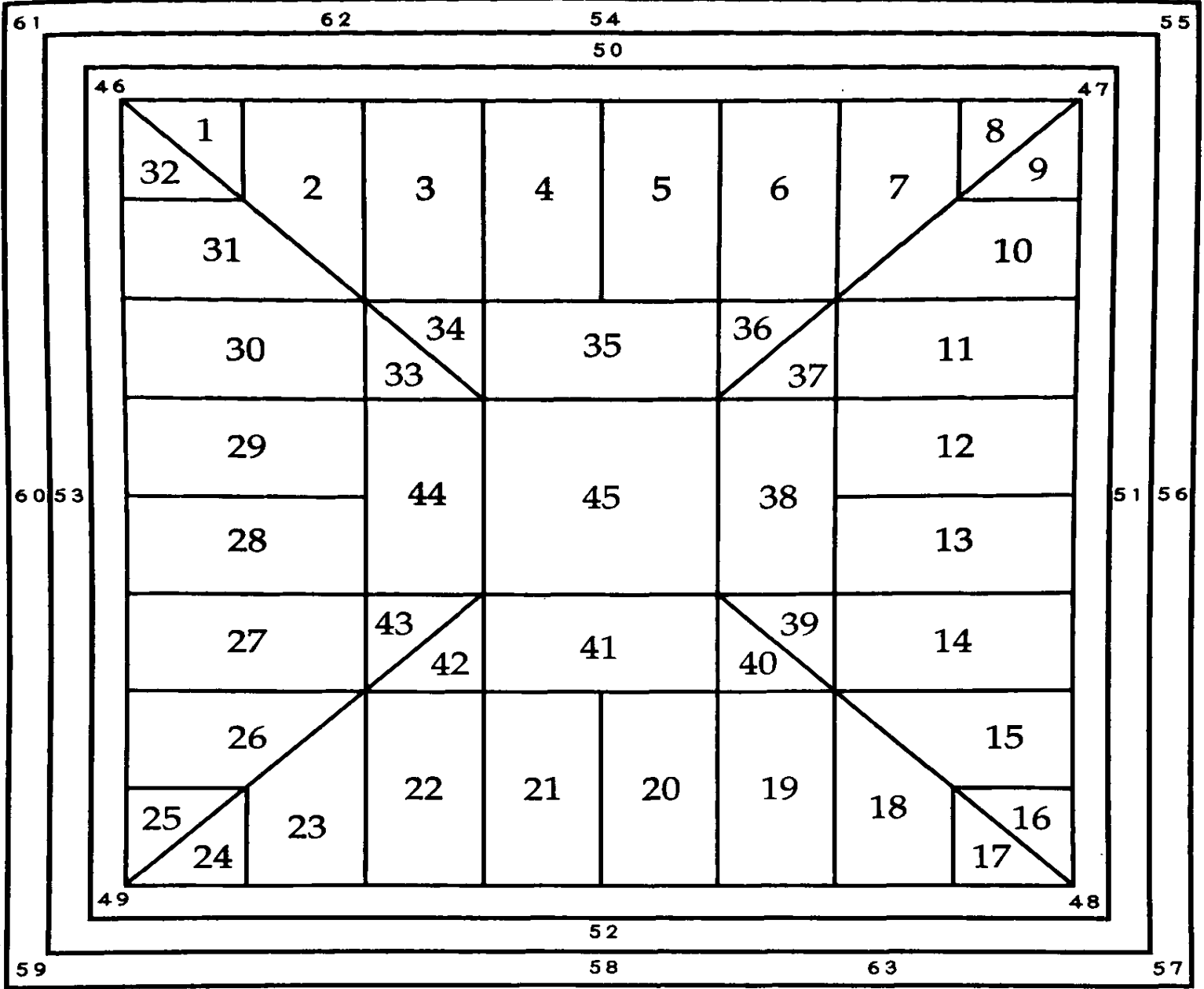
(चित्र संख्या 7)

यजुर्वेदीय प्रासाद वास्तुमण्डलम् 64 पद
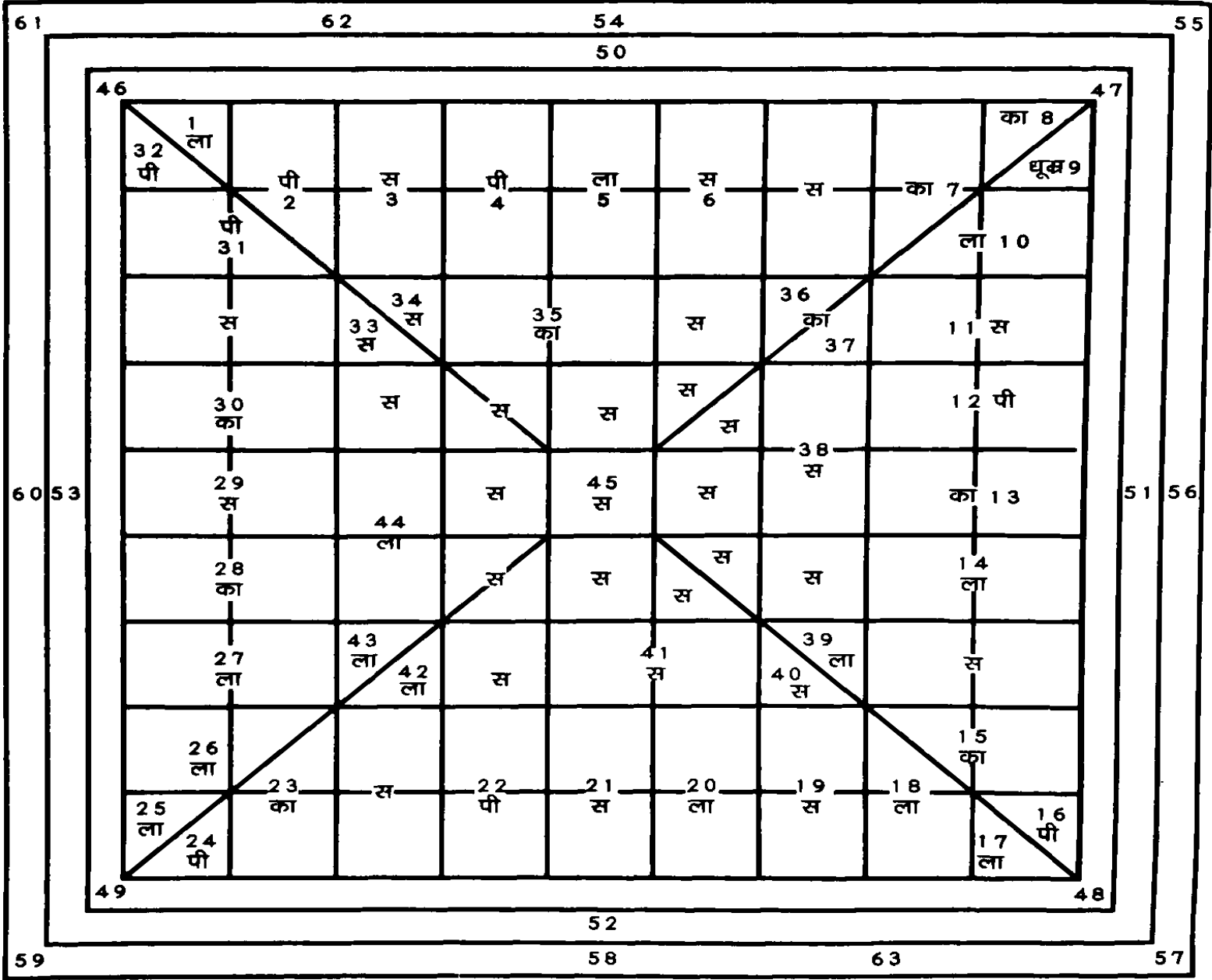
(चित्र संख्या 8)

गृहवास्तु 81 रेखात्मक सरजस्क
(प्रकारान्तर)

प्रासाद वास्तु मण्डत्नम्

गृहवास्तु 81 रेखात्मक सरजस्क